एडवांस कोर्स

त्रिमूर्ति एडवांस

(बाबा का कोर्स – 1 घंटा)

बाबा ने संदेशियों के साक्षात्कार के आधार पर जो चित्र बनाये थे, उसको ब्रह्मा बाबा के द्वारा शिवबाबा ने करैक्ट करवाया। वो चार चित्र मुख्य हैं– **त्रिमूर्ति, गोला, झाड़ और लक्ष्मी–नारायण**। इन चार चित्रों में से पहला मुख्य चित्र है त्रिमूर्ति का, जो पहले2 तैयार हुआ। त्रिमूर्ति के चित्र में एडवांस नालेज के बतौर जो मुख्य बात पहले उठानी है वो है '**श्रीमत**'। श्रीमत क्या है और श्रीमत किसकी है? जैसा शब्द है 'श्री' अर्थात् श्रेष्ठ और 'मत' अर्थात् बुद्धि। तो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बुद्धि (मत, अक्ल) किसकी होगी? यही कहेंगे परमात्मा से श्रेष्ठ बुद्धि और किसी की हो नहीं सकती। वो ही बुद्धिमानों की बुद्धि है; लेकिन जब बात आती है कि परमात्मा कौन?

तो त्रिमूर्ति के चित्र में परमात्मा का जो रूप दिखाया गया वो अरूप है; क्योंकि तीन मूर्तियों से ऊपर जिस ज्योतिबिन्दु की तरफ उन तीन मूर्तियों की स्मृति रूपी लकीर दिखायी गई है वो निराकार ज्योतिबिन्दु विचित्र है। उसका कोई चित्र नहीं खींचा जा सकता। जिसका कोई चित्र नहीं खींचा जा सकता वो फिर मत कैसे देगा? बाबा तो मुरलियों में कहते हैं ''**मैं कोई प्रेरणा से नहीं पढ़ाता हूँ, मैं तो सन्मुख आकर पढ़ाई पढ़ाता हूँ**।'' (मु० 6.9.96 पृ०3)। यह इसलिए मुरली में बताया हुआ है कि ''**त्रिमूर्ति शिवजयन्ती गायी हुई है। तुम बच्चों को सिर्फ शिवजयन्ती नहीं कहना चाहिए, ये रांग हो जाता है**।''(मु० 15.10.95 पृ०3)। ये रांग इसलिए है; क्योंकि जयन्ति होती है साकार की। जिसका कोई आकार नहीं, जिसका कोई रूप नहीं उसकी जयन्ती नहीं हो सकती। मेरी जयन्ती के साथ तीन मूर्तियाँ जुड़ी हुई हैं अर्थात् जब मेरी प्रत्यक्षता रूपी जयन्ती होती है तो मैं अकेला नहीं आता हूँ; बल्कि उस समय तीन मूर्तियाँ साथ में होती हैं। तो वो तीन मूर्तियाँ यहाँ दिखायी गई हैं– **ब्रह्मा, विष्णु और शंकर**। इन तीन मूर्तियों को सूक्ष्मवतन के तीन तबक्कों में भी दिखाया गया है। **ब्रह्मापुरी**, उससे ऊपर **विष्णुपुरी** और उससे ऊपर **शंकरपुरी**। वो तबक्के ऊपर–नीचे क्यों दिखाये गए? जरूर ये बुद्धि की स्टेज दिखायी गयी है। ब्रह्मा से भी ज्यादा ऊँची स्टेज विष्णु की और विष्णु से भी ज्यादा बुद्धि की ऊँची स्टेज शंकर की दिखायी गयी है। नहीं तो चित्रों में उस बुद्धि की स्टेज को कैसे दिखाया जाए? इसलिए तीन पुरियों के रूप में दिखा दिया गया। वरना तो मुरलियों में सूक्ष्मवतन को कट कर दिया है। ''**सूक्ष्मवतन कुछ होता नहीं। इसको तो परमात्मा शिव संगमयुग में साक्षात्कार के लिए सिर्फ थोड़े समय के लिए रचते हैं**।'' (मु० 19.9.89 पृ०3)। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर– ये तीनों उत्तरोत्तर एक से ऊँचे एक देवता माने गए हैं।

भक्तिमार्ग में भी कहा जाता है– ''**देव–देव फिर महादेव। ब्रह्मा देवताय नमः विष्णु देवताय नमः, फिर कहते हैं– शिव परमात्माय नमः।**'' तो इससे ही साबित हो जाता है कि परमात्मा का जो असली रूप है वो इन तीन मूर्तियों में ब्रह्मा के द्वारा भी संसार में प्रत्यक्ष नहीं होता है। अगर ब्रह्मा के द्वारा वो परमात्मा का रूप संसार में प्रत्यक्ष हुआ होता और सारी दुनियाँ उसके सामने झुकी होती तो उसके भी मंदिर होते, उसकी भी मंदिरों में पूजा हुई होती और उसकी भी मूर्तियाँ होनी चाहिए; लेकिन न मंदिर मिलते हैं, न मूर्तियाँ हैं और न कहीं शास्त्रों में पूजा दिखायी गयी है। रही विष्णु की बात, वो तो हमें बताया गया है विष्णु कोई अलग से चार भुजाओं का व्यक्तित्व नहीं होता। ये तो चार आत्माओं के भाव–स्वभाव–संस्कार का कम्बीनेशन है। कौन2 सी चार आत्माएं? ब्रह्मा के साथ सरस्वती और शंकर के साथ पार्वती। ये चार आत्माओं का जो कम्बीनेशन है वही विष्णु के 4 भुजाओं के रूप में दिखा दिया है। इसका विस्तार में परिचय तो अभी देंगे। ये विष्णु भी सतयुग का देवता है। ये कोई संगमयुग में भगवान के रूप में प्रत्यक्ष होने वाला व्यक्तित्व नहीं है; क्योंकि जब एक सेकेन्ड में 'ब्रह्मा सो विष्णु' बनेगा उस समय वो देवता का रूप होगा। देवताएं सतयुग में होते हैं और मनुष्य संगम में होते

हैं; लेकिन परमात्मा का रूप फिर क्या है? परमात्मा है गुप्त। ये तीन मूर्तियों में जो महादेव की मूर्ति है वो ही परमपिता शिव का बड़ा बच्चा है और हमारी भारतीय परम्परा में हमेशा जितने भी राजायें हुए हैं उनमें ये परम्परा रही है कि बड़े बच्चे को ही हमेशा राजाई दी जाती रही। क्यों? क्योंकि जो बड़ा बच्चा होता है वो और बच्चों के मुकाबले ज्यादा प्यूरिटी की पावर से जन्म लेता है। लम्बे समय की ब्रह्मचर्य की पावर से पहले बच्चे का जन्म होता है तो उसमें शक्ति ज्यादा होती है, प्यूरिटी की पावर ज्यादा होती है इसलिए उस बड़े बच्चे को ही राजाई देने का विधान आरम्भ से ही चला आया है। इसका भी फाउंडेशन कहाँ से पड़ता है? इसका भी फाउंडेशन शिवबाबा संगमयुग में आकर डालते हैं। इसलिए मुरली में बोला है "**गॉड इज वन तो गॉड का बच्चा भी वन कहा जाता है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा देवताओं में बड़ा शंकर।**"(मु० 10.2.72 पृ०4 म०)। ये मुरली का महावाक्य है। तो बड़ा बच्चा कौन हुआ? शंकर हुआ तीन देवताओं में बड़ा देव महादेव और वही देवता संगमयुग में, संगमयुगी ब्राह्मणों की दुनियाँ के बीच में, संसार में विश्व का पिता कहो, विश्वपति कहो या विश्वनाथ कहो, इस रूप में प्रत्यक्ष होता है। जैसे गायन है– "**हर–2 महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गंगे।**"

तो परमात्मा ज्योति बिन्दु हम बच्चों के सामने दो रूपों में प्रत्यक्ष होते हैं। जैसे दुनियाँ में बाप पहले बच्चों के सामने गुप्त होता है। बच्चों को पता नहीं है कि बाप ने बीजारोपण करते समय पैदाइष में पहले हिस्सा लिया। बच्चों को पहले किसका परिचय होता है? माँ का। ब्राह्मण बच्चों को भी पहले किसका परिचय हुआ? ब्रह्मा (माँ) का परिचय हुआ। जब तक बच्चे अबोध होते हैं वो माँ को ही माई–बाप समझते हैं। जब वही बच्चे बड़े होते हैं तो माँ ही उन बच्चों को इषारा देती है ये तुम्हारा बाप है, पापा है। तब बाद में बाप प्रत्यक्ष होता है। तो ऐसे ही हमारे यज्ञ में भी हुआ कि 18 वर्ष (सन् 51 से लेकर 68 तक) की 18 अध्यायी गीता, गीता माता सम्पन्न रूप में हम बच्चों के सामने आ गयी। 18 वर्ष की पूरी ही 18 अध्यायी गीता ब्रह्मा के मुख से हमारे सामने आ गयी अर्थात् चैतन्य गीता माता हमारे सन्मुख आ गयी। तो उसी समय लास्ट में षिव बाप ने ये रहस्य उद्घोषित किया कि **"बच्चे, 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय'– ये शब्द रांग है। इसमें 'प्रजापिता' शब्द जरूर एड करना है।**"(मु० 4.9.85 पृ०1)। "**तुम अपने को ब्रह्माकुमार–कुमारी कहते हो इसलिए लोग मूँझ जाते हैं। तुम अपने को लिखो प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारी।**"(मु० 10.6.87 पृ०1)। इससे बात साफ हो गयी कि यज्ञ के आदि में बाप के रूप में कोई थे जो ब्रह्मा के भी सरपरस्त थे। उनको भी कंट्रोल करने वाले थे। उनके भी रचयिता थे। इसलिए मुरली में पूछा "**ब्रह्मा का बाप कौन?**"(मु० 4.11.73/रि० मु० 2.10.98 पृ०2) तो जरूर कोई होगा तब तो पूछा– "**ब्रह्मा को भी जन्म देने वाला रचयिता कौन?**" तो जैसा शब्द है ब्रह्मा माना 'बड़ी माँ' तो उसको रचने वाला बाप भी जरूर कोई है। वो व्यक्तित्व जो आदि में था, बीच में गुप्त हो गया और अंत में वही बीजारोपण करने वाला, ज्ञान का बीज बोने वाला, जिसने ब्रह्मा के बुद्धि रूपी पेट में बीज बोया वही बाप अंत में बच्चों को वर्सा देने के लिए फिर प्रत्यक्ष हो जाता है। तो जो प्रत्यक्ष रूप होता है उसी को दुनियाँ वालों ने **शिव–शंकर** के रूप में नामांकित कर दिया। दुनियाँ वाले ये नहीं जानते हैं कि शिव और शंकर ये दो अलग आत्माएं हैं; लेकिन हम ब्राह्मण बच्चे इस रहस्य को जानते हैं कि "**शिव है निराकार ज्योतिबिन्दु बाप का नाम। उसका एक ही नाम है जो कभी बदलता नहीं। जब रूप बदलते हैं तो उनके नाम भी बदल जाते हैं**"(मु० 24.1.75)। जैसे दादा लेखराज के तन में प्रवेश किया तो नाम पड़ा **ब्रह्मा** और जब वही सुप्रिम सोल किसी दूसरे ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करता है जिसे बाप का मुकर्रर रथ कहा जाता है तो नाम पड़ा **शंकर**।

इस प्रकार शिव बाप के दो रथ हुए। एक टेम्पररी रथ, जो मध्य में था परन्तु आदि में भी नहीं था और अंत में भी नहीं रहा और एक मुकर्रर रथ, जो आदि में भी था तो अंत में भी रहेगा। तो वो मुकर्रर रथ के द्वारा बाप अंत में प्रत्यक्ष हो जाता है। तो उस स्वरूप के द्वारा हम बच्चों को सम्मुख आकर बाप जो डाइरैक्शन देते हैं या जो बातचीत करते हैं वह भी मुरली है, वही डाइरैक्शन है और वही श्रीमत है। तीन मूर्तियाँ हैं तो तीनों एक–दूसरे से श्रेष्ठ नहीं हो सकतीं। उनमें भी श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ एक ही

मूर्ति होगी। वो ही संसार में निरन्तर गायन और पूजन योग्य मानी जाती रही। प्रमाण के लिए दुनियाँ में जितनी भी जमीन की खुदाइयाँ हुईं उनमें सबसे जास्ती शंकर या तीर्थंकर की नग्न मूर्तियाँ निकलीं, जिनको जैनियों में तीर्थंकर और हिंदुओं में उनको शंकर कहा जाता है। लिंगाकार शिवलिंग भी निकले हैं। जहाँ2 वो नग्न मूर्तियाँ निकली हैं वहाँ लिंग भी निकले हैं; लेकिन लिंग भी वास्तव में उस साकार चोले की यादगार है; क्योंकि बाबा ने मुरली में बोला है कि **"मंदिरों में जो शिवलिंग बनाते हैं उसमें बीच में एक बिंदु भी रखते हैं"।** बिंदु किसकी यादगार और वो लिंग जो प्रकाश से भरा–पूरा दिखाया जाता है वो किसकी यादगार? सोमनाथ मंदिर में लाल पत्थर था और बीच में सफेद हीरा जड़ा हुआ था। तो लाइट का जो बड़ा आकार 'लिंग' रूप में दिखाया गया वो किसकी यादगार हुई? साकार स्वरूप की यादगार और उसमें 'बिंदु' सुप्रिम सोल की यादगार। तो ये निराकार और साकार दोनों का जो मेल है वो शिवबाबा कहा जाता है। जगन्नाथ के मंदिर में या श्रीनाथ के मंदिरों में भी जो काली2 लिंगाकार लकड़ी रखी हुई है उसी में आँखें, नाक, मुँह वगैरह बना दिया और झँगोला पहना दिया गया। उसी को जगन्नाथ और श्रीनाथ नाम दे दिया गया। वास्तव में वो यादगार किसकी है? वो वही एक रूप की यादगार है जिसको शास्त्रों में कह दिया है '**अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम्**।' एक के ही अनेक नाम दे दिये। भक्तिमार्ग में तो कहते हैं– '**तू ही राम है, तू ही कृष्ण है, तू ही ये है, तू ही वो है**।' तब तो नहीं समझ में आता था; लेकिन अब समझ में आता है कि वही ब्रह्मा की सोल जिसने शीतल पार्ट बजाया, शीतल ज्ञान का प्रकाश हम ब्राह्मण बच्चों को दिया, वही ब्रह्मा की सोल अपना शरीर छोड़ने के बाद किसी ब्राह्मण बच्चे में अर्धचन्द्र स्वरूप से प्रवेश करके कम्बाइन्ड पार्ट बजाती है। जिस पार्ट की यादगार ये अर्धनारीश्वर का स्वरूप दिखाया जाता है (आधा स्त्री और आधा पुरुष)। ये अर्धचन्द्र ब्रह्मा और शंकर के संस्कारों के मेल की निशानी है, लव और लॉफुल की निशानी है। लवफुल पार्ट भी है और जो दुष्टता से भरे–पूरे बच्चे हैं, जो लवफुल पार्ट से नहीं सुधरते तो उनके लिए फिर लॉफुल पार्ट भी है। दोनों का कम्बीनेशन है।

माता होती है मृदुल और बाप होता है कठोर। इसलिए यहाँ त्रिमूर्ति के चित्र में भी ब्रह्मा को बड़ी लिनेन्सी में, सहज बैठक में बैठा हुआ दिखाया गया और शंकर को स्ट्रिक्ट अकड़े हुए बैठा दिखाया गया; क्योंकि बाप रचयिता है, रचयिता कभी रचना के कंट्रोल में नहीं हो सकता। तो श्रीमत की ये बात हुई कि श्रेष्ठ मत जो है वो है ही परमपिता परमात्मा सुप्रिम सोल गॉड फादर की; लेकिन वो है निराकार। वो मत किसके तन द्वारा मिलती है? ब्रह्मा के तन के द्वारा नहीं मिलती है, ऐसे भी नहीं कह सकते। ब्रह्मा के तन के द्वारा मत मिलती है; लेकिन वो मत मिलना, न मिलना एक बात हो जाती है। क्यों? क्योंकि जो मत मिली उस मत को गहराई से समझा नहीं गया। एक होता है कानों से 'सुनना' और दूसरा होता है 'समझना।' पक्की बात कब होती है? जब समझ में आ जाये। तो जो कुछ गीता ज्ञान परमात्मा शिव ने गीता माता ब्रह्मा के द्वारा हमारे सामने रखा वो गीता ज्ञान क्लीयर नहीं हुआ और जब तक क्लीयर नहीं होता तब तक वो जीवन में पूरी रीति अमल में नहीं लाया जा सकता। तो परमात्मा शिव तीन रूपों में हम बच्चों के सामने मुख्य रूप से प्रत्यक्ष होते हैं– बाप, टीचर और सद्गुरु। वो तीनों रूपों का पार्ट एक ही मूर्ति के द्वारा चलता है। कोई कहे ब्रह्मा के द्वारा ये तीनों पार्ट चले, तो ये बिल्कुल रांग है। ब्रह्मा के द्वारा सिर्फ माँ का जन्मदात्री का पार्ट चलता है, प्यार देने का पार्ट चलता है। बीजारोपण करने वाले या मुक्ति–जीवनमुक्ति का वर्सा देने वाले बाप का पार्ट नहीं चलता है। दुनियाँ के दुःख–दर्दों से बुद्धि मुक्त हो जाए, ऐसी अनुभूति अपने जीवन में होने लगे, ये वर्सा ब्रह्मा के द्वारा नहीं मिलता। कोई अगर कहते भी हैं– हमें तो वर्सा मिल गया तो अभी थोड़े समय में जब ताबड़तोड़ विनाश की विभीषिका जलेगी तब उनको पता लग जाएगा कि कैसे सुख–शान्ति रूपी स्वर्ग का वर्सा अभी मिल गया है या किनको मिलना है। ब्रह्मा द्वारा सिर्फ हम ब्राह्मण बच्चों को क्या मिलता है? प्यार मिलता है। बच्चों के रूप में जन्म मिलता है। बाकी बाप का रूप, टीचर के रूप में गद्य या पद्य (प्रोज या पोयट्री) दोनों का क्लैरीफिकेशन अभी मिलना है। हमारी पोयट्री है गीता माता। जो भगवान ने गीत गाया ब्रह्मा माता के मुख से वो ब्रह्मा माता हमारी चैतन्य माता तो हुई और उससे जो

गीत आया उसका नाम **'गीता'** पड़ा। उस चैतन्य गीता माता के रोम2 को जानने वाला, उसके मुख से निकली हुई एक2 वाणी के रहस्य को समझने–समझाने वाला जो टीचर के रूप का पार्ट है वो कोई दूसरा है। ऐसे नहीं पत्नी भी वो ही और पति भी वो ही।

हम ब्राह्मण बच्चे हैं तो ब्राह्मण साकार में हैं या निराकार में? (किसी ने कहा– साकार में)। तो जब ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ साकार में हैं, भाई–बहन हैं तो उनके माँ–बाप भी कैसे होंगे? वो भी साकार में होने चाहिए। तो माता का रूप ब्रह्मा और पिता का रूप संसार के सामने लास्ट में प्रत्यक्ष हो जाता है। अभी गुप्त है, पहले2 गुप्त है लेकिन हम ब्राह्मण बच्चों के सामने अभी भी प्रत्यक्ष होना चाहिए। क्यों? क्योंकि संगमयुग है तो जरूर बाप भी होना चाहिए अगर ब्रह्मा बाप ही नहीं तो संगमयुग काहे का? इसलिए बाबा ने मुरली में प्रश्न किया **"उन झूठे ब्राह्मणों से पूछो– अगर तुम ब्राह्मण हो, अपने को मुखवंशावली ब्राह्मण कहते हो तो तुम्हारा ब्रह्मा बाप कौन?**"(मु० 8.12.84 पृ०1)। वास्तव में तुम मुखवंशावली नहीं, कुखवंशावली ब्राह्मण हो। क्यों? क्योंकि उन्होंने कोख अर्थात् गोद का प्यार लिया है। मुख से निकली हुई वाणी से आकर्षित होकर ज्ञान में नहीं चले; अगर मुख से निकली हुई वाणी से आकर्षित होकर ज्ञान में चले होते तो वो गोद अर्थात् शरीरधारी को याद नहीं करते। जबकि मुरलियों में बिल्कुल इन्कार किया है, ''**ब्रह्मा का चित्र रखने की कोई दरकार नहीं है**।'' (मु० 27.6.86 पृ०1)। ''**विनाशी चीज को याद नहीं किया जाता।** (मु० 28.3.76 पृ०2)। **''इस ब्रह्मा को अगर याद किया तो पतित हो जावेंगे**।''(मु० 8.2.89 पृ०3)। ऐसा भी मुरलियों में बोला हुआ है। ''**ब्रह्मा या क्राइस्ट की याद से मिलेगा कुछ भी नहीं**।''(मु० 2.11.01 पृ०3)। ये भी मुरलियों में बोला हुआ है। तो कहने का मतलब ये हुआ कि परमात्मा शिव बाप के रूप में, टीचर के रूप में, सद्गुरु के रूप में सिर्फ तीसरी मूर्ति शंकर के रूप में संसार में प्रत्यक्ष होते हैं जिसको नग्न रूप में दिखाया गया। नग्न रूप का मतलब ही है निराकारी स्टेज। ये बुद्धि की स्टेज दिखायी गयी है। जैसे इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट ये धर्मपितायें जब परमधाम से डाइरैक्ट नीचे उतरते हैं तो उनको भी निराकारी स्टेज में दिखाया जाता है। चित्रकारों के द्वारा उनके जो चेहरे चित्रित किए जाते हैं वो चेहरा देखने से ही पता चलता है कि वो आत्माएं इस दुनियाँ में होते हुए भी जैसे यहाँ नहीं है। उनकी बुद्धि जैसे परमात्मा बाप के पास लटकी हुई है। तो वो है निराकारी स्टेज। लेकिन वो तो धर्मपिताएं हैं; लेकिन धर्मपिताओं का भी जो पिता है, बापों का भी जो बाप है वो तो चित्रों में और ही ज्यादा निराकारी स्टेज में दिखाया जाता है और वो चित्र हमारे भारतवर्ष में ढेर के ढेर छपाये जाते हैं। वो हैं शंकर के चित्र। वो निराकारी स्टेज को कैसे क्लीयर किया जाए? तो यहाँ नंगा चित्र दे कर क्लीयर किया गया है। नंगा का मतलब ये है कि शरीर रूपी वस्त्र का उनको भान नहीं, जबकि ब्रह्मा को कपड़े दिखाये गए हैं। कपड़े दिखाने का मतलब क्या हुआ? कि वे अपने जीवन में जब तक रहे तब तक शरीर रूपी वस्त्र का भान नहीं त्याग पाए। इसलिए उनको वस्त्र दिखाए गए हैं। यही कारण है कि जो जैन परम्परा है उसमें दो प्रकार के मुनि दिखाए जाते हैं, दो प्रकार के जैनी दिखाए जाते हैं– एक श्वेताम्बर और एक दिगम्बर। जो श्वेताम्बर यादगार है वो ब्रह्मा के साकार स्वरूप को विशेष फॉलो करने वाली आत्माएं हैं। उनकी यादगार मंदिर भी नीचे है और जो दिगम्बर रूपधारी जैनी, जो नंगे फिरते हैं वो शंकर के उस नग्न रूप की यादगार है जो निराकारी ऊँची स्टेज में रहते हैं, जिनको देह रूपी वस्त्र का कोई भान नहीं है। उनके मंदिर भी ऊँचाई पर हैं।

तो बाप के रूप में भी, तो टीचर के रूप में भी और सद्गति देने वाले सद्गुरु के रूप में भी एक ही शंकर की नग्न मूर्ति है। सद्गति दो प्रकार से होती है। दुनियाँ का हर कार्य दो प्रकार से सम्पन्न होता है। पहले सूक्ष्म रूप में सम्पन्न होता है, फिर स्थूल रूप में। मकान बनेगा या कोई भी प्लान बनेगा, कोई भी बड़ा प्रोजैक्ट बनेगा तो पहले बुद्धि में खाका खींचा जाएगा। ये हुआ सूक्ष्म रूप। फिर जब कागज में खाका खींचा जाएगा, नक्शा बनाया जाएगा तो वो और स्थूल रूप हुआ; और फिर जब मकान प्रैक्टिकल में बनाया जाएगा तो वो बिल्कुल ही स्थूल रूप हुआ। ऐसे नहीं कि सीधा–साधा स्थूल रूप ले लेगा। सद्गति सीधी नहीं हो सकती कि एकदम शरीर की सद्गति हो जाए, शरीर निरोगी कंचन काया बन जाए। नहीं, पहले सद्गति किसकी होगी? मन–बुद्धि रूपी आत्मा की सद्गति

होनी चाहिए। तो वो सद्गति दाता बाप भी इस सृष्टि पर ब्रह्मा के रूप में आकर मन–बुद्धि रूपी आत्मा की सद्गति नहीं करता। मन–बुद्धि की सद्गति की पहचान क्या है? सद्गति की पहचान है कि बुद्धि इस विनाशी दुनियाँ के आडम्बरों में न रमे, देह और देह के सम्बन्धियों से बुद्धि उपराम होने लगे। कहाँ रमण करे? ज्ञान के मनन–चिंतन में रमण करने में आराम महसूस करे। उसको मनन–चिंतन–मंथन ही अच्छा लगे। ईश्वरीय सेवा की बातों में बुद्धि बिजी रहे, परमात्मा की याद में और नयी दुनियाँ की प्लानिंग करने में बुद्धि रमण करती रहे। तो ये हुई बुद्धि की सद्गति। अगर बुद्धि में दुनियाँवी संकल्प चल रहे हैं, देह और देह के सम्बन्धियों के संकल्प चल रहे हैं, जो पेट के दुनियाँवी धंधा–धोरी हैं उनके संकल्प चल रहे हैं तो ऐसी बुद्धि को सद्गति वाली मन–बुद्धि नहीं कहा जाएगा। वो आत्मा सद्गति की ओर नहीं है। हर एक ब्रह्माकुमार–कुमारी इस रूप में अपने को चैक करे कि हमारी मन–बुद्धि रूपी आत्मा इस समय कितने परसेंटेज में सद्गति की ओर है और कितने परसेंटेज में दुर्गति की ओर है। तो वो सद्गति मिलती ही है पहले एक को। अगर एक को ही न मिली तो दूसरों को कहाँ से मिल जाएगी? इसलिए भारतीय परम्परा में एक कहानी बना दी है कि 'भागीरथ ने गंगा लायी।' गंगा अवतरण की एक कथा है कि भागीरथ ने तपस्या की। तपस्या करके गंगा ऊपर से नीचे आयी माना ज्ञानगंगा ऊपर से नीचे तो आयी; लेकिन वो शंकर के मस्तिष्क में समा गयी। संसार का कल्याण फिर भी नहीं हुआ। मतलब क्या हुआ? कि जो भी ज्ञानगंगा आयी उससे दुनियाँ वालों को कोई उतना लाभ नहीं हुआ। बल्कि कोई एक सच्च यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण बच्चा है जिसने मनन–चिंतन–मंथन की स्टेज में वो ज्ञान की गंगा अर्थात् 18 वर्ष की मुरलियों का जो सार है वो ग्रहण किया और गंगा जहाँ की तहाँ जटाओं में मस्तिष्क में समा गयी। कोई बालों में समाने की बात नहीं है, बुद्धि में समा गयी। कब से? 69 से। तब से ज्ञानगंगा का पूरा आरोपण इस सृष्टि रूपी मंच पर हो गया; लेकिन दुनियाँ का कल्याण फिर भी नहीं हुआ। दुनियाँ का कल्याण करने के लिए भागीरथ को फिर से प्रयत्न करना पड़ता है। तो वो है ही भाग्यशाली रथ। धारणकर्ता जो किसी ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करके फिर पुरुषार्थ कराता है और 76 में 'एडवांस ज्ञान' के रूप में, 'एडवांस नालेज' के रूप में वो ज्ञानगंगा जटाओं से बह कर पृथ्वी पर ब्राह्मण बच्चों का कल्याण करना शुरू करती है। तो ये ज्ञानगंगा की बुद्धि में रमण करने की बात है। यही सद्गति की शुरूआत है। अगर मनन–चिंतन–मंथन बुद्धि में नहीं चलता तो समझ लो आत्मा अभी रोगी है, सद्गति पाने वाली नहीं। तो ये हुआ सद्गुरु का रूप।

"बी" साइड (कैसेट)

कोई भी व्यक्ति को श्रीमत का प्वाइन्ट पक्का बता दीजिए कि ये श्रीमत है ब्रह्मा के थ्रू परमात्मा शिव की। वो है हमारी गीता माता और वो गीता माता भी अगर गुलजार दादी में प्रवेश करके प्रत्यक्ष होती है, ज्ञान की वाणी सुनाती है तो वो भी हमारे लिए श्रेष्ठ मत ही है; क्योंकि प्रवृत्तिमार्ग में मात–पिता दोनों ही मान्य हैं। जो मुरली है अर्थात् ब्रह्मा के थ्रू परमात्मा शिव ने जो सुनायी है वो हमारी पोयट्री गीता रूपी गीत है और गुलजार दादी के द्वारा हमारी प्रोज है; लेकिन दोनों प्रकार की वाणियों की व्याख्या टीचर के रूप में बाप आकर किसी और ही ब्राह्मण बच्चे के द्वारा करते हैं। तो गुलजार द्वारा ब्रह्मा की वाणी अथवा ब्रह्मा द्वारा परमात्मा शिव की वाणी दोनों ही हमारे लिए श्रीमत है; लेकिन उनको न समझने के कारण देव–दानवों (कौरव–पांडवों) का द्वैतवादी संघर्ष शुरू हो गया। सैकड़ों महावाक्य बाबा ने बोलें; लेकिन जब हम उनको समझ ही नहीं रहे हैं, उनके रहस्य को नहीं जानते तो न समझने के बराबर हो गया। ब्रह्मा स्वयं भी उन महावाक्यों के अर्थों को नहीं समझ पाए। नहीं तो 76 के विनाश के बारे में परमात्मा शिव ने जो महावाक्य उच्चारण किए वो ब्रह्मा की बुद्धि में अच्छी तरह स्पष्ट हो जाने चाहिए थे, वो झूठे साबित नहीं होने चाहिए; लेकिन जिन अर्थों में उन महावाक्यों को लिया गया वो झूठे साबित हुए। जबकि ऐसा नहीं है। परमात्मा की वाणी अपनी जगह बिल्कुल एक्युरेट है। बिगर अर्थ चरिए–खरिए बोलते हैं, परमात्मा नहीं बोलता। एक तरफ तो परमात्मा वाणी में बोलते आ रहे हैं कि **"विनाशज्वाला रुद्र ज्ञान यज्ञ कुंड से प्रज्वलित हुई।"(मु० 14.2.01 पृ०3)**। तो यज्ञ कुंड से विनाशज्वाला प्रज्वलित होगी तो 76 से विनाश कहाँ से शुरू हुआ होगा? बाहर की दुनियाँ से या यज्ञ कुंड से? यज्ञ

कुंड से शुरू हुआ ना। तो महावाक्यों का तालमेल परमात्मा बाप स्वयं ही आकर बताते हैं। तो ऐसे नहीं है कि गुलजार दादी के द्वारा ब्रह्मा की जो कुछ बोली गयी वाणी है वो हमारे लिए माननीय नहीं है; लेकिन माननीय होते हुए भी वो हमारी समझ से बाहर है। जब तक उसकी व्याख्या परमात्मा स्वयं आकर न करें तब तक हमारे लिए वो श्रीमत नहीं है। क्योंकि श्रीमत के लिए मुरलियों में भी बोला है **''बाप सन्मुख आकर श्रीमत देते हैं।''(मु० 25.1.98 पृ०3)।** तो हमारे लिए सन्मुख श्रीमत कहाँ हुई? सन्मुख माना मुख के सामने। तो मुख के सामने आकर परमात्मा जो श्रीमत देता है वो टीचर और सद्गुरु के रूप में देता है। इसलिए वाणियों में बोला हुआ है **''तुम बच्चों को कदम–2 पर श्रीमत पर चलना है।''(मु० 22.5.98 पृ०1)।** कदम2 का मतलब क्या हुआ? यानी अपने जीवन में जो भी कार्य करने के लिए कदम उठायें उस हर कार्य को करने के पहले परमात्मा बाप से श्रीमत लें। ये कब सम्भव हो सकता है? जब परमात्मा सन्मुख इस सृष्टि पर विराजमान होगा तभी तो श्रीमत लेंगे, नहीं तो कैसे लेंगे? तो पहली2 बात, किसी की बुद्धि में श्रीमत के महत्व की बैठाना है कि श्रीमत किसके द्वारा और श्रीमत क्या चीज है? दूसरी बात बाप, टीचर या सद्गुरु की है। बड़ी माँ के रूप में परमात्मा ने ब्रह्मा के द्वारा पार्ट बजाया। बाप, टीचर, सद्गुरु का पार्ट परमात्मा शिव किसी और ही ब्राह्मण बच्चे के द्वारा बाद में प्रत्यक्ष होकर बजाते हैं। उनका क्लैरीफिकेशन भी दिया कि बाप का काम क्या, टीचर का काम क्या और सद्गुरु का काम क्या है? काम के आधार पर वो नाम भी क्लीयर हो जाएंगे।

तीसरी बात आती है कि ब्रह्मा माँ है तो माँ पहले या बाप पहले? बाप तो पहले होगा। तो वो कब? यज्ञ में तो ऐसे कहते चले आए कि ब्रह्मा को 1937 में साक्षात्कार हुए और उनमें परमात्मा शिव ने प्रवेश कर लिया; लेकिन ये सुनी–सुनायी बात है। परमात्मा की वाणी में ऐसा क्लीयर कट बात कहीं भी नहीं है कि परमात्मा शिव ने 1937 में दादा लेखराज (ब्रह्मा) में प्रवेश कर लिया। मुरलियों में तो ये वाक्य आए हैं कि ''**ऐसे–ऐसे बच्चे थे जो मम्मा–बाबा को डाइरैक्शन देते थे, टीचर हो करके बैठते थे, ड्रिल कराते थे। उनमें शिवबाबा प्रवेश हो कर डाइरैक्शन देते थे। उनके डाइरैक्शन पर हम चलते थे यानी मम्मा–बाबा चलते थे। आज वो बच्चे यज्ञ में हैं नहीं**।''(मु० 14.5.94 पृ०3)। ऐसे ही दूसरे वाक्य में बोला–''**दस वर्ष से रहने वाला (यानी कोई पुरुष था), ध्यान में जाती थी (यानी कोई स्त्री भी थी), मम्मा–बाबा को ड्रिल सिखाते थे। उनमें बाबा प्रवेश हो करके डाइरैक्शन देते थे** ('उनमें' माने कोई दो थे)। **कितना मर्तबा था। वो भी गुम हो गये**।''(मु० 23.7.69 पृ०2/रि० मु० 27.6.93 पृ०1)। कारण बताया, क्यों गुम हो गए? क्योंकि उस समय इतना ज्ञान नहीं था। माँ और बाप में विशेष यही अंतर होता है। माता होती है भावनावादी और बाप होता है बुद्धिवादी। पिता की विशाल बुद्धि होती है। माताएं चार दिवारी के अंदर रहने वाली होती हैं। दिल तो होता है; लेकिन दिमाग उतना विशाल नहीं हो पाता। तो यही बात यहाँ बेहद के मात–पिता के ऊपर भी लागू होती है। यज्ञ के आदि में ब्रह्मा बाबा को साक्षात्कार तो हुए– स्थापना का साक्षात्कार हुआ, विनाश का साक्षात्कार हुआ, विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ, वैकुण्ठवासी कृष्ण का साक्षात्कार हुआ; लेकिन उन साक्षात्कारों को वो समझ नहीं सके। मुरली में ये बात आयी है कि **''बाबा मूँझ गए, समझ में नहीं आता था। वाराणसी गए तो वहाँ दीवारों पर बैठ चित्र बनाते रहते थे फिर भी कुछ समझ में नहीं आता था।''(मु० 3.7.99 पृ०2)।** अपने गुरु से सिंध–हैदराबाद में बाबा ने पूछा– क्या ये साक्षात्कार आपने कराये? तो उसने अनभिज्ञता जाहिर कर दी। उस समय से बाबा की गुरुओं से तो श्रद्धा हट गई; लेकिन अपने अनुभवी जीवन में अनेक प्रकार के अनुभव, अनेक व्यक्तियों के साथ मनुष्य को होते हैं। तो ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन में किसी ऐसे व्यक्ति को देखा, परखा था जो ज्यादा से ज्यादा उनके प्रति सच्चा साबित हुआ। जिनके ऊपर अपने जीवन में उन्होंने सबसे जास्ती विश्वास किया और वो व्यक्ति था उनका साझीदार, भागीदार जिसके ऊपर उन्होंने कलकत्ते की सारी हीरे, जवाहरात की दुकान सौंपी हुई थी। पहले वो व्यक्ति बाबा के दुकान में साधारणसा नौकर था। इसलिए बोला ''10 वर्ष से रहने वाला''। बाबा के साथ कितने वर्ष से रहता था? 10 वर्ष से रहने वाला। उसको वफादार, होशियार और ईमानदार समझ करके बाबा ने अपनी सारी दुकान उसको सौंप दी और कहा कि सारी

मेहनत तुम्हारी और लागत हमारी। जैसे दुनियाँ में करते हैं। खेती करने वाले किसी व्यक्ति को खेती दे देते हैं और कहते हैं इसमें जो पैदाइश होगी उसमें आधा हिस्सा तुम्हारी मेहनत का और आधा हिस्सा हमारी प्रापर्टी का।

तो ऐसे ही दोनों एक दूसरे के भागीदार हो गए। वो भागीदार ब्रह्मा बाबा को याद आया। कब? जब मूँझ गए। तो बाबा उसी के पास कलकत्ता में पहुँचे। इसलिए अव्यक्त वाणी में बोला हुआ है। मुरलियों को वो छुपा सकते हैं; लेकिन अव्यक्त वाणी जो छपा दी गई है, जो पब्लिश हो चुकी है, सैकड़ों हाथों में पहुँच चुकी है वो कहाँ ले जाएंगे? उस अव्यक्त वाणी में बाबा ने बोला हुआ है कि ''**इस रथ को कहाँ से ढूँढा? पूर्वी बंगाल से**।''(अ०वा० 1.2.79 पृ०561)। (किसी ने कहा– ब्रह्मा को ही कहते हैं पूर्वी बंगाल से)। कभी कहते हैं सिंध–हैदराबाद में साक्षात्कार हुए, वहाँ परमात्मा ने प्रवेश किया और वो 'शिवोऽहम्2' कहने लगे। (किसी ने कहा– नहीं, उधर पार्टनर था उसका जो दुकान था वो तो ब्रह्मा का ही था)। ये जो **जीवन कहानी** की पुस्तक है उसमें क्या लिखा है? कि ब्रह्मा बाबा को सिंध–हैदराबाद में साक्षात्कार हुए। वो सतसंग छोड़ करके अपनी कोठरी में गए और वहाँ वो शिवोऽहम्2 कहने लगे। (किसी ने कहा– वो भी है)। वो भी है तो प्रवेश कहाँ हुआ? (किसी ने कहा– कलकत्ता में भी तो कहते हैं उनका घर था)। दो बातें कैसे एक साथ साबित हो जाएंगी? या तो रथ को सिंध–हैदराबाद में ढूँढा या कलकत्ते में ढूँढा। एक बात कहो, दो बातें कहने से ही साबित हो जाता है कि अलग बात बोल रहे हैं। (दोनों तरफ से बोल दिया, दोनों ही रथ की बातें हैं– एक टेम्पररी, एक मुकर्रर)। बाबा ने मुरली में बोला है ''**साक्षात्कार होना अलग बात है और प्रवेश करना अलग बात है**''(मु० 19.1.01 पृ०4)। जैसे जिसने कह दिया वैसे हर बात को नहीं मान लेना चाहिए। ये तो देहधारियों ने कहा कि ब्रह्मा में सन् 1937 में प्रवेशता हो गयी। मुरली में तो बाबा ने कहीं नहीं कहा या मुरली से ये बात साबित नहीं होती। मुरली से तो ये बात साबित होती है कि पहले बाबा मुरली नहीं चलाते थे। मुरली में ये वाक्य है ''**पहले बाबा मुरली नहीं चलाते थे। कराची से मुरली निकलती चली आयी है**''(मु० 13.6.01 पृ०1)। मुरली चलाना कहाँ से शुरू हुआ? तो सिंध–हैदराबाद में पहले सतसंग शुरू हुआ या कराची में? पहले तो सिंध–हैदराबाद में सतसंग शुरू हुआ था ना। वहाँ साक्षात्कार हुए थें। कराची तो बाद में पहुँचे हैं। कराची में तो सतसंग तब इकट्ठा हुआ है जब 1947–48 में हिंदुस्तान–पाकिस्तान का बँटवारा हो गया और बँटवारा होने के बाद सिन्ध–हैदराबाद में बंदिश में पड़ी हुई जो कन्याएँ, माताएँ थीं, जिनको सतसंग में जाने से रोक दिया गया था, उनको मौका मिल गया 5–8,10–15 की टोली बना कर ब्रह्मा बाबा के पास भाग गईं। तो वहाँ संगठन सारा इकट्ठा हो गया। कहाँ? कराची में। तो जब सारा संगठन इकट्ठा हो गया तब परमात्मा शिव ने ब्रह्मा में प्रवेश करके मुरली चलाना शुरू किया। इसलिए मुरली के महावाक्य में बोला हुआ है कि **''पता कैसे चलता है कि इनमें बाप भगवान है? जब मुरली सुनाते हैं, ज्ञान सुनाते हैं।''(मु० 26.10.99 पृ०2)।** तो कराची से ब्रह्मा के मुख से मुरली निकलती चली आयी है। उसी समय से उनमें प्रवेशता साबित होती है। जिसका एक प्रूफ और है– ''**ब्रह्मा की आयु 100 साल**'' (मु० 13.2.91 पृ०2) बतायी गयी। ''**60 वर्ष की एज में प्रवेश होना साबित होता है**।'' (मु० 26.10.99 पृ०2)। मुरली में बाबा ने बोला है। तो सन् 48 में ब्रह्मा बाबा को 60 वर्ष आयु होना चाहिए। ब्रह्मा बाबा की आयु सन् 88 में 100 साल पूरी होती है, अगर 76 में कहें तो 76 में एज पूरी हो जानी चाहिए। सन् 76 में अगर एज पूरी होती है तो सूक्ष्म शरीर का पार्ट बंद हो जाना चाहिए था; लेकिन 76 में स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर दोनों को मिलाकर जो 100 वर्ष ब्रह्मा की आयु आँकी गयी होती तो वो पार्ट समाप्त तो नहीं हुआ। इसका इशारा सन् 87–88 में दिया है जिस वर्ष ब्रह्मा बाबा नहीं आए। अब ये पीरियड है कि एक तरफ ज्ञान सूर्य प्रत्यक्ष हो और दूसरी तरफ ज्ञान चन्द्रमा अस्त हो। तो ब्रह्मा में प्रवेशता सन् 48 में साबित होती है, जबकि सारा संगठन कराची में इकट्ठा हो गया। उससे पहले क्या परमात्मा का पार्ट नहीं चला? चला; लेकिन ब्रह्मा के द्वारा नहीं। ब्रह्मा को भी जिसने ज्ञान का बीज डाला उसके द्वारा वो पार्ट चला और वो व्यक्तित्व था उनका भागीदार। **'अलफ को मिला अल्लाह, बे बादशाही सारी भागीदार को दे दी**।' अलफ कौन और बे

कौन? यज्ञ के आदि में वही व्यक्तित्व जिसमें परमात्मा शिव ने प्रवेश करके ब्रह्मा बाबा के साक्षात्कारों का क्लैरीफिकेशन दिया वो हुआ अलफ और ब्रह्मा बाबा जिसने सारे संगठन की कंट्रोलिंग पावर सम्भाली वो हुआ बे। तो बे बादशाही सारी किसको दे दी? भागीदार ब्रह्मा को दे दी। तो दोनों एक दूसरे के भागीदार हो गए।

यज्ञ के आदि में दोनों में खट–पट हो गई। जिसको अव्यक्त वाणी में बाबा ने बोला हुआ है "**विनाशज्वाला कब प्रज्वलित हुई? यज्ञ के आदि से ही यज्ञ कुंड से स्थापना के साथ2 विनाशज्वाला भी प्रज्वलित हुई। निमित्त कौन बने? ब्रह्मा, बाप और ब्राह्मण बच्चे भी उस विनाशज्वाला को प्रज्वलित करने के निमित्त बने**"(अ०वा० 3.2.74 पृ०173)। तो जो निमित्त बने हैं उनको अब अंत में वो विनाशज्वाला सम्पन्न भी करनी है; क्योंकि विनाश है कल्याणकारी। जब तक वो विनाशज्वाला संपन्न नहीं होगी तब तक माला के मणके प्रत्यक्ष नहीं हो सकते। जैसे यज्ञ में आहुति डाली जाती है तो जो आहुति डालने में कमजोर होते हैं, जिनको प्रैक्टिस नहीं होती वो अपना हाथ बाहर खींच लेते हैं। उनकी आधी आहुति अंदर जाती, आधी आहुति बाहर गिर जाती है। तन–मन–धन पूरा स्वाहा नहीं कर पाते। तो जो पक्के ब्राह्मण होंगे जिनकी माला तैयार होनी है वो कब प्रत्यक्ष होंगे? जब विनाश ज्वाला पूरी जोर पकड़ेगी। उससे घबड़ाने की बात नहीं है। वो तो और खुशी की बात है। कमजोर आत्माएं घबड़ायेंगी और पावरफुल आत्माएं पावर पकड़ेंगी। तो यज्ञ के आदि में ही यज्ञ कुंड से कोई बात को ले कर ब्रह्मा और बाप के बीच फ्रिक्शन पड़ गया। फ्रिक्शन डालने वाले कोई बच्चे ही थे। किसी दूसरे धर्म की आत्मा यज्ञ के अंदर प्रवेश करने लगी और वो बाप को पसंद नहीं कि इनको अंदर घुसा कर बैठाया जाए, वही लड़ाई अभी भी है। यज्ञ के अंदर कुछ ऐसी आत्माएं आ गईं जिनको अंदर सत्संग में भले आने देना चाहिए; लेकिन उनको अंदर घुसा करके नहीं बैठाना चाहिए। वही हुआ। माँ का जो ह्रदय होता है कोमल होता है। माँ अपने अँधे, लूले, काने, कुब्जे, चोर–चकार, डकैत, लम्पट बच्चे को भी अपनी गोद से अलग नहीं कर सकती। ब्रह्मा बाबा ने उस बच्चे को अलग करने से, बाहर करने से इन्कार कर दिया। बाप को ये बात पसंद नहीं थी। तो दोनों में फ्रिक्शन पड़ गया। बच्चों ने माँ का साथ दिया, माँ की तरफ से लड़े। बाप और बाप के फालोअर्स का जितना भी संगठन था वो सब चला गया। वही सारा संगठन राम बाप जैसे आत्माओं का था जिनके लिए मुरली में बोला है "**राम फेल हो गया**"(मु० 11.10.87 पृ०2)। ऐसे कभी नहीं बोला राम फेल हो जाएगा। भविष्य के लिए मुरली में नहीं बोला। राम फेल हो गया माना पास्ट हो गया। तो ब्राह्मण बच्चा पढ़ाई पढ़ते2 फेल हो गया। फेल हो गया तो अनुभवी भी तो हो गया। तो उसका रिजल्ट बताया कि "**वो त्रेता में जाकर चन्द्रवंशी बनेगा**"। कभी2 ऐसे भी होता है। आजकल जो वकालत पढ़ाई जाती है उस वकालत में जो आखिरी साल की पढ़ाई नहीं पढ़ पाते वो भी इनकम टैक्स आफिस में प्रैक्टिस कर लेते हैं, जो पूरे पास नहीं हुए। एक्स हो गयें ना; लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि बिल्कुल बेकार हो गयें। तो जो पहले2 फेल हुए वो त्रेता में चन्द्रवंश का पद उन्होंने ले लिया। अब बाबा कहते हैं कि "**जो बच्चे एक बार ब्राह्मण बनकर शरीर छोड़ते हैं तो उनका किया हुआ पुरुषार्थ व्यर्थ नहीं जा सकता। वो फिर दुबारा जन्म लेकर पुरुषार्थ करेंगे**"। तो वही आदि वाली आत्माएं राम और राम बाप के फालोअर्स बच्चे, क्षत्रिय वर्ण की विशेष आत्माएं, जिन क्षत्रिय वर्ण की आत्माओं ने भारत में विशेष राजाइयाँ की है; ब्राह्मणों ने राजाइयाँ नहीं कीं, शूद्रों ने इतनी राजाई नहीं की; भारत में विशेष कौन सी जाति ने राजाई की है? क्षत्रियों ने। वही क्षत्रिय वर्ण की विशेष आत्माएं फिर दुबारा जन्म लेकर 76 में जब आदि ब्रह्मा की 100 साल आयु पूरी होती है तब फिर प्रत्यक्ष होने लग पड़ती हैं। आदि ब्रह्मा कौन? वही प्रजापिता।

भागीदार की सोल ब्रह्मा के शरीर छोड़ने के बाद फिर यज्ञ में प्रवेश कर जाती है। वही प्रजापिता के साथ वाली आत्मा जिसे यज्ञ माता के रूप में पहचाना जाता था वो यज्ञ माता भी शरीर छोड़ जाती है और ओमराधे मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद फिर यज्ञ में आ जाती है। जैसे जंगल कभी खाली नहीं रहता, उसमें राजा के रूप में शेर–शेरनी होनी चाहिए। तो ब्रह्मा–सरस्वती जाते हैं तो उनका स्थान कोई दूसरी दो आत्माएं ले लेती हैं, जिनका मुकाबला ज्ञान–योग–धारणा–सेवा में कोई कर नहीं

सकता। ये बात दूसरी है कि पहले2 वो गुप्त रहती हैं और बाद में प्रत्यक्ष हो जाती हैं। तो 66 से लेकर और 69 तक जिस समय बाबा ने प्रजापिता शब्द को एड करवाया, उस समय आप देखेंगे पुराने त्रिमूर्ति के चित्र में लिखा था– **'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय।'** इसमें 'प्रजापिता' शब्द एड नहीं है; क्योंकि ये चित्र पहले का बना हुआ है। ऐसे ही झाड़ के चित्र में भी 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' लिखा है; क्योंकि ये चित्र भी पहले का बना हुआ है। इसमें 'प्रजापिता' शब्द एड नहीं है। ये 'प्रजापिता' शब्द एड ही तब हुआ है जब मम्मा ने शरीर छोड़ दिया और राम वाली आत्मा यज्ञ के अंदर प्रवेश हो गई। उस समय ये प्रजापिता शब्द एड़ हुआ। लक्ष्मी–नारायण के चित्र के नीचे और सीढ़ी के चित्र के नीचे लिखा हुआ है– **'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय।'** जब वो आत्माएं थी ही नहीं तो उनकी स्मृति दिलाना भी बेकार है और जब वो आत्माएं यज्ञ में आ गईं तो गॉड फादर शिव ने बच्चों को उनकी स्मृति भी दिलाना शुरू कर दिया। सन् 69 से लेकर 76 तक 6–7 वर्ष हुए। 75 तक समझ लीजिए। सन् 76 में भारत वर्ष में बड़े जोर–शोर से बाप का प्रत्यक्षता वर्ष मनाया गया। विदेशों में भी डाइरैक्शन्स निकाले गए थे कि 76 है बाप का प्रत्यक्षता वर्ष। तो कोई पूछे कि 76 में बाप का प्रत्यक्षता वर्ष क्यों मनाया गया? क्या इससे पहले 40 वर्षों में बाप की प्रत्यक्षता का कार्य नहीं हुआ था? क्या 76 के बाद कभी बाप की प्रत्यक्षता का कार्य नहीं हुआ? 76 में ही बाप का प्रत्यक्षता वर्ष क्यों मनाया गया? उसका रहस्य ये है कि 76 में वो बाप, बाप के रूप में कुछ बच्चों के सामने प्रत्यक्ष होता है। जिसके लिए अव्यक्त वाणी में इशारा दिया कि ''**विदेशी बाप को पहले पहचानेंगे। विदेशियों के द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होगी।**''(अ०वा० 17.5.98 पृ०3)। इसका भी गलत अर्थ लगा लिया गया। उन्होंने समझा जो पैसे वाले, हवाई जहाजों में घूमने वाले दुनियाँवी विदेशी हैं उनके द्वारा बाप प्रत्यक्ष हो जायेगा। ऐसी बात नहीं। बाप की प्रत्यक्षता तो बाप के जो 108 बच्चे हैं, माला के मणके बनने वाले हैं, जन्म2 के राजायें हैं उन श्रेष्ठ आत्माओं के द्वारा ही प्रत्यक्षता हो सकती है। दुनियाँवी कोई हस्ती बाप को प्रत्यक्ष नहीं कर सकती। वो दुनियाँ वाले जो साहूकार हैं, धन–दौलत वाले हैं वो रूहानी बाप को कैसे प्रत्यक्ष करेंगे? बाप के गरीब–निवाज बच्चे ही बाप को प्रत्यक्ष कर सकते हैं। तो वास्तव में हम ब्राह्मणों की दुनियाँ में ही जो बीजरुप आत्माएं हैं, जो यज्ञ के आदि में भी थीं, बीच में छोड़ करके चली गईं, फिर दुबारा यज्ञ में आईं, वही बीजरुप आत्माएं जिन्होंने ब्रह्मा के साकार रुप से इस जन्म में पालना नहीं ली तो उनको साकार याद आएगा या निराकार बिंदु याद आएगा? कौन ज्यादा याद आएगा? निराकार बिंदु ज्यादा याद आएगा और जिन्होंने साकार ब्रह्मा से पालना ली, साकार की गोद में खेले उनको साकार याद आएगा या बिंदु ज्यादा याद आएगा? साकार ज्यादा याद आएगा। तो बिंदु का संग का रंग जिन्होंने बुद्धि से लगाया उनकी बुद्धि सूक्ष्म बनेगी या स्थूल रूप को जिन्होंने याद किया उनकी बुद्धि सूक्ष्म बनेगी? बिंदु को याद करने वाले जो नये बच्चे दुबारा जन्म लेकर यज्ञ में आए हैं, जिन्होंने साकार पालना नहीं ली उनको बिंदु की याद आटोमेटिक आयेगी और उनकी बुद्धि तीव्रगामी हो गई, सूक्ष्म हो गई। और जिन्होंने साकार स्वरूप को याद किया, तो साकार को याद करने से उनकी बुद्धि स्थूल हो गई। स्थूल बुद्धि में ज्ञान के जो सूक्ष्म राज हैं वो बैठ ही नहीं सकते।

इसलिए ये ड्रामा अनादि बना हुआ है। जो आदि वाले बच्चे फर्स्ट में थे वही लास्ट में फिर दुबारा जन्म लेकर आते हैं और लास्ट में आकर फास्ट पुरुषार्थ कर फिर फर्स्ट में आ जाते हैं। वो फर्स्ट आने वाले बच्चे जो 108 की माला के मणके बनते हैं वो बाप के वो बच्चे हैं जो बाप को संसार में प्रत्यक्ष करने वाले हैं और वो बच्चे, बुद्धि की सूक्ष्म स्टेज के द्वारा, मनन–चिंतन–मंथन की सूक्ष्म स्टेज के द्वारा, मनसा सेवा के द्वारा सारे संसार की आत्माओं को संदेश देने की शक्ति रखने वाले हैं; लेकिन जब तक उनकी बुद्धि में सारे रहस्य क्लीयर नहीं होते तब तक वो कार्य रहा हुआ है। जब एक बार सारे रहस्य क्लीयर हो जाएं, बात क्लीयर हो जाए फिर कार्य सम्पन्न होने में देर नहीं लगती। तो 76 में बाप की प्रत्यक्षता होने पर वो विदेशी बीजरुप बच्चे जिनके लिए शास्त्रों में और अव्यक्त वाणियों में भी बाबा ने इशारा दिया है कि ''**ब्रह्मा के मानस पुत्र के रूप में चार पुत्र गाए हुए हैं– सनत, सनातन, सनंदन और सनत कुमार**''। जिनमें सनत् कुमार को 5–6 वर्ष का दिखाया जाता हैं। ये अलौकिक

आयु की बात है। सन् 69–70 से ले कर और 75 तक 5–6 वर्ष की आयु वाले वो बच्चे दिल्ली में बाप को प्रत्यक्ष करते हैं। उनमें एक है आदि सनातन देवी–देवता धर्म का बीज, बाकी तीन हैं– इस्लामी, बौद्धि और क्रिश्चियन धर्म के बीज। जो विदेशी बच्चे हैं वो पहले उस बात की गुह्यता को समझकर बाप को ब्राह्मणों की दुनियाँ में प्रत्यक्ष कर देते हैं। तो ये बाप की प्रत्यक्षता का वर्ष हुआ 76। विदेशियों के द्वारा बाप प्रत्यक्ष हुआ। ये वास्तव में रात्रि के 12 बजे का पीरियड हुआ। विदेशी लोग नये दिन की शुरुआत रात्रि के 12 बजे से मानते हैं और भारतीय लोग (स्वदेशी लोग) दिन की शुरुआत, नये तिथि की शुरुआत जब सूर्य प्रत्यक्ष रूप में निकल आता है तब मानते हैं। इसलिए बाबा ने बताया है ''**पहले बाप का जन्म होगा या पहले बच्चे का जन्म होगा? शिवजयन्ती सो गीता जयन्ती, फिर बाद में है कृष्ण जयन्ती**''(मु० 9.4.01,पृ०1)।

तो शिवजयन्ती के साथ ही साथ गीता जयन्ती भी हो जाती है। शिव जैसे ही प्रवेश करते हैं वैसे ही गीता ज्ञान सुनाना शुरु कर देते हैं जिसके फलस्वरूप ब्रह्मा बाबा का अलौकिक जन्म होता है। ब्रह्मा बाबा को आदि में ही अपनी स्मृति आ गई कि मैं कृष्ण की सोल हूँ; इस जन्म में मुझे ब्रह्मा के रूप में पार्ट बजाना है, नई दुनियाँ की स्थापना मेरे द्वारा आरम्भ होगी, ब्राह्मण कुल की मेरे द्वारा स्थापना होनी है। बाबा को पक्का निश्चय बैठ गया; क्योंकि उनको प्रैक्टिकल में साक्षात्कार हुए थे, प्रजापिता को तो साक्षत्कार नहीं हुए थे। उनके द्वारा तो परमात्मा ने पंडितजी का पार्ट बजाया, जिनको अपना कुछ साक्षात्कारों का अनुभव तो था नहीं। लिहाजा यज्ञ में जब फ्रिक्शन पड़ा तो जो भावनावादी ब्रह्मा था वो स्थिरियम रहा और प्रजापिता की सोल यज्ञ से टूट गई; क्योंकि उस समय बुद्धिवादी होने के कारण पिता की बुद्धि को ज्ञान का डोज पूरा नहीं मिल सका। ज्ञान का पूरा डोज तो तब कहा जाए जबकि सृष्टि–चक्र की पूरी नालेज मिल जाए। ओम शान्ति।

सृष्टि–चक्र एडवांस – 1 घंटा

सृष्टि–चक्र के चित्र में बेसिक नालेज के बतौर शार्ट में बताया जाता है कि ये सृष्टि की 4 भुजाओं का एक चक्र है जो चार युगों में बाँटा हुआ है। 1250–1250 वर्ष की ये 4 भुजायें 4 युगों को सूचित करती हैं, जिसमें दो भुजायें राइट हैंड की ओर और दो भुजायें लेफ्ट हैंड की ओर हैं। राइट हैंड की 2 भुजायें सतयुग–त्रेतायुग 'स्वर्ग' की सूचक हैं और लेफ्ट हैंड की 2 भुजायें द्वापरयुग– कलियुग 'नर्क' की सूचक हैं। नर्क के बाद स्वर्ग और स्वर्ग के बाद नर्क, ये ढाई–2 हजार वर्ष के बाद परिवर्तन होता रहता है; लेकिन नर्क की दुनियाँ को स्वर्ग बनाने के लिए बीच में है कलियुग अंत का **संगम**, जो छोटा सा तीर के द्वारा दिखाया गया है।

ये 50–60 वर्ष का संगमयुग है जिसमें कलियुग को बदलकर संकल्पी सतयुग की स्थापना की जाती है। ये 5000 वर्ष का चक्र ज्यों का त्यों घूमता रहता है; लेकिन इस बेसिक नालेज को लेकर जब मुरलियों की गहराई में उतरा जाता है तो ढेर सारी नयी–2 बातें निकलती हैं जिसके लिए बाबा कहते हैं **''स्वदर्शन चक्र घुमाओ''**। तो ये चार युगों का चक्र है। इसमें हमारी आत्मा कैसे चक्र लगाती है, ये है स्व आत्मा के 84 जन्मों के चक्र का दर्शन। तो मुरलियों की गहराई में जाने से, मनन–चिंतन–मंथन में जाने से ढेर ऐसी बातें निकलती हैं जिससे शास्त्रों का सारा ज्ञान क्लीयर हो जाता है। बाबा ने मुरली में बताया हुआ है कि ''**जैसे कोई ड्रामा होता है वैसे ही ये भी ड्रामा है; लेकिन वो हद के ड्रामा होते हैं और ये है तुम्हारा 5000 वर्ष का बेहद का ड्रामा।''(मु. 19.12.01, पृ.2)**। इसकी शूटिंग कब होती है? संगमयुग में। तो संगमयुग में इसकी शूटिंग का पीरियड भी निश्चित होगा। संगम की

आयु ज्यादा से ज्यादा मुरलियों में **''100 साल''** (मु० 3.11.76 पृ०3) बतायी गयी है और कम से कम **''40 साल''** (मु० 11.9.73 पृ०4)भी बतायी गयी है। बाकी कहीं **''50 साल''**(मु० 2.3.74 पृ०2), कहीं **''50–60 साल''**(मु० 14.1.96 पृ०4), इस तरह 3–4 तरीके से बाबा ने मुरली में बताया हुआ है। तो इसमें मूँझने की कोई बात नहीं है। मुरलियों के प्रसंग के अनुसार बाबा ने जहाँ 40 साल बताया वो भी ठीक और जहाँ 100 साल बताया वो भी ठीक। 4 युग हैं तो वो जैसे ड्रामा के 4 सीन हैं और प्रत्येक युग के शूटिंग का समय भी संगमयुग में नूँधा हुआ होना चाहिए। ऐसे नहीं चारों युगों की शूटिंग एक साथ हो जाएगी। जरूर पहले सतयुग की शूटिंग होगी। जैसे कोई मकान बनाते हैं तो पहली मंजिल बनाने में साज–सामान इकट्ठा करने में टाइम ज्यादा लग जाता है। ऐसे ही पहला युग है सतयुग, उसका फाउंडेशन डालने के लिये भी लम्बा समय चाहिए। शास्त्रों में भी सतयुग की आयु कलियुग से 4 गुनी, त्रेतायुग की 3 गुनी, द्वापरयुग की कलियुग से 2 गुनी दिखायी गई है। ऐसे तो शास्त्रों में 1250 वर्ष का ही कलियुग बताया गया है; लेकिन शास्त्रकारों ने उसे दैवी और दिव्य वर्षों से गुणा करके लाखों वर्ष का बना दिया।

जैसे बाबा कहते हैं **''देवताओं का कोई अलग दिन नहीं होता है, न कोई अलग वर्ष होता है, न कोई अलग मास होता है''।** दिन, वर्ष, मास तो यहीं होते हैं। सतयुग की शूटिंग के लिए अगर उसमें आरम्भ का 10–12 वर्षीय भक्तिमार्ग भी शामिल कर लिया जाए तो सामान्य तौर पर कुल टोटल 40 वर्ष का सतयुगी शूटिंग काल हुआ; लेकिन शुरूआत का अगर संगम का समय निकाल दिया जाए और संगमयुगी स्वर्ग की स्थापना का जो सैम्पल कराची से दिखाया गया जिसे सन् 1947 से लेकर 1960 तक की कुल टोटल आयु निकाली जाती है; क्योंकि सन् 1950 के बाद भी ईश्वरीय सेवा की दृष्टि से कोई विशेष वृद्धि नहीं हो पाई। जैसे शूटिंग का सारा हिसाब है और ब्रॉड ड्रामा का सारा हिसाब बनता है, परमधाम रूपी घर से एक्टर्स रूपी आत्माएं जो सृष्टि रूपी रंगमंच पर उतरती हैं और उनकी संख्या बढ़ती हैं। संगमयुग में जब तक दुनियाँ का विनाश न हो जाए और जब तक नयी जनरेशन की शुरूआत न हो और नयी जनरेशन यथार्थ स्थान पर सेट न हो जाये तब तक एक्युरेट सतयुग की शुरूआत नहीं मानी जा सकती। और जब एक्युरेट सतयुग की शुरूआत होती है तो ब्राड 5000 वर्ष के ड्रामा में परमधाम घर से आत्माएं उतरती हैं और शूटिंग पीरियड में आत्माएं अज्ञान की दुनियाँ से, कब्रदाखिल होने से ज्ञान की स्टेज में जागती हैं अर्थात् ज्ञान में उनका आना होता है, जैसे जागृत अवस्था में आना होता है। जैसे परमधाम में आत्मा सुषुप्त पड़ी रहती है और सृष्टि रूपी रंगमंच पर आकर जागृत हो जाती है, ऐसे ही इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कलियुग के अंत में सब आत्माएं जैसे अज्ञान निद्रा में सोयी हुई पड़ी हैं। परमात्मा आकर उनको ज्ञान का संदेश देकर कब्रदाखिल से जगाते हैं। तो वो ज्ञान का संदेश जो तीव्रता से ब्राह्मणों की दुनियाँ में फैलाया गया वो तब फैलाया गया जब से चित्र बनें और चित्रों के द्वारा सर्विस होने लगी। त्रिमूर्ति, गोला और झाड़ का चित्र वास्तव में यज्ञ के अंदर 60–61 से बने हैं। इससे पहले भी इनका प्रारूप बुद्धि में आ चुका था; लेकिन इनका कम्पलीट रूप तब हुआ जब सबसे पहले **'गीतासार'** नाम की एक पुस्तक मुरलियों के सार रूप में छपायी गयी। उसमें ये तीनों चित्र छापे गए और इसके बाद ब्रह्मा बाबा ने हजारों के तादाद में फोल्डर्स छपाये थें। जिन फोल्डर्स को लेकर सर्विस करने का कार्य बाहरी दुनियाँ में शुरू हुआ। उस समय से ज्ञान की दुनियाँ में आत्माओं की जनसंख्या तेजी से बढ़ने लगी और सतयुगी शूटिंग तेज हो गयी। सन् 61 से लेकर 76 तक के 16 वर्षों में संदेश देने की सेवा के हिसाब से अथवा संदेश लेने की सेवा के हिसाब से ज्ञान यज्ञ में आत्माओं की वृद्धि शुरू हुई। बाकी कराची से जितने आये थे उनको जब सर्विस फील्ड में भेजा गया तो उनमें से बहुतों को ये अनिश्चय पैदा हो गया था कि अब तो बाबा के पास कुछ नहीं रहा और बहुत से ब्रह्मावत्स यज्ञ से टूट गए, जनसंख्या क्षीण हो गयी। तो बजाय सर्विस वृद्धि को पाने के और ही डाउन हो गयी। फिर बाद में जब धीरे–2 हालत सुधरी तो सर्विस तीव्रतर होती गयी।

तो 61 से लेकर 76 तक का जो पीरियड है वो सेवा के क्षेत्र में तीव्रगति लाने का है। इस शूटिंग काल को 76 तक ही क्यों आँका है? क्योंकि 76 में ब्रह्मा की 100 साल आयु पूरी हो जाती है।

आदि ब्रह्मा अर्थात् जिसमें परमात्मा शिव ने पहले प्रवेश किया उसे त्रिमूर्ति के चित्र में बताया था कि परमात्मा शिव ने पहले–2 प्रजापिता ब्रह्मा में प्रवेश किया। ब्रह्मा में तो बाद में प्रवेश किया। ''**कराची से मुरली निकलती चली आयी है**''(मु० 13.6.01 पृ०1), ऐसा मुरली में बोला है। तो जब से कराची से मुरली निकली तब से ब्रह्मा में प्रवेशता साबित होती है। उससे पहले बाबा कोई और बच्चों में मुरली चलाते थे। तो वो आदि ब्रह्मा, सन् 36–37 में 60 वर्ष का होना चाहिए और 60 वर्ष में 40 वर्ष और एड किये तो 100 वर्ष पूरे होते हैं। जो आदि ब्रह्मा की (100 साल) आयु 76 में पूरी हो जाती है। ''**ब्रह्मा मृत्युलोक में समाप्त हो जाता है। ब्रह्मा की आयु मृत्युलोक में पूरी होती है**।''(मु० 26.10.99 पृ०3)। तो वो आत्मा मन–बुद्धि की स्टेज से, प्रत्यक्षता रूपी दिव्य जन्म लेने के हिसाब से और अपने पार्ट के प्रत्यक्ष होने के हिसाब से 76 में नया अलौकिक जन्म धारण कर लेती है।

कल लक्ष्मी–नारायण के चित्र में बताया था कि ''**लक्ष्मी–नारायण का जन्म कब हुआ?– बाबा ने पूछा, आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुए।**''(मु० 6.3.75)। सन् 66 की इस वाणी के अनुसार 76 आता है। सेवा के हिसाब से ये 61 से लेकर 76 तक का जो समय है वो विशेष संदेश देने का समय है और उसमें सतयुगी शूटिंग करने वाली जितनी भी आत्माएं थीं, जिनकी संख्या सतयुग के आदि में 9 लाख और सतयुग के अंत में 2 करोड़ बाबा ने बतायी है, वो ज्ञान का संदेश ले लेती हैं। 73 की जो '**ज्ञानअमृत**' मैगजीन छपी है उसमें तब तक का पूरा सर्विस का पोतामेल दिया गया है। जिसमें बताया गया है कि **'अब तक विश्व की 1 करोड़ आत्माओं को संदेश दिया जा चुका है।'** तो जैसे ये 500 करोड़ में से एक करोड़ विश्व की अंश मात्र आत्माएं हो गयीं। तो हिसाब ठीक था। 73 से बड़े2 मेले लगने शुरू हुए। एक2 मेले में लाखों आत्माओं को एक साथ संदेश दिया जाने लगा और हर महीने भारत के किसी न किसी बड़े शहर में वो मेलों का आयोजन होने लगा। तो 73–74 से लेकर 76 तक और 100 लाख अर्थात् 1 करोड़ आत्माओं को संदेश मिलना कोई बड़ी बात नहीं थी। इस तरह सतयुग की 2 करोड़ मनुष्य आत्माओं को 76 तक ज्ञान का संदेश मिलने का ड्रामा की नूँध अथवा शूटिंग का कार्य पूरा हो जाता है। चित्र में सतयुगी शूटिंग काल में मुखिया कौन दिखाये गये हैं? प्रतिनिधित्व करने वाली आत्माएं कौन सी दिखायी गयी है? राधा–कृष्ण की आत्माएं। हम जानते हैं ये सतयुगी शूटिंग का वही पीरियड है जिसमें राधा–कृष्ण की आत्माएं अर्थात् मम्मा–बाबा या ब्रह्मा–सरस्वती की आत्माएं, ब्राह्मण बच्चों के दिलोदिमाग में स्थायी हो कर रहती हैं, हीरो–हीरोइन के रूप में पार्ट बजाती हैं। तो वो सतयुगी शूटिंग के निमित्त हो गए।

इसके बाद **त्रेतायुगी शूटिंग** का कार्य काल शुरू होता है। जैसा चित्र में दिखाया गया है। इसी तरह त्रेतायुगी सेकन्ड सीन में मुखिया कौन दिखाये गए? राम–सीता वाली आत्माएं। तो जरूर त्रेतायुगी शूटिंग में प्रतिनिधित्व के रूप में, मुखिया के रूप में राम–सीता वाली आत्माएं रंगमंच पर ब्राह्मणों की दुनियाँ के बीच आनी चाहिए। तो वैसे ही हुआ। राधा–कृष्ण की आत्माएं अगर ब्राह्मणों की दुनियाँ स्थापन करने के निमित्त बनती हैं, ब्राह्मणों की नयी दुनियाँ बनाती हैं, तो ये तो स्थापना का कार्य सतयुगी शूटिंग में संपन्न हुआ; लेकिन जब तक कचड़े का विनाश न हो तब तक स्थापना का कोई मूल्य नहीं होता। तो ब्राह्मणों की पुरानी दुनियाँ जिसमें दो प्रकार के ब्राह्मण इकट्ठे हो गए। रावण, कुम्भकर्ण जैसे ब्राह्मण भी इकट्ठे हुए तो वसिष्ठ और विश्वामित्र जैसे पुरुषार्थी ब्राह्मण भी हुए। तो उनमें से श्रेष्ठ वर्ग को एक ओर करने के लिये, शार्टिंग करने के लिये और दुष्ट वर्ग का सफाया करने के लिये शंकर का पार्ट शुरु हो जाता है। जैसे कृष्ण की सोल त्रिमूर्ति चित्र में **ब्रह्मा** का पार्ट बजाती है, वैसे ही राम की आत्मा त्रिमूर्ति में **शंकर** का पार्ट धारण करती है। त्रिमूर्ति का जो हिंदी का चित्र है उसमें विष्णु के नीचे जो लिखत है वो इस बात का प्रूफ है। उसमें विष्णु की चार भुजाओं की व्याख्या दी हुई है। चार भुजायें माना विष्णु की भुजाओं के रूप में परमात्मा की चार मददगार आत्माएं। तो चित्र में चार नाम दिये हुए हैं– ल०ना० और राम–सीता। इसलिए विष्णु चतुर्भुज में चार भुजायें दिखायी गयी हैं। दो भुजायें ब्रह्मा की ओर और दो भुजायें शंकर की ओर। तो दो भुजायें ब्रह्मा और सरस्वती हैं, ब्राह्मण धर्म की स्थापना की सूचक और दो भुजायें हैं राम और सीता वाली जो संगमयुगी दुनियाँ में

शार्टिंग का काम करती हैं, कचड़े का सफाया कर देती हैं, ताकि श्रेष्ठ आत्माएं जो नयी दुनियाँ की वारिसदार बनने वाली हैं उनको स्थान मिल सके।

इस प्रकार त्रेतायुगी शूटिंग जो सन् 76 से शुरू होती है उसका हिसाब यही है कि सन् 76 से 10 साल पहले 66 में बाबा ने मुरली में जो घोषणा करायी थी कि "**10 वर्ष में पुरानी दुनियाँ का विनाश अर्थात् ब्राह्मणों की पुरानी दुनियाँ का विनाश होता है**"(मु० 13.8.66, पृ०1)। किसके द्वारा? शंकर के द्वारा। जिसके द्वारा विनाश होता है, वो विनाश के निमित्त बनी हुई आत्मा कोई न कोई होनी चाहिए। तो वो है राम वाली सोल। जिसके लिए अव्यक्त वाणी में बाबा ने बोला हुआ था "**विनाश ज्वाला कब प्रज्वलित हुई? कौन निमित्त बनें?** तो जवाब दिया– **जैसे कि आदि में ज्ञान यज्ञ कुंड से स्थापना के साथ–2 विनाश ज्वाला भी प्रज्वलित हुई, ब्रह्मा बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बनें। तो जो विनाश ज्वाला प्रज्वलित करने के निमित्त बने हैं उनको ही भविष्य में विनाश ज्वाला सम्पन्न भी करनी है।**"(अ०वा० 3.2.74 पृ०173)। वो ही आत्माएं यज्ञ के आदि में निमित्त बनी थी। ब्रह्मा की सोल, ब्राह्मण बच्चों की आत्माएं और ब्रह्मा बाप अर्थात् प्रजापिता की सोल/राम वाली आत्मा जिसके लिये मुरली में बोला है "**यज्ञ में पास्ट में राम फेल हो गया**"। वही आत्मा ब्रह्मा के शरीर छोड़ने के बाद 69 में यज्ञ में आ जाती है। वो 76 तक अपना पुरुषार्थ परिपक्व स्टेज में पहुँचा देती है और 76 में प्रत्यक्ष हो जाती है। जैसे ब्राह्मणों की दुनियाँ में ब्रह्मा–सरस्वती प्रतिनिधित्व के रूप में थे वैसे ही ब्राह्मणों की नयी दुनियाँ अर्थात् एडवांस पार्टी की दुनियाँ में ब्राह्मण बच्चों के बीच वो राम–सीता वाली आत्माएं (शंकर–पार्वती के रूप में प्रत्यक्ष होने वाली आत्माएं) त्रेतायुगी शूटिंग के प्रतिनिधित्व के रूप में पार्ट बजाती हैं। इसलिए एडवांस बच्चों के दिल और दिमाग में वो बच्चे विशेष छाये हुए रहते हैं, जैसे ब्रह्मा–सरस्वती सन् 46 से 76 तक ब्राह्मण बच्चों के दिल और दिमाग पर छाये रहे।

तो त्रेतायुगी शूटिंग में राम–सीता वाली आत्माएं भी 30 साल तक निमित्त बनती हैं। 76 से लेकर 89 तक का 12 वर्ष का इनका कार्यकाल त्रेतायुगी शूटिंग कराने के लिए विशेष निमित्त नूँधा हुआ है। यहाँ भी हिसाब वही संदेश देने का है; क्योंकि त्रेता अंत की आबादी बाबा ने 5–10 करोड़ बतायी है। त्रेता के अंत तक 33 करोड़ आबादी नहीं होती है; अगर त्रेता अंत में 33 करोड़ आबादी हो जाये, 12 जन्मों में 2 करोड़ से बढ़कर 33 करोड़ हो जाये (16 गुनी बढ़ जाय) तो द्वापर के अंत में तो और ही कई ज्यादा गुनी बढ़ेगी ना। फिर इस तरह कलियुग के अंत में कितनी आबादी हो जाएगी? तो ऐसे नहीं कि त्रेता के अंत में ही 33 करोड़ देवात्माएं परमधाम से नीचे उतर आती हैं। 5–10 करोड़ का हिसाब तो बाबा ने बताया, एक्युरेट नहीं बताया। 5–10 करोड़ के बीच में ही होंगे। तो ये कोई बड़ी बात नहीं। तो 2 करोड़ ब्राह्मणों को सन् 76 तक संदेश मिलता है। जो संदेश देने वाले बन जाते हैं वो मल्टीप्लाई होते रहते हैं। संदेश का मल्टीफिकेशन होता रहता है। इसलिए अगले 12 वर्षों में 76 से लेकर 88–89 तक और 8 करोड़ मनुष्य आत्माओं को मेले, सम्मेलन, बड़े2 जो प्रोग्राम्स होते रहे उससे संदेश मिलता रहता है और इस तरह त्रेतायुगी शूटिंग पूरी हो जाती है।

अब प्रश्न ये उठता है वहाँ तो ब्रह्मा–सरस्वती वाली आत्माएं और ब्राह्मण आत्माएं संदेश देने के लिए निमित्त बनीं। यहाँ तो एडवांस पार्टी की आत्माएं बहुतों को दिखाई भी नहीं पड़तीं। वो तो जो कनेक्शन में आने वाले हैं, सम्पर्क में आने वाले हैं वही जानते हैं एडवांस पार्टी वाली आत्माएं मेले, सम्मेलन और जो आयोजन, प्रदर्शनियाँ वगैरह होती है उसमें कोई विशेष हिस्सा भी लेते नहीं देखे गए। वो कहाँ से निमित्त बन गए? आत्माओं का प्रतिनिधित्व करने वाली आत्मा (राम–सीता) दुनियाँ को संदेश दने के लिये कैसे निमित्त बन गए? त्रेता की जो आबादी उनके लिए आँकी गयी उसका हिसाब ये है कि सन् 76 में जब बाहरी दुनियाँ का विनाश नहीं हुआ तो ब्राह्मण बच्चों को बाबा की मुरलियों, बाबा के ज्ञान से निश्चय जैसे उखड़ जाता है। बी०के० ब्राह्मण परिवार के जो सरपरस्त हैं वो सेवा इसलिए नहीं करते कि उन्हें ईश्वरीय कार्य में कोई निश्चय नहीं है; बल्कि वो तो सेवा इसलिए करते हैं कि उन सरपरस्तों अथवा मुखियाओं की बुद्धि में अच्छी तरह बैठ जाता है कि कोई एक दूसरी नई पार्टी निकल

चुकी है जिसका मुकाबला हम ज्ञान और योग में नहीं कर सकते। इसलिए योग और सेवा के बड़े से बड़े प्रोग्राम आल इंडिया लेवल पर ही नहीं; लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय प्रोग्राम रख करके भी हम उन एडवांस पार्टी वाली आत्माओं का मुकाबला नहीं कर सकते। **एडवांस पार्टी** ही उनके शब्दों में '**शंकर पार्टी**' कही जाती है। हालांकि शिवबाबा के तो तीनों बच्चे बराबर हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तीनों जैसे भाई–2 हैं; लेकिन उन्होंने पार्टी बाजी बना दी। शंकर पार्टी के नाम पर उन्होंने भय से ग्रस्त होकर योग और सेवा के जितने भी अन्तर्राष्ट्रीय प्रोग्राम रखे उनसे उस पार्टी का कोई बाल बाँका नहीं हो सका। अप एण्ड डाउन (up and down) में आना बड़ी बात नहीं। ये यज्ञ तो आरम्भ से ही अप एन्ड डाउन में आता रहा। **नईया डोलेगी; लेकिन डूबेगी नहीं।** खास करके बाबा ने आज भी कहा था कि दुनियाँ वाले कहते हैं कि ओम् मण्डली गई की गई। ओम् मण्डली का मतलब क्या? **आ.उ.म** – 'आ' माने ब्रह्मा, 'उ' माना विष्णु, 'म' माना महेश। यानी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की मण्डली। जैसे संगीत मण्डली होती है ना– कोई हारमोनियम बजाता है, कोई तबला बजाता है, कोई सारंगी बजाता है। तो 2–4 इकट्ठे होकर मंडली बन जाती है। ऐसे ही ये विश्वनवनिर्माण कार्य में 3 आत्माओं की विशेष मंडली है और ये मंडली इतनी सशक्त है कि आदि में दुनियाँ वाले कहते थे कि ओम मंडली गई की गई। जो आदि में हुआ वही अंत में होता है। अंत में ब्राह्मणों की दुनियाँ के अंदर जो अनिश्चय बुद्धि विनश्यन्ति होने वाले ब्राह्मण हैं वो भी यही कहने लगते हैं कि ये मंडली गई की गई; क्योंकि ब्रह्मा की बातों पर तो उन्हें विश्वास रहता नहीं। वो सिर्फ दिखावे के लिये बाबा की ही मुरली पढ़ते हैं। ठीक वैसे ही जैसे झूठे ब्राह्मण सिर्फ पैसा कमाने के लिये गीतापाठ करते हैं, गीता के श्लोकों की गहराई में जाने की जरूरत नहीं समझते ऐसे ही मुरलियों के महावाक्यों की गहराई पकड़ने की कोई कोशिश नहीं करता। अगर कोई जाता भी है तो कहते हैं– 'अरे! गहराई में जाने की कोई जरूरत नहीं, डूब जाओगे।'

तात्पर्य है कि 10 करोड़ आत्माओं को 88–89 तक राम–सीता वाली आत्माएं ही संदेश देने के निमित्त बनती हैं और उनके साथ जो एडवांस पार्टी निमित्त बनती है। उससे भय ग्रस्त होकर ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ ईश्वरीय सेवा के बड़े2 प्रोग्राम रखते हैं, ताकि लोगों की बुद्धि का डायवर्शन एडवांस पार्टी के ऊपर न चला जाए। वरना तो जिनका निश्चय उखड़ चुका वो ईश्वरीय सेवा के प्रोग्राम क्यों करेंगे? उन्हें ये ही पता नहीं है कि स्वर्ग की स्थापना कब होनी है, पुरानी दुनियाँ का विनाश कब होगा। जिनके पास ब्राह्मण जीवन का कोई लक्ष्य ही नहीं है वो दूसरों को लक्षण कैसे दिखायेंगे? वो तो सिर्फ अपनी पेट पूजा के लिये धंधा चलाते हैं। उनसे दुनियाँ को संदेश भय ग्रस्त होकर मिलता है। वास्तव में उनकी अपनी इच्छा संदेश देने की नहीं है; लेकिन मजबूरी है; क्योंकि उस बाहरी दुनियाँ को तो पहले ही छोड़ चुके, अब इस दुनियाँ को छोड़ करके जायेंगे तो और ही लोग हँसी उड़ायेंगे, इसलिये बिचारे बंधन में हैं। तो संदेश देने के बंधन में होने और शंकर पार्टी द्वारा जैसे धक्के के कारण, वो पुष्करणी ब्राह्मण हुए। 'पुश्' माने धक्का, धक्का परेड करने वाले ब्राह्मण। उनको कोई विशेष आत्माओं का धक्का लग रहा है जिसके आधार पर वो धक्के से प्रभावित होकर दूसरी आत्माओं को, दुनियाँवी आत्माओं को संदेश दे रही हैं। अपनी मन की, दिल की स्वेच्छा से नहीं। तो संदेश देने का श्रेय किसको पहुँचा? राम–सीता वाली आत्माओं को (अर्थात् शंकर–पार्वती जैसी आत्माओं को), एडवांस पार्टी की विशेष मुख्य आत्माओं को उसका श्रेय मिलता है। इसके बाद कोई ये पूछे कि ये विशेष 12 वर्ष का ही टाइम त्रेतायुगी शूटिंग का क्यों नूँधा हुआ है? इसका हिसाब है कि त्रेतायुगी शूटिंग का जो विशेष टाइम मुकर्रर किया गया है उसका मूल कारण है कि बाबा ने बोला है "**पूरी राजधानी स्थापन होने में 50 से 60 वर्ष लगते हैं।**" (मु० 24.7.72, पृ०2)। "**तुम बच्चों को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40 से 50 वर्ष, 50–60 वर्ष भी लग जाते हैं।**" (मु० 11.9.73 पृ०4)। ये ज्ञान यज्ञ चलता ही है 50 वर्ष। फिर पढ़ाई के बाद होती है लड़ाई जो महाभारी महाभारत युद्ध का समय है और लड़ाई जब पूरी हो तब राजाई मिलती है। तो ये तीनों बातों का टाइम नूँधा हुआ है। पढ़ाई 50 वर्ष की कौन से सन् में पूरी होती है? सन् 47 से 98 तक का ये 50 वर्ष का पढ़ाई पीरियड पूरा हुआ। हर युग की शूटिंग एक2 वर्ष रूंग में भी दे दिया गया। इसलिए सन् 78 से 88–89 का ये त्रेतायुगी शूटिंग का पीरियड 12–13 साल

का है। भक्तिमार्ग में भी कभी 50 रुपये दान नहीं करेंगे, 50+1 रू० ही दान करेंगे। तो ये त्रेतायुगी शूटिंग के 12+1 = 13 वर्ष 1990 में पूरे हो जाते हैं।

'बी' साइड (कैसेट)

त्रेता के बाद सन् 91 से 98 तक द्वापरयुगी शूटिंग का पीरियड नूँधा हुआ है। द्वापरयुगी शूटिंग में मुखिया आत्माएं चित्र में दिखायी गयी हैं– इब्राहीम, बुध्द और क्राइस्ट, जिनको विशेष पार्ट बजाना है। तो ये इब्राहीम, बुध्द और क्राइस्ट हमारी ब्राह्मणों की दुनियाँ में कोई बीजरूप और आधारमूर्त आत्माएं हैं जो द्वापर की शूटिंग के अंत में विशेष रूप से प्रत्यक्ष होकर अपने–2 धर्म की स्थापना, संवर्धन और विनाश का विशेष पार्ट बजाती हैं और ये प्रत्यक्ष भी होती हैं। इब्राहीम, बुध्द, क्राइस्ट जो परमधाम से आने वाले हैं वो प्रत्यक्ष नहीं होंगे। पहले तो ब्राह्मणों की दुनियाँ के जो आधारमूर्त और बीजरूप आत्माएं हैं उनके प्रत्यक्ष होने की बात है; क्योंकि जब तक आधारमूर्त और बीजरूप आत्माओं के साथ धर्म पिताएं प्रत्यक्ष न हों तब तक उनके फालोअर्स प्रजा को संदेश नहीं मिल सकता। इस तरह 98 तक का पीरियड चैतन्य राजधानी स्थापन होने का समय है; क्योंकि बाबा ने बोला है **''पूरी राजधानी स्थापन होने में 60 साल का समय लग जाता है। 60 साल में तुम्हारी पूरी राजधानी स्थापन हो जावेगी।''** तो 60 साल का ये समय कब पूरा होता है? 98 में। पहले तो बीजरूप चैतन्य राजधानी स्थापन होना है माना जितना भी 16108 राजा–रानियों का परिवार है, रायल फैमिली है वो तो चैतन्य में नम्बरवार स्थिर हो ही जावेंगे बाद में और जब ये चैतन्य राजधानी स्थापन होने का कार्य पूरा हो जाता है तो स्थापना होगी और विनाश शुरू होगा। जब तक पूरी स्थापना नहीं हुई है तब तक विनाश नहीं हो सकता। रिहर्सल होती रहेगी वो बात दूसरी है। बच्चों के पुरुषार्थ को तीव्र करने के लिए बीच–2 में रिहर्सल होती रहेगी; लेकिन टोटल विनाश नहीं होगा। टोटल विनाश, लड़ाई, झगड़ा, मारामारी, खून–खराबा जो दुनियाँ में होगा, भारतवर्ष में खास होगा, वो तो तब होगा जब कलह–क्लेश वाले युग की माना कलियुग की शूटिंग पूरी होगी। भारतीय परम्परा में महाभारी महाभारत युद्ध और उससे होने वाली स्थापना द्वापरयुग में दिखायी गयी है; क्योंकि सन् 88–89 में जो सेकण्डरी ब्रह्मा है (दादा लेखराज) उनकी एज भी 100 साल पूरी हो जाती है। 'ब्रह्मा की आयु मृत्युलोक में खत्म हो जावेगी।' तो जब ब्रह्मा की 100 साल आयु पूरी होगी तो उसका नया दिव्य जन्म प्रत्यक्ष होना चाहिए। जो बाबा ने बोला है **''कृष्ण जब जन्म लेता है तो बिजली सी कौंध जाती है।''** बिजली कौंधना माना? एक बार्गी, एक सेकेण्ड के लिए तीव्र प्रकाश हो जाना और फिर अंधेरा हो जाना। ब्राह्मणों की दुनियाँ में एकाएक बिजली कौंध जाए फिर प्रकाश ही प्रकाश हो जाए, चकाचौंध हो जाए और फिर अंधेरा। तो बाबा ने ये बिन्दु अर्थात् बीजरूप बने कृष्ण के जन्म की सूचना बतायी। इसलिए 88–89 का जो पीरियड है वो द्वापरयुगी शूटिंग की शुरूआत का पीरियड है। इसलिए कृष्ण को शास्त्रों में द्वापरयुग में डाल दिया। कृष्ण द्वापरयुग में नहीं आया; लेकिन कृष्ण की आत्मा ने दिव्य जन्म लेने का जो विशेष पार्ट बजाया है वो द्वापर के आदि में बजाया। और जो महाभारी महाभारत युद्ध कराने का विशेष पार्ट बजाया है वो भी विशेष द्वापरयुगी शूटिंग के अंत अर्थात् कलहयुगी शूटिंग में बजाया। इसलिए शास्त्रों में कृष्ण को द्वापरयुग में ठोक दिया। उसी संगमयुगी कृष्ण की यादगार शास्त्रों में है। सतयुग में जन्म लेने वाले कृष्ण की यादगार शास्त्रों में नहीं है और न होगी। वहाँ कंस होता ही नहीं।

सन् 98–99 के बाद ब्राह्मणों की दुनियाँ में कलियुगी शूटिंग शुरू होती है। संकल्पों की लड़ाई, झगड़ा, मारामारी और उस समय में बड़ी तीव्र गति से दुनियाँ की आत्माओं को संदेश भी मिलेगा। परमात्मा भी तीव्र गति से प्रत्यक्ष होगा और जो दुनियाँवी धर्मपितायें (इब्राहीम, बुध्द, क्राइस्ट) हैं जो परमधाम से द्वापर–कलियुग में उतरते हैं, उनके आधार और बीज उनसे भी पहले प्रत्यक्ष होने लग पड़ेंगे और कलियुगी शूटिंग के अंत में चारों ओर दुनियाँ में ज्ञान ही ज्ञान की लहर फैल जायेगी। उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम चारों दिशाओं में जैसे काल मंडरायेगा; लेकिन ज्ञान का जोर–शोर भी बढ़ता चला जायेगा। और 2018 के बाद में सारी दुनियाँ को संदेश मिलने के बाद, सारी दुनियाँ की मनुष्य मात्र आत्माओं को परमात्मा गॉड फादर का रियलाजेशन होने के बाद आखरीन 5–7 रोज में एटम बमों के

धमाके होंगे और चतुर्थ विश्व युद्ध के साथ ही इस दुनियाँ का खात्मा हो जाएगा। 500–600 करोड़ मनुष्य आत्माएं और कीड़े–मकोड़े, पशु–पक्षियों की भी आत्माएं सब अपने–2 शरीर छोड़ करके परमधाम वासी बन जाएंगी। कुछ विशेष बीजरूप आत्माएं इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर रहेंगी जिन्होंने योगबल से अपनी श्वास–प्रश्वास क्रिया को सूक्ष्म कर लिया होगा, जिनके ऊपर अटामिक वातावरण का कोई असर नहीं पड़ेगा; क्योंकि उनकी श्वास–प्रश्वास क्रिया इतनी धीमी होगी कि उन्हें विशेष गहरी साँस लेने की दरकार ही नहीं पड़ेगी। उस समय अटामिक धमाकों से उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव पर जो बर्फ के पहाड़ जमे हुए हैं वो पिघल जावेंगे और उनके पिघलने से समुद्र का जलस्तर ऊपर चढ़ जावेगा। जिसका अंजाम ये होगा कि रूस, अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया जैसे महाद्वीप जिनका आज से 2500 वर्ष पहले मनुष्य के मस्तिष्क पटल पर नामनिशान भी नहीं था, जैसे अमेरिका, 500 वर्ष पहले मनुष्य जानता ही नहीं था कि अमेरिका खंड कहाँ है, है या नहीं? आज से 300 वर्ष पहले आस्ट्रेलिया का पता ही नहीं था। ऐसे ही जितने भी दूसरे धर्मखंड हैं जैसे अरब खंड, मुस्लिम खंड या क्रिश्चियन खंड ये भी आज से 2500 वर्ष पहले समुद्र के गर्त में समाये हुए थे, ये विनाशी धर्म खंड जो न थें और न अटामिक धमाकों के बाद इस दुनियाँ में रहेंगे, समुद्र के गर्त में समा जाएंगे। एक अविनाशी खंड भारत ही रहेगा और चारों तरफ दुनियाँ में समुद्र ही समुद्र होगा। अटामिक धमाकों से जो दुनियाँ का वातावरण गर्म होगा उससे बर्फ पिघल कर समुद्र का स्तर तो ऊपर चढ़ेगा ही; लेकिन वातावरण की गर्मी से वो समुद्र का पानी भाप बनकर ऊपर उड़ेगा। वो भाप फिर बादल बनकर बरसेंगे और कई दिनों तक मूसलाधार बरसात होगी, पानी रुकेगा ही नहीं। अटामिक धमाकों के कारण सबसे बड़ा विनाश भूकंप के द्वारा होगा। जब पृथ्वी हिलेगी तो सब मकान गिर जावेंगे और सब मनुष्य दबकर मर जावेंगे। अपने2 पापों की सजायें भोगते रहेंगे। किसी की टाँग दबेगी तो किसी की बाँह दबेगी। कोई निकालने वाला तो होगा नहीं। तड़पते–2 ही खलास हो जायेंगे।

सन् 2000 के बाद ये सूक्ष्म संकल्पों से लेकर स्थूल विनाश होने के बाद जो साढ़े चार लाख मनुष्य आत्माएं, नयी सृष्टि को जन्म देने वाली बीजरूप आत्माएं बचेंगी, जिनमें आधी शंकर जैसी आत्माएं और आधी पार्वती जैसी आत्माएं होंगी। आधी पाप आत्माओं की लिस्ट वाली (दुर्योधन, दुःशासन की वृत्ति वाली) और आधी पुण्य आत्माओं की लिस्ट वाली आत्माएं, जो ब्राह्मणों की दुनियाँ के हिसाब से कही गई हैं। बाकी वो कोई दुनियाँवी पुण्यात्मा, पापात्मा नहीं हैं जो बचेंगे। जैसे बाबा ने मुरली में बोला है **''जब विनाश होगा तो आधे पुण्यआत्माएं, आधे पापात्माएं बचेंगे''**। इसका मतलब जो पापात्माएं बचेंगे उनको फिर पुरुषार्थ करना है। (किसी ने कहा– पुण्य आत्माओं को पुरुषार्थ नहीं करना पड़ेगा?)। उनके संग के रंग से फिर वो पापात्माएं भी संग के रंग में आते रहेंगे। आत्माओं के संग में जब वो आयेंगे तो कुछ न कुछ संग का रंग तो लगेगा ही। तो एक होते हैं पाप आत्माएं और पुण्यात्माएं ओरिजिनल, और एक होते हैं संग के रंग से बने हुए, प्रभावित होने वाले। तो रानियाँ कैसी होती हैं? राजाओं से प्रभावित होने वाली। विनाश के बाद जो भी बचेंगे उनकी आत्माएं परमधाम से वापस आयेंगी और अपने शरीरों में प्रवेश करेंगी। कोई प्रश्न कर सकता है– उनके शरीर कैसे बच जायेंगे? उसका हिसाब है कि जब कई दिनों तक मूसलाधार बरसात होगी तो दुनियाँ का वातावरण ठंडा हो जावेगा। चारों तरफ दुनियाँ में बर्फ ही बर्फ जम जावेगी और उस बर्फ में जो बीजरूप आत्माएं याद की अवस्था में बहुत तीव्र हैं वो याद की स्टेज में अपना शरीर छोड़ देंगी। इसलिए उन योगियों के जो शरीर हैं वो नैचुरल (प्राकृतिक) जैसे साधन बनेंगे कि वो बर्फ में, कोल्ड स्टोरेज में दब जावेंगे। उनके शरीर सुरक्षित रहेंगे और वो तब तक सुरक्षित रहेंगे जब तक परमधाम से उनके नम्बर पर उनकी आत्माएं येन केन प्रकारेण उनके शरीर में प्रवेश न करें। इस तरह नयी सृष्टि की शुरूआत होगी। जो बीजरूप आत्माएं हैं वो फिर से **'अंत मते सो गते'** की आत्मिक स्टेज में अपनी तपस्या शुरू करेंगी। उस समय शिवबाबा की याद नहीं होगी, ज्ञान नहीं रहेगा, ज्ञान सब भूल जावेगा।

आज की दुनियाँ में भी कभी कोई ऐसा एक्सीडेंट हो जाता है कि जिसके मस्तिष्क में अगर कोई ऐसी चोट लग जाए तो वो पुरानी बातें सारी भूल जाता है। वैसे ही वो भी पास्ट की बातें भूल

जायेंगे। (किसी ने पूछा– मूसलाधार बरसात कितने दिन होगी?)। मूसलधार बरसात तो थोड़े दिन होगी। अरे! 4 घंटे पानी लगातार बरस जाता है तो लोग त्राहि–2 करने लग जाते हैं। वो तो सप्ताह दो सप्ताह की बात है; लेकिन जो वातावरण ठंडा हो जाएगा उसमें जो बर्फ जमेगी वो लम्बे समय तक जमी रहेगी। दुनियाँ के बहुत से इलाकों में तो वर्षों तक जमी रहेगी और उस बर्फ में उनके शरीर सुरक्षित रहेंगे। बहुतों के शरीर तब तक ऐसे रहेंगे जब तक राधा–कृष्ण जैसे बच्चों का जन्म होना शुरू नहीं होगा। आत्माएं तो ऊपर से नीचे उतरती रहेंगी। पहले तो बीजरूप आत्माओं के शरीरों में आत्माओं का प्रवेश होगा। जो शरीर नीचे बर्फ में दबे पड़े हुए होंगे उनमें उन सोल्स का प्रवेश होगा। प्राकृतिक रूप से उस स्थान की बर्फ टाइम आने पर हटेगी और वो आत्माएं विचरण करने लगेंगी। धीरे–2 सब इकट्ठे हो जाएंगे; क्योंकि ये बीजरूप आत्माएं तो सारे विश्व के सब धर्मों के बीज हैं। कयामत के समय में यहाँ विनाश के पीरियड में इनको सारी दुनियाँ में फैल जाना पड़ेगा। जो जिस धर्म खंड का या जो जिस धर्म की बीजरूप आत्मा होगी उसको उसी धर्म खंड में जाना पड़ेगा। मान लो कोई एकदम लेफ्टिस्ट धर्म का है, तो जरूर वो विपरीत बुद्धि बनने वाली बीजरूप आत्मा भी होगी। बाप से विपरीत बुद्धि भी जरूर बनेगी; क्योंकि वो बीजरूप आत्मा है। बीज में वो क्वालिटी होगी जो दूसरे धर्मों की क्वालिटी होती है। देह अभिमान का छिलका जरूर चढ़ा हुआ होगा। तो वो आत्माएं जो विपरीत बुद्धि बनती हैं तो उनके लिए कहते हैं "**सद्गुरु निंदक ठौर न पावे**"। ऐसी सद्गुरु की निंदा कराने वाले वो बीजरूप बाप के बच्चे ईश्वरीय सेवा करने के लिए कयामत के समय में दूर देशों में फेंके जाएंगे। जहाँ विनाश का तांडव नृत्य हो रहा होगा और वहाँ रहकर भी अपनी श्रद्धा, भावना और परमात्मा के विश्वास के आधार पर वो आत्माएं विदेशों में, विदेशी धर्म खंडों में सेवा करते हुए, संदेश देते हुए भी परमात्मा बाप की याद में रहेंगी और एहसास करेंगी, पश्चाताप करेंगी कि हमने पहचान कर, नजदीक रहकर भी हम बाप की ग्लानी के निमित्त बन गए।

इस तरह पश्चाताप की अग्नि में बार2 जल कर वो अपने सारे पापों को स्वाहा कर देंगी; लेकिन सारे विश्व में बिखरी हुई आत्माओं को इकट्ठा होने में टाइम तो बाद में जरूर लगेगा। वो 18 वर्ष का पीरियड सन् 2018 के बाद से लेकर 2036 तक है। जैसे 18 वर्ष का पीरियड यहाँ भी महत्वपूर्ण है (सन् 51 से लेकर 68 तक– ये 18 वर्ष का पीरियड हुआ ना)। 69 में बाबा ने शरीर छोड़ा था, अव्यक्त हुए थे। तो ये व्यक्त–अव्यक्त पार्ट कितने साल चला? 18 साल चला। तो 18 वर्ष जैसे यहाँ कार्यकाल चला वैसे 18 वर्ष वहाँ भी नूँधे हुए हैं। ये 18 वर्ष आटोमेटिक भट्ठी चलेगी। आटोमेटिक का मतलब कोई खास प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा; क्योंकि वहाँ ज्ञान का सब्जेक्ट समाप्त हुआ पड़ा होगा। सिर्फ योग का सब्जेक्ट रह जाएगा। (किसी ने कहा–शिवबाबा का परिचय नहीं होगा?) ज्ञान का सब्जेक्ट खत्म। ज्ञान क्या है? परमात्मा का परिचय, आत्मा का परिचय, रचयिता और रचना का परिचय वो ही ज्ञान है। तो वो समाप्त। योग माना आत्मिक स्टेज। अंत मते सो गति की स्टेज और उस समय सेवा करने की दरकार ही नहीं; क्योंकि विरोधी आत्माएं दुनियाँ में होंगी ही नहीं जिनकी सेवा करें और धारणा करने का भी कोई विशेष पुरुषार्थ नहीं करना पड़ेगा। धारणा करने का पुरुषार्थ हमको तब तक करना पड़ रहा है जब तक दुनियाँवी विरोधी आत्माओं के संसर्ग–संपर्क और संग में हमको आना पड़ रहा है। हम बाप के ही संग में लगातार बने रहें तो दुनियाँवी लोगों का संग का रंग कैसे लगेगा? लेकिन जब तक विनाश नहीं होगा तब तक दुनियाँ में 500 करोड़ मनुष्य आत्माओं का जो हुजूम है, उनका वातावरण है, वायुमण्डल है उसमें हमको संसर्ग–संपर्क में जाना पड़ेगा। तो वो वायुमण्डल वहाँ नहीं होगा। इसलिए धारणा करने की भी जरूरत नहीं, आटोमेटिक धारणा भी होगी। तो 18 वर्ष की योग भट्ठी में सबसे पहले जो युगल अपना शरीर रूपी काया को यानी पाँच तत्वों को कंचन बनाने में सफल होगा, वो हैं शंकर–पार्वती। वो ही राधा–कृष्ण जैसे बच्चों को उस समय जन्म देने के लिए निमित्त बनेंगे। तो 18 वर्ष वो आर 18 दुनी 36 , फिर वही 2036 आ जाता है। इस तरह एक्युरेट सतयुग की शुरुआत हो जावेगी। तब से पहले जनरेशन की साढ़े चार लाख बच्चों को जन्म देना शुरू होगा। किनसे? उन्हीं नं.वार 4.5 लाख बीजरूप आत्माओं से जिन्होंने योगबल से अपनी काया को नं.वार

कंचन बना दिया होगा। इस तरह 9 लाख आबादी से सतयुग की शुरूआत हो जाती है। तो ये सृष्टि–चक्र के जो चार युग हैं उनकी शूटिंग और उसके बाद का हिसाब–किताब है।

इस एडवांस ज्ञान में इस सृष्टि–चक्र के चित्र का दूसरा प्रकरण है कि **'हर युग अपने शूटिंग काल में 4 अवस्थाओं से गुजरता है।'** 4 अवस्थाओं से गुजरना माना सतोप्रधान, सतोसामान्य, रजोप्रधान और तमोप्रधान माने एक कल्प की आवृत्ति एक युग की शूटिंग में नूँधी हुई है। जैसे मिसाल के तौर पर सतयुग को लेते हैं। तो कराची में जो पीरियड था वो एकदम शुद्ध, सतोप्रधान पहले जन्म का सैम्पल था। सतोप्रधान शूटिंग वहाँ हुई; क्योंकि एक साकार बाप का संग था। दुनियाँ वाले किसी तमोप्रधान मनुष्य का चेहरा भी देखने को नहीं मिलता था तो दिल किससे लगावेंगे? मुरली में बाबा ने पूछा **''जब किसी को देखते ही नहीं थे तो दिल किससे लगावेंगे? एक बाप से।''** तो अवस्था कैसी बनेगी, व्यभिचारी या अव्यभिचारी? सतो प्रधान बनेगी ना। तो वहाँ उस शूटिंग पीरियड में सतोप्रधान अव्यभिचारी स्टेज रहती है। उसके बाद सतोसामान्य स्टेज भी होती है और वो सतोसामान्य स्टेज पहले तब शुरू होती है जब सेवा के फील्ड पर बच्चों को माउन्ट आबू में उतारा जाता है। तो सेवा के फील्ड पर बच्चे उतरे तो जरूर ऊपर–नीचे होंगे। उस समय बाबा ने तो बच्चों को अपनी अवस्था को जमाये रखने के लिए डाइरैक्शन दे दिया था। किसी को मालूम है क्या डाइरैक्शन दिया था? उस समय बाबा ने बच्चों को डाइरेक्शन दिया था **''गो सून, कम सून''**। ईश्वरीय सेवा के लिए जल्दी–2 जाओ और जल्दी–2 वापस आओ। तो जिन बच्चों ने उस डाइरैक्शन पर अमल किया वो बच्चे जैसे ही अवस्था थोड़ी खराब होती थी, बाबा के पास दौड़कर आ जाते थे। उनकी अवस्था बाबा के संग के रंग में आने से बीच–2 में कवर होती रही और जो बच्चे अनिश्चय बुद्धि हो गए वो पुरानी दुनियाँ में भ्रमित होकर रह गए, उनकी अवस्था दिन–प्रतिदिन डाउन होती चली गयी। सतोसामान्य स्टेज उन बच्चों की बनी जो बच्चे बाबा के पास बीच2 में आते रहें; क्योंकि लगातार का संग तो नहीं रहा ना। तो ये स्टेज तब तक रही जब तक मम्मा–बाबा जीवित रहे। मम्मा थी यज्ञ की कंट्रोलर, शासनकर्ता। **'यथा राजा तथा प्रजा'**। ब्रह्मा बाबा में तो परमात्मा शिव की सोल, गॉड फादर की सोल थी ही। तो **'जैसा संग वैसा रंग'**। जिन बच्चों ने साकार में संग लिया उस समय तक सतोसामान्य स्टेज रही, त्रेतायुगी शूटिंग हुई।

उसके बाद मम्मा–बाबा ने जब शरीर छोड़ दिया तो साकार संग समाप्त हो गया और परमात्मा का जब साकार संग समाप्त हुआ तो अधूरे ब्राह्मणों का और तमोप्रधान दुनियाँ वालों का संग रह गया। तो द्वापरयुगी रजोप्रधान अवस्था बन गई। इस तरह सन् 69 से रजोप्रधान द्वापरयुग की शूटिंग शुरू हो गयी। द्वापर जब शुरू होता है तो विदेशों में तेजी से जनसंख्या बढ़ती है। यज्ञ में भी ऐसे ही हुआ। लंदन का पहला सेवाकेन्द्र 69 में खुला है जो सब विदेशों का हेड आफिस बन गया। (किसी ने कहा– कब?)। बाबा के शरीर छोड़ने के बाद; क्योंकि द्वापरयुगी रजोप्रधान स्टेज से ही बाहरी दुनियाँ की आबादी भी तीव्र गति से बढ़ती है, दूसरे–2 धर्म की आत्माएं सत्ता में आने लग पड़ती हैं। ब्राह्मणों के यज्ञ में भी ऐसे ही हुआ। ये क्रम सन् 73 तक चलता रहा और 73 के बाद पतन का एक बड़ा मानवीय उपक्रम फिर से शुरू हो गया, पतन का घर बन गया। बाबा ने कहा है **''मेलों में मैला इकट्ठा होता है। सच्चा मेला है आत्मा और परमात्मा का प्रैक्टिकल मेला।''**(मु० 4.5.00 पृ०2)। 73 में परमात्मा तो प्रैक्टिकल में था नहीं। तो सन् 73–74 से आत्माओं के जो मेले हुए उनमें ढेर की ढेर तमोप्रधान मनुष्य आत्माओं ने प्रवेश करना और ब्रह्माकुमार–कुमारियों के संसर्ग–सम्पर्क में आना शुरू कर दिया। जब लाखों की तादाद में करप्टेड दृष्टि–वृत्ति वाले व्यक्ति ब्रह्माकुमार–कुमारियों के संसर्ग–सम्पर्क और दृष्टि के बीच आने लगे तो अवस्था कैसी बनेगी? कहाँ तक कवर करेंगे? तमो प्रधान स्टेज बन गयी। इसलिए बाबा कहते हैं **''जैसा संग वैसा रंग, संग दोष और अन्न दोष– ये बहुत बड़े दोष हैं''**। तो 73 से लेकर 76 तक ब्राह्मणों की दुनियाँ में तमोप्रधान कलियुग की स्थापना हो गयी। इस प्रकार सतयुगी दैवी शूटिंग के अंदर ही ये 4 अवस्थायें प्रसार हो गईं, जैसे कि एक कल्प की आवृत्ति हो गई। 5000 वर्ष में जिस तरह ड्रामा हूबहू रिपीट होता है वैसे ही हूबहू रिपीटेशन इन 40 वर्षों में होता है।

40 वर्ष पहले जो2 कार्य कलाप यज्ञ के अंदर हुए थे वही क्रियाकलाप 40 वर्षों के बाद फिर 76 से लेकर 89 तक भी चलते रहते हैं। यानी त्रेतायुगी शूटिंग भी 4 अवस्थाओं से प्रसार होती है। दिल्ली से एडवांस पार्टी की शुरूआत होती है; क्योंकि एडवान्स पार्टी की बीजरूप आत्माओं का विशेष कार्य है राजधानी की स्थापना करना। ब्रह्मा और ब्राह्मणों के द्वारा ब्राह्मण धर्म की स्थापना और एडवांस पार्टी की बीजरूप (राजा बनने वाली) आत्माओं के द्वारा, राजधानी (स्वर्गीय संगठन) के संगठन की स्थापना की शुरूआत सन् 76 से हो जाती है। भल थोड़ी आत्माओं के द्वारा ये संगठन शुरू हुआ। जैसा बाबा ने बोला "**1 और 2 मिल करके 12 हो जावेंगे। एक भी पावरफुल ग्रुप, 12 का ग्रुप 12 X 9 = 108। एक भी पावरफुल संगठन तैयार होने पर एक–दूसरे ग्रुप को खींचते हुए अन्त में 108 की माला का संगठन प्रत्यक्ष हो जावेगा।**" (अ.वा.ता. 9.12.75 पृ.272 म.)। तो पहले तो चतुर्युगी शूटिंग के बाद प्रजापिता ब्रह्मा जैसी श्रेष्ठ आत्माओं का एक 12 का ग्रुप तैयार होगा ना। त्रेतायुगी शूटिंग में एडवांस पार्टी की बीजरूप आत्माओं में भी ये चार अवस्थाएं होती हैं। सतोप्रधान स्टेज होती है 77–78 से 80 तक। सन् 80–81 से लेकर 83 तक सतोसामान्य स्टेज बनती है और दिल्ली में एडवांस पार्टी का जो गढ़ तैयार होता है वो सारा गढ़ सन् 83 तक की रजोप्रधान स्टेज शुरू होने के कारण ध्वस्त हो जाता है; क्योंकि परमात्मा बाप ब्राह्मणों की एडवांस पार्टी की बीजरूप आत्माओं की दृष्टि से ओझल हो जाता है। इस तरह **ब्रह्मा की रात्रि** की शुरूआत हो जाती है। 83 से लेकर 88–89 तक का ये पीरियड द्वापरयुगी रजोप्रधानता और कलियुगी तमोप्रधानता का नूँधा हुआ है। इस तरह त्रेतायुगी शूटिंग में भी चार अवस्थायें हो गईं। ऐसे ही द्वापरयुगी शूटिंग में भी 4 अवस्थायें हो गईं – सतोप्रधान, सतोसामान्य, रजो और तमो। सन् 98 तक वैश्य वर्ण की आत्माओं की तमोप्रधान अवस्था भी पूरी हो जाती है। इसके बाद शूद्र वर्ण की आत्माओं की भी 4 अवस्थायें हैं जो सन् 2000 से 2003/04 तक चलती है। उसके बाद प्रैक्टिकल शूटिंग शुरू होती है।

इस प्रकार ये 4 युगों की प्रैक्टिकल शूटिंग समाप्त होने पर सविशेष ब्राह्मणों की बुद्धि का परिवर्तन हो जायेगा। मन–बुद्धि रूपी आत्मा का परिवर्तन होने के बाद फिर शरीरों का परिवर्तन अर्थात् पाँच तत्वों से बने शरीर का परिवर्तन शुरू होगा। उसकी भी 4 आवृत्तियाँ होंगी। जैसे सर्प का मिसाल दिया था कि "**सर्प 3–4 बार शरीर त्याग करता है फिर मर जाता है।**"(मु० 16.3.90, पृ०1)। सृष्टि–चक्र के चित्र में एडवांस नालेज का तीसरा प्वाइन्ट जो अभी थोड़ा इशारा दिया वो ये है कि **ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात**। जिन्हें साकार ईश्वरीय पार्ट पर जब तक निश्चय है तब तक उनके लिए ब्रह्मा का दिन है और जब निश्चय टूटता है तो ब्रह्मा की रात की शूटिंग कही जाएगी। ओम शान्ति।

लक्ष्मी–नारायण एडवांस – 1 घंटा

लक्ष्मी–नारायण के चित्र में साधारणतया ये समझानी दी जाती थी कि राधा–कृष्ण बड़े होकर ल०ना० बनेंगे। जबकि इस चित्र में जो चित्रण है उसका अर्थ ये नहीं निकलता है कि राधा–कृष्ण बड़े होकर ये ल०ना० बनेंगे। बल्कि इस चित्र का सही अर्थ ये निकलता है कि जो बीच में छपे हुए ल०ना० हैं और रा०कृ० का जो चित्र नीचे दिया हुआ है इनका **रचयिता और रचना** का सम्बन्ध है। ल०ना० रचयिता ऊपर बीच में खड़े हुए दिखाये गए हैं। रचयिता माना माँ–बाप और रा०कृ० बच्चे, इनकी रचना जो सतयुग में जन्म लेंगे, वो नीचे दिखाए गए। बाबा मुरली में अक्सर प्रश्न भी पूछते हैं, "**ल०ना० का रा०कृ० से क्या सम्बन्ध है?**"(मु० 16.5.86 पृ०1)। तो जब बाबा मुरली में कहीं–2 सम्बन्ध पूछते हैं तो इससे साबित होता है कि ये रा०कृ० और ल०ना० दी सेम सोल्स तो नहीं हैं। सम्बंध है तो जरूर वो आत्माएं कोई सम्बंध में जुड़ी हुई हैं। माँ–बाप का और बच्चे का सम्बन्ध है।

इस चित्र में तो ये बात बिल्कुल क्लीयर है। सबसे ऊपर भी हेडिंग दिया हुआ है **'स्वर्ग के रचयिता और उनकी दैवी रचना'।** यहाँ ध्यान से देखेंगे तो पता चलेगा कि 'के रचयिता'– ये बहुवचन में है। 'स्वर्ग का रचयिता' नहीं लिखा है। अगर स्वर्ग का रचयिता लिखा होता तो रचयिता एक हो सकता था; लेकिन यहाँ लिखा है 'स्वर्ग के रचयिता'। क्योंकि सृष्टि परिक्रिया के लिए रचना रचने वाले दो चाहिए। बच्चों की रचना दो के बगैर नहीं हो सकती। इसलिए यहाँ लिखा हुआ है स्वर्ग के रचयिता। ऐसे नहीं कि शिव ज्योतिर्बिंदु से कोई रचना पैदा हो जाएगी। शिव ज्योतिर्बिंदु तो निराकार आत्मा का नाम है शिव। वो तो एक है; लेकिन निराकार से तो निराकारी वर्सा मिलेगा। निराकार की रचना भी होने का सवाल नहीं है; क्योंकि निराकार आत्मा तो अनादि–अविनाशी है। तो उसको रचे जाने का सवाल नहीं है। रची वो चीज जाती है जो पहले न हो। तो रचयिता भी साकार चाहिए, रचना भी साकार चाहिए। क्रियेटर और क्रियेशन दोनों साकार में होने चाहिए। इसलिए यहाँ लिखा हुआ है 'स्वर्ग के रचयिता' अर्थात् ल०ना० और आगे लिखा है– 'और उनकी दैवी रचना,' जो स्वर्ग के रचने वाले ल०ना० बहुवचन में बताए गए– 'उनकी दैवी रचना।' दैवी रचना माना देवताई रचना। उनके जो बच्चे पैदा होंगे वो देवता होंगे। अगर शिव की दैवी रचना कहें तो शिव तो भगवान है। भगवान से तो भगवान–भगवती की पैदाइश होगी या देवताओं की पैदाइश होगी? देवताओं से देवताओं की पैदाइश होती है और भगवान से भगवान–भगवती बनेंगे। भगवान–भगवती का टाइटिल **संगमयुगी ल०ना०** का है जिन्हें नारी से लक्ष्मी और नर से नारायण अर्थात् नर–नारायण कहा जाता है। सतयुग में जो देवता के रूप में बच्चे पैदा होंगे वो भगवान–भगवती नहीं कहे जाएंगे; क्योंकि भगवान–भगवती वो तो टाइटिल है सब धर्मवालों के लिए। वो तो सारे विश्व के माता–पिता हैं। कोई उनको मात–पिता माने या न माने। तो 'स्वर्ग के रचयिता और उनकी दैवी रचना' जो हेडिंग है वो ही इस बात को साबित करता है कि रचयिता पहले होना चाहिए और रचना बाद में होनी चाहिए। ये सारा ही चित्र रचयिता के बाद रचना के क्रम से बना हुआ है। ये जो बीच में ल०ना० का चित्र है ये संगमयुगी ल०ना० का चित्र है। जब संगमयुग पूरा होना होगा तो पूरा होने पर ही राधा–कृष्ण का भी बच्चों के रूप में जन्म होगा, वो उनकी रचना हैं।

त्रिमूर्ति के चित्र के नीचे जो हेडिंग दिया हुआ है उसमें लिखा है कि **'सतयुगी दैवी स्वराज्य आपका ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है'**। ल०ना० के ताज के ऊपर ऐसा लिखा हुआ है। इस वाक्य से भी ये क्लीयर हो जाता है कि सतयुगी दैवी स्वराज्य जो जन्मसिद्ध अधिकार बताया है वो जन्मसिद्ध अधिकार किसका है? ब्राह्मणों का ना, और ब्राह्मण किसकी संतान हैं? ब्रह्मा की संतान। कब होते हैं? संगमयुग में जो ब्राह्मण हैं वो ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार लेते हैं। ईश्वर से जो जन्म मिला है उससे सिद्ध होने वाला अधिकार। जैसे लखपति–करोड़पति का बच्चा पैदा होता है तो करोड़पति बाप का जन्मसिद्ध अधिकार बच्चा ही लेता है; क्योंकि उसके जन्म लेने से ही सिद्ध है कि करोड़ों के ऊपर उसका अधिकार है। तो ऐसे ही ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार का मतलब है कि ईश्वर से जिन्होंने जन्म लिया उनका जन्म लेने से ही वो सतयुगी वर्से का अधिकार सिद्ध हो जाता है। तो वो अधिकार इसी जन्म में मिलना चाहिए या अगले जन्म में मिलना चाहिए? इसी जन्म में मिलना चाहिए ना; क्योंकि ब्राह्मण जन्म जब यहाँ है तो जन्मसिद्ध अधिकार भी यहीं होना चाहिए, कि अगले जन्म में मिलेगा? तो ये वाक्य भी इस बात को साबित करता है कि कोई ऐसे ब्राह्मण बच्चे भी हैं जो परमात्मा बाप से सतयुगी दैवी स्वराज्य का वर्सा, सतयुगी दैवी स्वराज्य की राजधानी का वर्सा इसी जन्म में, इसी शरीर से प्राप्त करते हैं।

अगला प्वाइन्ट इस चित्र में है कि ल०ना० के चारों तरफ जो प्रकाश का वलय दिखाया है, ये प्रकाश का वलय कोई देवताओं की पवित्रता का वलय नहीं दिखाया है। पवित्रता का जो वलय दिखाया जाता है वो तो सर के आसपास दिखाया जाता है। सारे शरीर के आसपास नहीं दिखाया जाता। यहाँ तो ल०ना० को एकदम प्रकाश की दुनियाँ के अंदर दिखाया गया है और रा०कृ० को नीचे

की ओर फूल–पत्तियों वाली दुनियाँ में दिखाया गया है। चित्रकार ने इस बात को चित्रित कराया है। साक्षात्कार के द्वारा बाबा ने चित्र में ये चित्रण दे दिया कि रा०कृ० हैं सतयुग की प्राकृतिक सौंदर्य वाली दुनियाँ में और ल०ना० ज्ञान का प्रकाश जिस दुनियाँ में है उस संगमयुगी दुनियाँ में हैं। इनको ज्ञान के प्रकाश के वलय से चारों तरफ घेरा दिखाया गया है। इनको स्वर्गीय दुनियाँ के बीच में नहीं दिखाया गया है। इससे भी साबित हो जाता है कि ये ल०ना० संगमयुगी दुनियाँ से कनेक्टेड हैं। सतयुगी दुनियाँ से उतने कनेक्टेड नहीं हैं। इन्होंने अपने पुरुषार्थ के बल से, ज्ञान के बल से राजाई प्राप्त की। ये विश्व के महाराजन बनते हैं। इसलिए सर से लेकर पैरों तक का जो इनका चारो तरफ प्रकाश का वलय है वो ये साबित करता है कि ये संगमयुगी प्रकाश की दुनियाँ के बीच में रहने वाली आत्माएं हैं। जबकि इनके बच्चे रा०कृ० सतयुगी प्राकृतिक सौंदर्य के बीच में रहने वाली आत्माएं हैं।

चित्र से एक और प्वाइंट निकलता है। कोई ये कहे कि चित्र में इन ल०ना० को इतना ताम–झाम क्यों दिखाया है? संगमयुग में ऐसे ताम–झाम पहनकर बैठेंगे क्या? संगमयुग में ये ताम–झाम पहनकर बैठने की बात नहीं है। चित्रकार अंदरूनी सूक्ष्म बात को स्थूल बात से ही चित्रण करेगा। जैसे शंकर को नंगा दिखाया जाता है तो चित्रकार ये अर्थ बताना चाहता है कि इनकी निराकारी स्टेज है। ब्रह्मा को कपड़े पहनाए गए हैं तो इससे ये बताया गया है कि इनकी साकारी स्टेज है, शरीर रूपी वस्त्र का भान है। ऐसे ही ल०ना० के चित्र में ये जो लक्ष्मी और नारायण को अनेक प्रकार के अलंकार दिखाए गए हैं, वस्त्राभूषण दिखाए गए हैं वो वास्तव में दिव्य गुणों का श्रृंगार दिखाया गया है। ये अंदरूनी चीज है जो चित्र में कैसे चित्रित की जाए। इसलिए इन दिव्य गुणों के स्थूल श्रृंगार से सूक्ष्म श्रृंगार की बात प्रत्यक्ष की गई है। बाकी संगमयुग में ऐसा श्रृंगारा हुआ स्थूल रूप नहीं होता। ये तो दिव्य गुणों का श्रृंगार है, दिव्य शक्तियों का श्रृंगार है। जो ताज दिखाया गया है वो स्वर्ग की स्थापना की जिम्मेवारी का ताज है जो औरों ने धारण नहीं किया; लेकिन इन्होंने 100 प्रतिशत उस जिम्मेवारी के ताज को धारण कर लिया। तो इससे भी ये जाहिर होता है कि संगमयुगी ल०ना० संगमयुग के हैं जो रा०कृ० को जन्म देने के निमित्त बनते हैं। डायरैक्ट परमपिता परमात्मा से दिव्य गुणों का श्रृंगार लेते हैं, शक्तियाँ धारण करते हैं और स्वर्ग की स्थापना की जिम्मेवारी का ताज धारण करते हैं। बाकी इनके जो बच्चे रा०कृ० पैदा होंगे वो कोई स्वर्ग की स्थापना की जिम्मेवारी धारण करने वाले नहीं होंगे। उनकी बुद्धि में तो ज्ञान ही नहीं होगा। बाबा ने तो मुरलियों में ल०ना० के बारे में दो तरह से बोला है। एक जगह बोला है–"**ये ल०ना० तो बुद्धू हैं, इनको कोई ज्ञान नहीं।**"(मु० 3.7.04 पृ०3)। दूसरी तरफ मुरली में बोला है कि "**ये ल०ना० समझदार हैं तब तो विश्व के मालिक बनते हैं।**"(मु० 20.7.04 पृ०3)। तो मुरलियों में ये जो विरोधी परस्पर बातें आ जाती हैं उससे कहीं–2 अल्पज्ञ ब्राह्मणों को मुंझान पैदा हो जाती है कि बाबा ने तो मुरलियों में कहीं कुछ कहीं कुछ बोल दिया है; लेकिन ऐसा नहीं है। बाबा तो जो भी बात बोलते हैं एक अर्थ वाली ही बोलते हैं। दो अर्थ वाली बात बाबा क्यों बोलेंगे? '**गॉड इज ट्रुथ**' कहा जाता है और सच्चाई तो एक ही होती है। बाबा की सच्चाई की बात का सही अर्थ न लगा पाने के कारण ऐसा भ्रम पैदा हो जाता है। जहाँ बोला है 'ल०ना० बुद्धू हैं' वो सतयुगी ल०ना० (रा०कृ०) के लिए बोला है। जहाँ बोला है वो 'ल०ना० समझदार हैं' (विश्व के मालिक समझदार ही बन सकते हैं), वो बोल बोला है संगमयुगी ल०ना० के लिए; क्योंकि संगमयुग में वह पुरुषार्थ करके विश्व की बादशाही का वर्सा परमात्मा बाप से डायरैक्ट लेते हैं। डायरैक्ट ईश्वर से जो वर्सा प्राप्त करने वाली आत्माएं हैं वो वास्तव में संगमयुग में ही हो सकती हैं, सतयुग में नहीं होतीं। मुरली के महावाक्य के आधार पर भी ये बात क्लीयर हो जाती है कि संगमयुगी ल०ना० अलग हैं और सतयुगी रा०कृ० जो बड़े होकर अपने माँ–बाप का ल०ना० टाइटिल धारण करते हैं, वो अलग हैं। संगमयुगी ल०ना० रचयिता हैं और जो रा०कृ० बड़े होकर सतयुगी ल०ना० बनते हैं, वो उनकी रचना हैं। तो माँ–बाप और बच्चों के रूप में भाई–बहन ये दो ही सतयुगी सम्बन्ध हैं। इसका फाउन्डेशन संगमयुग में पड़ता है। माँ–बाप तो वही बन सकते हैं जो इसी शरीर से पुरुषार्थ करके अपने जीवन में सम्पूर्ण उपलब्धि करें।

इस चित्र में ल०ना० के पाँवों के नीचे जो छोटी–2 लिखत लिखी हुई है **'संवत् 1 से लेकर 2500 वर्ष'।** ये 2500 वर्ष की लिखत ही इस बात को साबित कर देती है कि यहाँ बीच में जो संगमयुगी ल०ना० का चित्रण है, उनके राज्य का काल दिखाया गया है कि इनका पीढ़ी पर पीढ़ी राज्य काल है 2500 वर्ष का। तो सतयुग में जो रा०कृ० पैदा होंगे, ल०ना० बनेंगे उनका कार्यकाल कोई 2500 वर्ष थोड़े ही है। वो तो सिर्फ उनकी 8 पीढ़ियों में कुल मिलाकर 1250 वर्ष राज्य चलेगा; लेकिन यहाँ तो लिखा हुआ है 2500 वर्ष। इससे भी ये बात साबित हो जाती है कि ये वो ही राम–सीता वाली आत्माएं हैं जो संगमयुग में पूरा पुरुषार्थ करके रामराज्य स्थापन करती हैं और ल०ना० की डिनायस्टी शुरू करने के निमित्त बनती हैं और यही आत्माएं त्रेता में जाकर फर्स्ट जन्म में राम–सीता के रूप में जन्म लेंगी और वहाँ 12 पीढ़ियों तक इनकी (राम–सीता की) राजाई चलेगी। तो 1250 वर्ष त्रेतायुग की राजाई और 1250 वर्ष की ल०ना० के नाम से सतयुग की राजाई, ये दोनों मिलाकर दोनों प्रकार की राजाइयों को स्थापन करने वाली आत्माएं ये संगमयुग में संगमयुगी ल०ना० हैं। इसलिए इनके पैरों के नीचे लिखा हुआ है– 'संवत् 1 से लेकर 2500 वर्ष।' इस लिखत से भी ये क्लीयर हो जाता है कि ये राम–सीता वाली आत्माएं यहाँ संगमयुगी ल०ना० के रूप में प्रकाश के वलय में खड़ी हुई दिखाई गई हैं। ये सतयुगी ल०ना० बनने वाली आत्माएं नहीं हैं। हाँ, इनका टाइटिल सतयुग में 8 पीढ़ियों तक चलता रहेगा। यही कारण है कि इनके पैरों के नीचे जो मोटी–2 लिखत लिखी हुई है **'सतयुगी विश्व महाराजन श्री नारायण तथा विश्वमहारानी श्री लक्ष्मी'**। यह लिखत भी इस बात को साबित करती है कि चित्र में संगमयुगी प्रकाश के वलय में बीच में खड़े हुए जो ल०ना० हैं ये विश्वमहाराजन हैं, ये सतयुगी महाराजन नहीं हैं। विश्वमहाराजन और सतयुगी महाराजन में अंतर है। विश्व धर्म जहाँ होते हैं वहाँ विश्वमहाराजन होंगे। सारा विश्व माना सारा जगत। माना 500 करोड़ की मनुष्य आत्माएं उनके प्रति नतमस्तक होंगी। अंग्रेज लोग भी उनको कहेंगे **'लार्ड कृष्ण।'** अंग्रेज लोग भी उनको मानेंगे। मुरली में भी ऐसे–2 महावाक्य आए हैं जिनसे ये साबित हो जाता है कि स्वर्ग के रचयिता ल०ना० संगमयुग में होते हैं। जैसे एक वाक्य है–''**सब कहेंगे इन ल०ना० को हेविन का रचयिता, हेविनली गॉडफॉदर।**'' हेविनली गॉडफॉदर तो हेविन के रचयिता ही कहे जायेंगे। हाँ, ये है कि जब से ये ल०ना० के रूप में प्रत्यक्ष होते हैं तब से परमात्मा बाप की प्रवेशता की बात इनमें साबित नहीं होती; क्योंकि फिर तो ये पवित्र बन जाते हैं; लेकिन विश्व को कन्ट्रोल करने की परमपिता परमात्मा की पूरी शक्ति तो इनमें आ ही जाती है ना। इस आधार पर ये संगमयुगी ल०ना० अलग साबित हो जाते हैं।

इसके बाद जो दूसरी मोटी–2 लिखत नीचे लिखी हुई है **'स्वयंवरपूर्व महाराजकुमार श्री कृष्ण और महाराजकुमारी श्री राधे।'** ये लिखत से भी ये साबित होता है कि ये कुमार–कुमारी (रा०कृ०) किसी महाराजा के बच्चे हैं। वो महाराजा पहले ही तैयार हो चुका है जो सारे विश्व का महाराजा है। तब तो यहाँ लिखा है महाराजकुमार श्री कृष्ण और महाराजकुमारी श्री राधे। इससे ये भी बात साबित होती है कि इन कुमार–कुमारी से पहले ही कोई इनके माँ–बाप हैं जो विश्व के महाराजा बन चुके हैं। तो बताया कि ये महाराजा के पुत्र हैं यानी इनके माँ–बाप पहले से ही महाराजा–महारानी हैं। वो महाराजाई किससे प्राप्त की? वो महाराजाई का टाइटिल उन्होंने डायरैक्ट परमपिता परमात्मा शिव ज्योतिर्बिन्दु से अपने पुरुषार्थ के आधार पर प्राप्त किया। उनको विश्व की महाराजाई पद देने वाला कोई दूसरा साकार व्यक्तित्व नहीं होता। यानी कोई साकार व्यक्तित्व नहीं होता है जो उनको विश्व की महाराजाई दे। वो अपने पुरुषार्थ और परमात्मा की याद की शक्ति के आधार पर विश्व की महाराजाई प्राप्त करते हैं। जबकि रा०कृ० को सतयुगी राजाई किससे मिलती है? डायरैक्ट परमात्मा से नहीं मिलती है। ल०ना० देवताओं से राजाई की प्राप्ति होती है। तो रा०कृ० जो सतयुगी महाराजन बनने वाले हैं वो डीग्रेड (कम कला वाले) हो गए। क्यों? क्योंकि वो संगमयुगी ल०ना० डायरैक्ट परमात्मा से प्राप्ति करते हैं और रा०कृ० उन ल०ना० यानी देवताओं से प्राप्त करते हैं। तो परमात्मा से जो प्राप्ति होगी और देवताओं से जो प्राप्ति होगी उसमें अंतर तो होगा ना। ये अंतर यहाँ चित्र में दिखाया गया है।

इस चित्र का दूसरा प्वाइंट है कि ल०ना० जो संगमयुग में नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनते हैं, ये नर से प्रिंस बनने वाले नहीं हैं। नर से प्रिंस तो सतयुग में जाकर **ब्रह्मा दादा लेखराज** बनते हैं और नारी से प्रिंसेज **ओमराधे मम्मा सरस्वती** जाकर बनती है। बाकी जो यहाँ डायरैक्ट नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनते हैं जिन्हें राम–सीता वाली आत्माएं समझ लिया जाए, तो वो आत्माएं यहाँ इसी जन्म में, इसी शरीर से पुरुषार्थ करके कंचनकाया प्राप्त करती हैं। रा०कृ० वाली आत्माएं जो सतयुग में जन्म लेंगी वो तो अपने माँ–बाप से जन्म लेकर कंचनकाया प्राप्त करेंगी। वो कोई बड़ी बात नहीं; लेकिन यहाँ बड़ी बात ये है कि जो सुप्रीम सर्जन बाप है उसकी दी हुई नालेज के आधार पर वो इसी जन्म में, अपने इसी शरीर से ऐसा पुरुषार्थ करते हैं कि शरीर छोड़े बगैर शरीर के पाँच तत्वों को कनवर्ट करते हैं, रीजिव्यूनेट करते हैं। अपने शरीर के पाँच तत्वों को ही रीजिव्यूनेट नहीं करेंगे; बल्कि सारी सृष्टि की जो भी सामूहिक प्रकृति (नेचर) है, उसको भी सामूहिक योगवल से चेंज करने के ये निमित्त बनते हैं; क्योंकि बाबा ने अ०वा० में बोला है कि "**प्रकृति को जब तक परिवर्तन नहीं किया है तब तक समझो कि विश्व का परिवर्तन नहीं हो सकता।**" प्रकृति माना पाँच तत्व। तो आत्मा के सम्पर्क में रहने वाले शरीर के पाँच तत्व पहले परिवर्तन होंगे या दुनियाँवी पाँच तत्व पहले परिवर्तन होते हैं? अरस–परस है। दुनियाँ भी धीरे2 चेंज होती है। दुनियाँ के पाँच तत्व भी चेंज होते हैं; लेकिन उनका आधार है हर आत्मा से सम्बंधित शरीर का परिवर्तन। ये कैसे होता है, क्या तरीका है? वो समझने की चीज है। बाबा ने मुरलियों में बताया है कि "**मैं सर्जन हूँ।**"(मु० 10.6.87, पृ०2)। तो जब परमात्मा खुद सर्जन बनकर आएगा तो दुनियाँवी सर्जन के मुकाबले तो अच्छी ही प्लास्टिक सर्जरी करेगा ना। उन सर्जन द्वारा की हुई प्लास्टिक सर्जरी तो इसी जन्म में खराब हो जाती है। दुबारा–तिबारा करानी पड़ती है। परमात्मा तो ऐसा सर्जन होना चाहिए जो एक स्थाई काम करके जाने वाला हो। बाबा भी कहते हैं "**मैं 21 जन्मों के लिए तुमको निरोगी काया देता हूँ।**"(मु० 22.12.01 पृ०1)। वास्तव में बाबा ऐसा सर्जन है जो 21 जन्मों के लिए हमारी निरोगी काया बनाता है; लेकिन योगबल के आधार पर इस जन्म के लिए भी हमारी निरोगी काया बनती है। उसके लिए धोबी का भी मिसाल दिया है कि "**मैं ऐसा वंडरफुल धोबी हूँ जो तुम्हारा शरीर रूपी वस्त्र और शरीर रूपी नैया दोनों को पार ले जाने वाला एक खिवैया या धोबी हूँ।**"(मु० 13.4.86 पृ०2/मु० 14.2.01 पृ०1)। धोबी है तो दुनियाँवी धोबियों से तो अच्छा ही होगा ना। दुनियाँवी धोबी भी ऐसे तो नहीं कहते कि तुम कपड़ा डाल जाओ और अगले जन्म में हमसे कपड़ा ले लेना। वो भी इसी जन्म में तो क्या 2–4 दिन के अंदर ही कपड़ा धोकर के देते हैं ना। चलो, ये स्थूल कपड़ा नहीं है, ये तो 63 जन्मों का बिगड़ा हुआ शरीर रूपी वस्त्र है। तो परमात्मा बाप ये गारन्टी लेते हैं, ये वंडरफुल धोबी इसी बात का है कि हमारे वस्त्र को ऐसा धोता है जो 21 जन्म तक ये निरोगी बना रहे। मतलब ये है कि वंडरफुल धोबी इस बात में नहीं है कि वो कोई अगले जन्म में कपड़ा धोकर के देगा और इस जन्म में हमारा कपड़ा फाड़ देगा, नहीं।

ऐसे तो वे ब्रह्माकुमार–कुमारी जिन्होंने लक्ष्य ले रखा है कि ब्रह्मा ही हमारा गुरू है, ब्रह्मा ही हमारा सब कुछ है, इससे जास्ती बढ़कर हमारा पुरुषार्थ कुछ नहीं हो सकता। तो जिन्होंने नर से प्रिंस बनने का लक्ष्य ही अधूरा लिया हुआ है इनके जीवन के लिए तो ये बात सम्भव है कि उनको शरीर छोड़ना पड़े; लेकिन बाबा ने हमें ये गीता वर्णित सुप्रसिद्ध लक्ष्य दिया है नर से नारायण बनने का तो नारायण की काया तो जरूर कंचन काया होती है। तो इसी जन्म में हमारी कंचनकाया परमात्मा बनाता है। उसे बनाने का तरीका क्या होगा? वो भी बताया कि "**सर्प का मिसाल तुम बच्चों का है।**"(मु० 14.10.02 पृ०4)। वो तो सन्यासी लोग ऐसे ही झूठा उदाहरण उठा लेते हैं, उदाहरण देते हैं; लेकिन वास्तव में तुम बच्चों की बात है। जैसे सर्प अपनी केंचुल त्यागता है वैसे तुम बच्चे भी अपनी पुरानी खल को त्याग देंगे और नई खल धारण करेंगे। शरीर रूपी वस्त्र ही खल है। ब्रह्मा बाबा की तरह ये खल हम त्याग कर कोई हमेशा के लिए नहीं छोड़ देंगे। वास्तव में जो सर्प का मिसाल है वो

एक्युरेट मिसाल है। सर्प जब अपनी केंचुल त्यागता है तो कोई मर नहीं जाता है, सर्प जिंदा रहता है। वो अपने जीवन में तीन–चार बार खल त्याग करता है तब मरता है। जैसेकि सृष्टि–चक्र में बताया कि मन–बुद्धि रूपी आत्मा को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में चार आयामों से गुजरना पड़ता है। चार बार शूटिंग पीरियड में मानसिक रूप से अप एण्ड डाउन (up and down) में आना पड़ता है– सतयुगी शूटिंग, त्रेतायुगी शूटिंग, द्वापरयुगी शूटिंग और कलियुगी शूटिंग। इन चार युगों की शूटिंग में चार कल्प समाए हुए हैं, उन चार युगों की शूटिंग में आत्मा अप में भी जाती है और डाउन में भी आती है। तो जैसे आत्मा का संशोधन करने के लिए ये 3–4 आयाम हैं जिनसे गुजरना पड़ता है, ऐसे ही शरीर का परिशोधन करने के लिए भी शरीर को 3–4 आयामों से गुजरना पड़ता है। एक बार में ही कंचनकाया नहीं होगी। पहले तो मन–बुद्धि रूपी आत्मा सतोप्रधान बनती हैं; क्योंकि जब तक आत्मा सतोप्रधान न बने तब तक शरीर सतोप्रधान नहीं बन सकते। आत्मा के लिए बाबा ने बोला है कि "**तुम्हारी आत्मा कंचन बनती जावेगी और शरीर सड़ते जावेंगे**।" कब तक? तब तक सड़ते जावेंगे जब तक ये 500 करोड़ की विरोधी संस्कारों वाली दुनियाँ मौजूद रहेगी। जब 500 करोड़ की दुनियाँ खलास हो जाएगी, जब सिर्फ एक जैसी जाति की देवता धर्म की पक्की आत्माएं इस संसार में बचेंगी तब एक वायब्रेशन हो जाएगा। वायब्रेशन एक होने से उसमें संगठन का बल पैदा होगा, वायब्रेशन में परिवर्तन आएगा उससे एक संगठित मानवीय प्रकृति में भी परिवर्तन आना शुरू हो जाएगा।

'बी' साइड (कैसेट)

सृष्टि चक्र के चित्र में बताया था कि 2018 के बाद आटोमेटिक विस्फोट होने के कारण पृथ्वी का बैलेंस बिगड़ जाएगा, बड़े–2 भूकम्प आएंगे। बेहद के उत्तरीय ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव पर जो बर्फ के पहाड़ हैं वो पिघलेंगे। समुद्र का धरातल ऊँचा उठ जाएगा। जो भी बेहद के बड़े–2 महाद्वीप हैं वो सब समुद्र के अंतराल में समाय जाएंगे। उस समय एटमिक विस्फोट से जो गर्मी बढ़ेगी उससे समुद्र का पानी खौलकर भाप बनकर उड़ेगा, तो सृष्टि पर कई दिनों तक जो मूसलाधार बरसात होगी। उसके प्रभाव से सृष्टि का वातावरण जो एटमिक विस्फोट होने से गर्म हो गया था वो एकदम ठंडा हो जाएगा, पृथ्वी की धुरी चेंज होगी। इस सृष्टि पर चारों तरफ एक बार बर्फ ही बर्फ का वातावरण बन जाएगा। उस बर्फ में वे श्रेष्ठ पुरुषार्थी आत्माएं अपने–2 शरीर को त्याग कर मन–बुद्धि से परमधाम जाएंगी। बाकी उनका शरीर सुरक्षित रहेगा और '**अंत मते सो गते**' के अनुसार जब वापस आयेंगी तो उनकी आत्मिक स्टेज बनी हुई होगी, परिपक्व स्टेज में। वो आत्मिक स्टेज में रहकर लम्बे समय तक फिर पुरुषार्थ करेंगे; क्योंकि "**संगमयुग तो 100 साल**" का बताया गया है। यानी सन् 2018 के बाद भी 2036/34 तक संगमयुग के 100 साल पूरे होने तक कोई–2 आत्माओं का पुरुषार्थ चलता रहेगा। तो उस पीरियड में जो रा०कृ० को जन्म देने वाली आत्माएं हैं, विश्व में विश्व महाराजन और विश्वमहारानी साबित होने वाले होंगे वह सबसे कम समय में अपने योगबल के आधार पर अपने शरीर के पाँच तत्वों को 18 वर्ष के अंदर ही चेंज कर देंगे। उस 18 वर्ष के पीरियड में उन्हें 3–4 आयामों से गुजरना पड़ेगा। एक बार में ही पूरा शरीर 100 परसेंट नहीं बनेगा। जैसे कोई व्यक्ति लम्बे समय बीमार होता है तो उसकी ऊपर की जो त्वचा है वो उतर जाती है और नई त्वचा आ जाती है। तो ऐसे ही होगा। एक बार परिवर्तन, दूसरी बार परिवर्तन, तीसरी बार परिवर्तन और चौथी बार में पूरी कंचनकाया बन जाती है। फिर रा०कृ० जैसे बच्चों का उस कंचनकाया वाले शरीर से जन्म होता है। इस तरह पहला इश्यू रा०कृ० होंगे और वो कोई अकेला रा०कृ० बच्चा तो पैदा नहीं होगा, और भी बच्चे उस समय पैदा होना शुरु होंगे। इस तरह अगले 18 वर्षों में (सन् 2018 से लेकर 36 तक) साढ़े चार लाख जो पुरुषार्थी हैं, बीजरूप आत्माएं हैं जो अपने शरीर को कंचनकाया बनाने वाले होंगे वो परिपक्व स्टेज में तैयार हो जायेंगे। 2036 से रा.कृ. जैसे साढ़े चार लाख बच्चों को जन्म देना शुरू करेंगे। इस तरह ये कंचनकाया से कंचनकाया जैसे शरीरधारी बच्चों की पैदायेश होगी। तो ये ल०ना० जैसे श्रेष्ठ पुरुषार्थी इसी जन्म में इसी शरीर को कंचनकाया बनाने वाले साबित हो जाते हैं। बाकी रा०कृ० जैसी आत्माएं तो अगला जन्म

लेकर अपने माँ–बाप के पुरुषार्थ के आधार पर कंचनकाया की प्रॉपर्टी प्राप्त करती हैं, अपने पुरुषार्थ से कंचनकाया नहीं बनाती हैं।

इस ल०ना० के चित्र में समझने का जो अगला प्रकरण है वो ये है कि ल०ना० यहीं बनना है, यहीं कंचनकाया बनानी है, वो तो ठीक है; लेकिन जिनको कंचनकाया यहीं बनानी है उनके बारे में ब्राह्मणों की दुनियाँ में एक अपवाद चल गया है। वो अपवाद ये है कि राम–सीता तो फेल हो गए। मुरली में बाबा ने बोला हुआ है "**राम–सीता फेल हुए। तो जो फेल होने वाले राम–सीता हैं उनको रा०कृ० का दास–दासी बनना पड़ेगा।**"(मु० 29.5.83 पृ०2)। पहली बात तो ये है कि सतयुग में प्रकृति दासी होती है, सतयुग में कोई दास–दासी रखने की जरूरत नहीं है; क्योंकि वहाँ तो सब श्रेष्ठ आत्माएं हैं। ये दास–दासी बनने वाली बात यहाँ संगमयुग के अंदर की है। सतयुग में दास–दासी की बात नहीं है। संगमयुग में कुछ आत्माएं ऐसी हैं जो माँ–बाप के रूप में दास–दासी का पुरुषार्थ करने के कारण दास–दासी साबित हो जाती हैं; क्योंकि दुनियाँ में भी जो बच्चे होते हैं उनकी परवरिश करने के कारण माँ–बाप को फर्स्ट क्लास दास–दासी कहा जाता है। बच्चों को जन्म देना, 9 महीने तक पेट में पालना करना, उनको पढ़ाना, लिखाना, उनकी टट्टी–पेशाब की सफाई करना, बड़ा करना और जब बड़े हो जाएं तो सारी जिंदगी की कमाई उन बच्चों को सौंप देना इससे बढ़कर बढ़िया दास–दासी और कौन मिलेंगे? बाबा जो मुरलियों में कहते हैं "**बच्चे आई एम योर मोस्ट ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट।**"(मु० 4.7.02, पृ०4)। तो शिवबाबा ही जब हम बच्चों का मोस्ट ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट बनकर आया है तो सतयुग में माँ–बाप अपने बच्चों के दास–दासी बन जाएंगे तो ये क्या बड़ी बात हुई? दुनियाँ में ये परम्परा तो सतयुग में भी रही, त्रेता में भी रही, द्वापर में भी रही और कलियुग में भी है। ये कोई हेय (नीची) बात नहीं है कि राम–सीता तो दास–दासी बनेंगे। बाबा तो बेहद की बातें बेहद के रूप में करते हैं। उसके हद का अर्थ समझ लेने के कारण घृणा की दृष्टि पैदा हो जाती है। तो राम–सीता वाली आत्माओं ने तो नई सृष्टि में बच्चों को जन्म देने का श्रेष्ठ पुरुषार्थ किया। ये कार्य राम–सीता जैसी 4–5 लाख आत्माएं जो श्रेष्ठ पुरुषार्थ करती हैं उसके आधार पर ये सृष्टि चलती है। जैसे बीज अविनाशी होता है वैसे ही साढ़े चार लाख आत्माएं पूरे 84 जन्म लेने वाले अविनाशी बीज हैं। बीज को ही पिता कहा जाता है। ये पूर्वज स्वरूप आत्माएं जो रा०कृ० जैसे बच्चों को जन्म देती हैं वो माँ–बाप के रूप में दास–दासी बनती हैं। वास्तव में उनको सतयुग में जाकर दास–दासी का कर्म करने की दरकार नहीं है। बाबा ने भी मुरलियों में इस तरह ये बात बोली हुई है कि "**माँ–बाप जैसे बच्चों के दास–दासी बन जाते हैं।**"(मु० 16.10.74)। तो ल०ना० के चित्र में एक ये प्वाइंट भी हल होता है कि राम–सीता वाली आत्माएं माँ–बाप के रूप में दास–दासी बनेंगे। एक्चुअली उनको सतयुग में दास–दासी बनने की दरकार नहीं है।

इस ल०ना० के चित्र में विशेष समझने का अगला प्वाइंट है कि सतयुग में जो रा०कृ० जैसे बच्चे पैदा होंगे वो ट्विंस के रूप में जन्म लेंगे। मतलब भाई–बहन की पैदाइश साथ–2 होगी। इसका प्रूफ इस चित्र में भी दिया गया है। आप रा०कृ० के चेहरों को ध्यान से देखिये। क्या चेहरों में कुछ समानता दिखाई पड़ती है? दी सेम (the same) चेहरे हैं या नहीं हैं? जरूर हैं। आज की दुनियाँ में भी जो जुड़वॉ बच्चे पैदा होते हैं उनके शरीर में, उनके चेहरों में बहुत कुछ समानता देखने में आती है; क्योंकि समान पुरुषार्थी रहे हैं। थोड़ा सा अंतर जरूर रह जाता है; क्योंकि हर आत्मा के पुरुषार्थ में थोड़ा तो अंतर होगा। तो संगमयुग में मम्मा और बाबा का पुरुषार्थ में थोड़ा सा अंतर रहा था। बाकी दोनों समान पुरुषार्थी थे। इसलिए सतयुग में भी जाकर साथ–2 जन्म लेते हैं, साथ–2 शरीर छोड़ते हैं। एक जैसा चेहरा–मोहरा मिलता है। तो इस बात को सुनकर कोई–2 ब्रह्माकुमार–कुमारी जिनमें देहअभिमान ज्यादा होता है वो कहते हैं– अरे! ये तो बड़ी छी–2 बात सुनाते हैं कि वहाँ हम भाई–बहन बनकर पैदा होंगे और फिर भाई–बहन ही बड़े होकर शादी कर लेंगे। अरे, सतयुग में शादमाना वगैरह कुछ नहीं होता। शादमाना, शादी करना, त्योहार करना, फंक्शन करना ये सब सतयुग में करने की

दरकार नहीं है। वहाँ तो रोज ही शादमाना है, रोज ही फंक्शन है। फंक्शन तो इस दुनियाँ में किया जाता है जहाँ मनुष्य दुःखी हो रहा है, तो एक दिन कोई न कोई त्योहार मना लिया, खुशी मना ली। सतयुग में अलग से कोई ऐसा दिन तैनात नहीं किया जाता, कोई ऐसा कारोनेशन नहीं होता।

शास्त्रों में तो यहाँ संगमयुग की बात है कि स्वयंवर हुआ। 'स्वयंवर' का मतलब है स्वयं वरण करना। वो तो बता ही दिया संगमयुगी रा०कृ० अलग हैं और सतयुगी रा०कृ० अलग हैं। संगमयुगी रा०कृ० तो वास्तव में प्रवेशता की बात है, जिनका कंसी, जरासिंधी के साथ शास्त्रों में वर्णन है। सतयुग में तो कंसी, जरासिंधी होते ही नहीं हैं। यहाँ जो चित्र है उससे भी साबित होता है कि रा०कृ० युगलिया बच्चे हैं। इसके अलावा बाबा ने मुरली में बोला हुआ है कि ''**कृष्ण को राधा का स्वामी नहीं कहेंगे।**''(मु० 5.9.02, पृ०2)। वो जब हैं ही आपस में भाई–बहन तो स्वामी कहाँ हुए? बड़े होते हैं तब उनके दृष्टियोग से, मुख के प्यार से संतान पैदा होती है। उसमें कोई भ्रष्ट इंद्रियों का कनेक्शन तो है नहीं। वो तो योगबल की बात है। श्रेष्ठ इन्द्रियों के बल की बात है, मन–बुद्धि के आकर्षण की बात है। योगबल में किसी प्रकार का देहअभिमान न होने के कारण उनका आपसी प्यार भाई–बहन जैसा ही रहता है। उसमें कोई ऐसी छी–2 बात नहीं है। देहअभिमान होने के कारण लोगों को ऐसा बुद्धि में आता है।

दूसरी बात ये है कि बाबा ने बोला हुआ है कि ''**सतयुग में अनेक सम्बन्ध नहीं होंगे। सम्बन्ध बहुत हल्के होंगे। माँ–बाप और भाई–बहन, दूसरा कोई सम्बन्ध नहीं।**''(मु० 8.12.00 पृ०3)। इसका फाउन्डेशन यहाँ संगमयुग में डाल दिया जाता है। हम ब्राह्मणों की दुनियाँ में हमारा आपस में क्या सम्बन्ध है? हमारा आपस में सम्बन्ध है भाई–बहन और हमारे माता–पिता (जगतपिता और जगतमाता) का। बस, दूसरा कोई सम्बन्ध नहीं। बाकी हमारे सब सम्बन्ध यहाँ कैन्सल हो जाते हैं। हमारे यही संस्कार सतयुग में भी जावेंगे। वहाँ भी ढेर सम्बन्ध थोड़े ही होंगे। वहाँ ढेर सम्बन्ध नहीं होंगे माना चाचा, मामा, काका, ताऊ ये सम्बन्ध खलास हो जाते हैं। अगर वहाँ भी ये सम्बन्ध होने लगे तो वहाँ भी दुःख की दुनियाँ पैदा हो जाएगी। मान लो कृष्ण के माँ–बाप अलग और राधा के माँ–बाप अलग हों तो कृष्ण की अलग से कोई बहन भी होगी और राधा का कोई भाई भी होगा। बाद में अगर उनकी शादी हो तो फिर साला, भांजा भी होंगे, फिर चाचा भी, नाना भी बनेगा। फिर तो कलियुगी दुनियाँ के सारे ही सम्बन्ध शुरू हो गए। तो ऐसा वहाँ नहीं होता। चित्र में हेडिंग दिया हुआ है– '**महाराजकुमार श्री कृष्ण तथा महाराजकुमारी श्री राधे।**' तो क्या सतयुगी दुनियाँ में भी दो महाराजा होंगे? बाबा तो सारे विश्व में एक राज्य की स्थापना करने आया है। सारे विश्व में एक राजा, एक धर्म, एक मत, एक भाषा होगी ऐसा हमको लक्ष्य दिया है। तो क्या रा०कृ० के माँ–बाप अलग–2 होंगे? विश्व में दो महाराजा होंगे क्या? नहीं। वास्तव में शिवबाबा जो नई दुनियाँ स्थापन करते हैं उसमें एक ही महाराजा और एक ही महारानी होगी। उन्हीं महाराजा–महारानी की तरह जितने भी युगल वहाँ होंगे उन सबके युगलिया बच्चे पैदा होंगे। कोई प्रश्न करता है कि जब सबके युगलिया बच्चे ही पैदा होंगे, दो माँ–बाप से दो बच्चों का ही जन्म होगा तो अगली पीढ़ी में जनरेशन बढ़ेगी कैसे? सतयुग की जनसंख्या कैसे बढ़ेगी? तो उसका परिहार बाबा ने मुरली में कर दिया है। बाबा ने बोला है कि ''**रॉयल फैमिली होती है उसमें रॉयल्टी ज्यादा होने के कारण दो ही बच्चे पैदा होंगे। कोई–2 फोर्थ क्लास कैटेगरी की प्रजा भी होती है, उसकी संख्या भी ज्यादा होती है। तो उनमें से कोई–2 माँ–बाप से दो–2 शिशु भी पैदा होते हैं। एक ही जीवन में दो बार ट्विंस का जन्म होता है।**'' तो एक ही माँ–बाप के चार–2 बच्चे भी होंगे; लेकिन सतयुग के आदि में वो कार्य कम तादाद में होगा और सतयुग के अंत में वो ट्विंस बच्चे दो–2 बार जन्म लेने वाले ज्यादा तादाद में होंगे। इस तरह धीरे–2 आबादी बढ़ती है।

अगला हेडिंग इस चित्र में नीचे लिखा हुआ है कि '**आने वाले 10 वर्षों में भारत से भ्रष्टाचार और विकारों का अंत होनेवाला है और होवनहार विश्वयुद्ध के पश्चात् सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी, श्री नारायण का राज्य शीघ्र ही आने वाला है।**' ये लिखत बात को साबित कर देती है सन् 66 में मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद प्रजापिता की बात आई है। त्रिमूर्ति और झाड़ के चित्र में

'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' के साथ 'प्रजापिता' शब्द एड नहीं है। ल०ना० और सीढ़ी के चित्र 66 से बने हैं उनमें प्रजापिता शब्द एड है, **प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय**। इससे ये साबित होता है कि ये चित्र पहली बार 66 में ही तैयार हुआ है और 66 में ये 10 वर्ष की घोषणा कराई गई है। जो घोषणा का काल 76 में पूरा होता है। तो 76 में ये 10 वर्ष के अंदर भारत में से भ्रष्टाचार और विकारों का अंत हो जाना चाहिए; लेकिन एक तो इसका हद का अर्थ लिया गया है। तो हद का अर्थ लगाने वाले ब्रह्माकुमारियों ने ये समझ लिया कि 76 में तो भारत में से भ्रष्टाचार और विकारों का अंत हुआ ही नहीं। सारे भारत में होना दूर, एक ब्रह्माकुमार–कुमारी भी ऐसा नहीं दिखाई पड़ता जिसमें ये भ्रष्टाचार और विकारों का अंत हुआ हो। इसलिए या तो इस चित्र को उड़ा दिया अथवा तो इस चित्र में जो 10 साल की घोषणा लिखी हुई है इसको उड़ा दिया। तो उन्होंने 10 साल के ऊपर चिप्पा चिपका दिया; लेकिन जरूरत नहीं थी।

"बेहद का बाप बेहद के बच्चों से बेहद की बातें करते हैं।" 'भारत' शब्द कोई भारत की जमीन के लिए या भारत की 70–80 करोड़ मनुष्यात्माओं के लिए लागू नहीं होता है। ये 'भारतमाता' कहा जाता है। तो इससे साबित है कि जरूर कोई माता है जो भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली है, जिसके लिए पहली अव्यक्त वाणी में बोला है "**भारतमाता शिवशक्ति अवतार अंत का यही नारा है।**" (अ०वा० 23.1.69)। वो शिव शक्तियाँ ही निकलेंगी जो सारे विश्व में से विकारों का खलासा करेंगी, भ्रष्टाचार को दूर करेंगी। संघारकारिणी गाई जाती हैं; लेकिन यहाँ तो 76 में भारत से भ्रष्टाचार और विकारों का अंत होना चाहिए। तो वास्तविकता ये है कि बाबा ने जो बात बोली थी कि भारत में से भ्रष्टाचार और विकारों का 10 वर्षों में अंत होगा। वास्तव में 76 से ही वो गुप्त शक्ति श्रेष्ठाचारी पार्ट बजाना शुरु करती है। उसी से भ्रष्टाचार और विकारों का अंत होता है। प्रैक्टिकल कर्मणा की जीवन में कोई देवी नहीं बन जाती। देवी–देवताओं की प्रत्यक्षता तो युगल रूप में होगी। सिंगल रूप में प्रत्यक्षता नहीं होती; लेकिन इस बात का प्रूफ है कि प्योरिटी से यूनिटी जरूर देखने में आती है। **जहाँ प्योरिटी होगी वहाँ यूनिटी जरूर होगी।** प्योरिटी नहीं होगी तो यूनिटी भी नहीं होगी। बाबा ने रानी मक्खी का मिसाल दिया है कि "**जब शहद की एक रानी मक्खी उड़ती है तो उसके पीछे सारा झाड़ जाता है।**" (मु०1.11.96 पृ०2)। वास्तव में बात इस यज्ञ की है। रानी मक्खी तो 76 से ही तैयार हुई पड़ी है। सिर्फ उसके द्वारा संगठन रूपी एक छत्ता छोड़कर दूसरा छत्ता बसाने की बात है। इस तरह भारतमाता शिवशक्ति अवतार प्रत्यक्षता रूपी जन्म होगा तो सब उसको फॉलो करेंगे। सारे ब्राह्मण परिवार में जो भी श्रेष्ठ आत्माएं हैं, प्योरिटी को विशेष महत्व देने वाली आत्माएं हैं वो उसके पीछे–2 चल पड़ेंगी।

तो क्या भारतमाता का ही गायन है? भारतमाता है तो विधवा की पूजा नहीं होती, विधवा को तो हेय दृष्टि से देखा जाता है। भारत में तो खास '**वन्दे मातरम् और जयमाता दी**' की ध्वनि लगाते हैं। देवी जागरण करते हैं तो माता ही माता जैसे पिता होता ही नहीं; लेकिन नहीं, माता है तो पिता जरूर पीछे से छत्रछाया के मुआफिक होगा। हाँ, शक्तियों को बाबा ने आगे जरूर किया है। बाबा खुद पीछे प्रत्यक्ष होना चाहता और शक्तियों को आगे प्रत्यक्ष करना चाहता। इस आधार पर वो भारतमाता है तो उसके साथ पिता भी जरूर है और वो पिता सिर्फ भारत का पिता नहीं, वो तो विश्व का पिता होता है; क्योंकि माता तो घर को सम्भालती है और बाप बाहर भी सम्भालता है, घर भी सम्भालता है। तो वो विश्व का पिता है; क्योंकि **ब्रह्मा सो विष्णु** बनता है ना। तो ब्रह्मा सो विष्णु वो तो भारत की माता है। विदेशी लोग गॉडमदर को नहीं मानते, गॉडफॉदर को मानते हैं। भारत के लोग गॉडमदर को भी मानते हैं, '**त्वमेव माता च पिता त्वमेव।**' पिता को भी मानते हैं। हमारा भारतवर्ष है ही प्रवृत्तिमार्ग का देश। यहाँ प्रवृत्ति को मानने वाला देवी–देवता सनातन धर्म पनपता है। उसका फाउंडेशन जमाने के लिए वो पिता पहले से ही उन शक्तियों के द्वारा पुरुषार्थ कराने वाला मौजूद होता है। जिससे वो भारतमाता बनकर संसार में प्रत्यक्ष होती हैं और वो पिता है रूद्रमाला का हेड, जिसे कहते हैं '**शंकर**'। रुद्रमाला के

हेड शंकर के लिए शास्त्रों में प्रसिद्ध है कि वो विष तो पीता था, विकारी तो उसको दिखाया गया; लेकिन विष कंठ में रूका हुआ था, उस विष का प्रभाव उनके अंदर नहीं हुआ। ऊपर से देखने की दृष्टि में अज्ञानियों के लिए तो वो विकारी है, कलंक को धारण करने वाला है, कलंकीधर है; लेकिन वास्तव में निष्कलंक है। तो वो भारत शब्द माता और पिता दोनों के लिए लागू होता है। ऐसे नहीं कि माता निर्विकारी हो गई तो पिता कोई विकारी था। यानी वो राम–सीता वाली आत्माएं 76 से ही ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ में ऐसा पुरुषार्थ करती हैं जो पुरुषार्थ वास्तव में गुह्यगति का पुरुषार्थ होता है; क्योंकि बाबा ने मुरली में बोला है **''शंकर का पार्ट है वंडरफुल जो तुम बच्चे भी समझ न सको।''**(मु० 15.5.75)। पार्वती का पार्ट तो वंडरफुल नहीं होगा। वो तो सबको सहज ही समझ में आ जाएगा। इसलिए सब झट से फॉलो करने लग पड़ेंगे। शंकर का पार्ट में समझने में कुछ राज छिपा हुआ है। उस राजयोग की गहराई को जो आत्माएं समझेंगी वो सिर्फ 16000 गोप–गोपियाँ ही दिखाई जाती हैं। 'गोप–गोपिका' का मतलब ही है गुप्त पुरुषार्थी। सारी दुनियाँ उस बात की गहराई को नहीं समझ सकेगी कि उन गोप–गोपिकाओं ने कैसा गुप्त सम्बंध उस परमात्मा के साथ जोड़ा था। जिसमें वो योगी भी था, गृहस्थी जीवन में रहते हुए भी, भोगी जीवन में रहते हुए भी योगी कैसे था।

तो वो बात समझने की है कि माता 76 से निर्विकारी बनी और प्योरिटी के आधार पर उसने अपनी यूनिटी तैयार की, शिवशक्तियों का संगठन तैयार हुआ। भारतवर्ष में और विदेशों में भी इतनी ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ जिन्होंने अपने जीवन को अर्पण किया है क्या उनमें से 108 शक्तियाँ ऐसी नहीं होंगी जो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पवित्रता के लिए बिल्कुल दृढ़ प्रतिज्ञ हों? चलो 108 नहीं होंगी, एक तो होगी। बाबा ने जो महावाक्य बोला है कि 76 में भारत से भ्रष्टाचार और विकारों का अंत होने वाला है वो उसी एक शक्ति के लिए बोला है। कोई कहे प्रूफ? इस बात का प्रूफ है कि अगर उसमें प्योरिटी की भासना होगी तो उसकी यूनिटी भी सब ब्रह्माकुमारियों के मुकाबले तीखी होगी। और–2 ब्रह्माकुमारियाँ ट्रांसफर होने से डरती हैं। पता नहीं दूसरी जगह जाकर हमारे प्योरिटी के आधार पर यूनिटी बनी या नहीं बनी। इसलिए हम ट्रांसफर होना नहीं चाहते; लेकिन वो प्योरिटी की यूनिटी को बनाने वाली जो शक्ति है उसको कहीं भी ट्रांसफर कर दिया जाए, दुनियाँ के कोई भी देश–प्रदेश में, अफ्रीका जैसे हब्शियों☼ के देश में ही क्यों न डाल दिया जाए, फिर भी वो अपने प्योरिटी के आधार पर यूनिटी तैयार कर लेती है। तो ये प्रूफ है कि भारत के अंदर कोई ऐसी शक्ति है जो 76 से तैयार हो चुकी है। चैतन्य भारतमाता में से भ्रष्टाचार और विकारों का अंत हो चुका है। जब वो शक्ति माता है तो पिता भी जरूर है। हाँ, ये है कि एक होती है मन–बुद्धि की प्योरिटी और एक होती है स्थूल शारीरिक प्योरिटी। तो मन–बुद्धि की जो प्योरिटी है वो है नष्टोमोहा की प्योरिटी। '**नष्टोमोहा स्मृर्तिलब्धा।**' तुम बच्चे कर्मेंद्रियों से भल कोई भी कर्म करो; लेकिन बाप की याद होनी चाहिए, तो तुम्हारे कर्म भी अकर्म हो जाएंगे; लेकिन 100 परसेंट याद होनी चाहिए। अगर 99 परसेंट याद है और एक परसेंट भी अगर देहभान है तो उस कर्म का पाप जरूर बनेगा। बाबा ने तो मुरली में बोला है **''मैं ऐसे से विनाश कराता हूँ जिस पर कोई पाप न लगे।''**(मु० 12.3.87 पृ०3)। शंकर का तो पार्ट ही निराला है। है तो वो जगतपिता का पार्ट। '**त्वम् आदिदेवः पुरूषः पुराणः' और 'जगतं पितरं बंदे पार्वती परमेश्वरौ**' कहा जाता है; लेकिन पार्वती के पार्ट को तो समझा जा सकता है। पार लगाने वाली को ही **'पार्वती'** कहा जाता है। वो पार्ट अंत में खुलता है। कहते भी हैं '**छुपा रुस्तम बाद में खुले।**'

तो इस चित्र में 10 वर्ष की घोषणा का जो लास्ट प्वाइंट है वो राइट है। ये झूठी बात नहीं है कि 10 वर्ष में भारत से भ्रष्टाचार और विकारों का अंत हुआ। भारत शब्द जो है वो राम–सीता वाली आत्माओं के लिए लागू किया है। इसका इशारा देने के लिए बाबा ने एक वाक्य भी बोला हुआ है **''रामायण में सारी कथा भारत के ऊपर है, सिर्फ समझाने का खिर चाहिए।''**(मु० 8.1.95, पृ०3)। अरे! रामायण में सारी कथा, राम–रावण के ऊपर है या भारत के ऊपर है? बाबा ने सिद्ध किया कि

रामायण की कथा तो वास्तव में हीरो–हीरोइन के ऊपर ही होती है। विलियन के ऊपर तो नहीं होती। रामायण के हीरो–हीरोइन कौन हैं? राम–सीता। राम–सीता ही वास्तव में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली आत्माएं हैं। मर्यादा के बारे में जब कोई मिसाल दिया जाता है तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम की तरफ इशारा किया जाता है। कोई कहे कि ये कैसा तुम्हारा मर्यादा पुरुषोत्तम जो शास्त्रों में और चित्रों में विषपायी दिखाया गया है? उसका ऐसा चित्रण क्यों किया गया? वास्तव में ये भी एक रहस्य की बात है जो समझनी है और समझानी है। ओम शांति।

(☼यहाँ ज्ञान की दृष्टि से हब्शी का मतलब है बौना (bauna) अर्थात् ज्यादा विकारी, जिनको विकारों का हब्श लगा रहता है)

कल्पवृक्ष एडवांस – 1 घंटा

'ए' साइड (कैसेट)

साक्षात्कार के आधार पर बनाये गए 4 चित्रों में से जो ये 30 x 40 इंच का झाड़ का चित्र है ये भी पुराने से पुराने चित्रों में से एक है। **त्रिमूर्ति, झाड़, गोला** के फोल्डर्स बाबा ने पहले–2 सन् 60–61 में तैयार कराये थे, जिस समय '**सच्ची गीता सार**' पुस्तक छपाई थी। एडवांस नालेज के आधार पर इसमें जड़ों के साथ बीज नीचे की ओर एड कर दिये गए। ये हैं जड़ों को भी जन्म देने वाली बीजरूप आत्माएं जो यज्ञ के आदि में भी राम बाप बीज के साथ थीं और अब ब्रह्मा के शरीर छोड़ने के बाद फिर दुबारा ब्राह्मण जन्म लेकर 'लास्ट सो फास्ट' जाकर वो ही श्रेष्ठ पुरूषार्थी आत्माएं बन जाती हैं। यहाँ हम देखते हैं उल्टे वृक्ष को सीधा करके दिखाया गया है। वास्तव में इसकी जड़ें ऊपर की ओर, शाखायें नीचे की ओर हैं। नीचे की ओर दिखाई गई शाखायें पतनोन्मुखी हैं। जड़ें अर्थात् आधारमूर्त आत्माएं और उनकी बीजरूप आत्माएं उर्ध्वगामी बनने वाली हैं; क्योंकि बीज पहले अपने को खाक में मिलाता है। जो अव्यक्त बापदादा भी बोलते हैं कि "**अब देखेंगे राख कौन बनते हैं और कितने बनते हैं और कोटों में से एक, लाखों में से एक कौन निकलते हैं वो भी देखेंगे**।"(अ०वा० 23.9.73 पृ०161)। जड़ों से पहले–2 बीज होते हैं। यज्ञ के आदि में ये बीजरूप आत्माएं पहले–2 पार्ट बजाने वाली थीं। जो आदि में थीं वो ही अब अन्त में एडवांस पार्टी के रूप में फिर से लास्ट सो फास्ट पुरूषार्थी के रूप में प्रत्यक्ष होती हैं। जो गायन है कि '**दाना खाक में मिलकर गुलेगुलजार होता है**'। बीज अपने को खाक में न मिलाये तो गुलशन अर्थात् बगीचा तैयार नहीं हो सकता।

यहाँ कल्पवृक्ष के 4 भाग हैं– सतयुग, त्रेता, द्वापर, सबसे ऊपर कलियुग और पाँचवाँ भाग जड़ों और बीजों के साथ संगमयुग दिखाया गया है, जहाँ हर धर्म का बीजारोपण होता है, हर धर्म का फाउंडेशन डाला जाता है जो अभी डाला जा रहा है। हर प्रकार के धर्म का फाउन्डेशन पड़ने के साथ–2 देवी–देवता धर्म का फाउन्डेशन डालने वाला परमपिता परमात्मा भी इसी संगमयुग में प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा पार्ट बजाता है। यहाँ जो मात–पिता के रूप में चित्र दिए गए हैं वहाँ उन्हीं प्रजापिता और ब्रह्मा को समझना चाहिए। अलग–2 धर्मों में इनके दूसरे नाम **आदम–हव्वा, एडम–ईव, आदिदेव–आदिदेवी** के नाम से पुकारे गए हैं। अन्य धर्मों का फाउन्डेशन देहधारी मनुष्य गुरूओं द्वारा डाला जाता है। ब्राह्मण भी मनुष्य ही हैं, इसलिए भारतीय परम्परा में ब्राह्मणों के 9 गोत्र माने गए हैं। 9 धर्मों से कनेक्टेड 9 गोत्रों वाले ब्राह्मण ही यहाँ जड़ों पर बैठे दिखाए गए हैं, जिनके बीज भी 9 प्रकार के हैं। ये हर धर्म के अलग–2 बीज हैं, बीज में ज्यादा शक्ति होती है। इसलिए ये 9 बीज ही बेहद के 9 रत्न के रूप में गाए जाते हैं जो जीते जी मरकर राख बनते हैं अर्थात् अपने को राख बनाते हैं। राख बनकर भी ईश्वरीय सेवा के कार्य को सम्पन्न रूप देते हैं। ये नम्बरवार ब्रह्मा की औलाद हैं, जिनसे सारी सृष्टि का विस्तार होता है। ये स्वयं भी परमात्मा बाप से नम्बरवार प्राप्ति करते हैं और अपने

फालोअर्स को भी प्राप्ति कराने के निमित्त बनते हैं; लेकिन यहाँ जड़ों के अग्रभाग पर दस धर्मों के दस आधारमूर्त ब्राह्मण आत्माएं और उनके दस बीजरूप आत्माएं दिखाए गए हैं। वास्तव में उनमें से एक **नास्तिक धर्म** की जड़ और बीज, धर्म के नाम पर टोटल अधर्म ही है। वास्तव में ब्राह्मण तो है ही नहीं; क्योंकि ब्रह्मा बाप से कोई प्राप्ति ही नहीं करता। सिर्फ डिस्ट्रक्शन ही करता है, ईश्वरीय कार्य में रचनात्मक सहयोग देता ही नहीं। इसलिए वो ब्राह्मण की लिस्ट में न होने से नम्बरवार तो हैं नहीं। 9 रत्न में भी नहीं गिना जा सकता। बाकी वृक्ष के दाईं ओर बाईं ओर बाईप्लाट धर्मों के आधारमूर्त और बीजरूप ब्राह्मण बैठे हुए हैं और बीच में जो जड़ प्रायः लोप दिखाई गई है उस पर माता–पिता के रूप में सृष्टि वृक्ष के फाउन्डर दिखाए गए हैं। वो कोई ब्रह्मा–सरस्वती नहीं हैं; क्योंकि सरस्वती तो ब्रह्मा की बेटी है। इसलिए ब्रह्मा–सरस्वती को प्रवृत्तिमार्गीय देवता धर्म का फाउन्डेशन डालने वाला युगलमूर्त नहीं कहेंगे। वास्तव में ब्रह्मा और उनकी बेटी सरस्वती, ये कोई युगल रूप नहीं हुआ। यज्ञ के आदि में जो फाउन्डेशन डालने वाले थे वो तो अब यज्ञ में प्रायः लोप हो चुके हैं। उन्हीं को अब देवता धर्म के फाउन्डर के रूप में, प्रवृत्तिमार्गीय युगल के रूप में प्रत्यक्ष होना है। अभी वो मूल फाउन्डेशन ब्राह्मणों की दृष्टि में प्रायःलोप हो चुका है। पूरा लोप भी नहीं कह सकते, प्रायः करके लोप है। इसके लिए कलकत्ते में **बनियन ट्री** का मिसाल दिया जाता है। ये सृष्टि रूपी वृक्ष है जिसकी लकड़ी रूपी हडिड्याँ पानी में पड़ी रहने पर भी सड़ती नहीं। जड़ के उस ऊपरी हिस्से में जहाँ नमी नहीं मिल सकती वो ही भाग सड़ता है। इसलिए नीचे की जड़ का भाग प्रायः लोप कहा जाता है। पूरा लोप नहीं होता; क्योंकि ज्ञान जल की नमी मिलती रहती है। इसलिए प्रवृत्तिमार्गीय देवता धर्म का फाउन्डेशन पूरा लोप नहीं हो पाता वरन् प्रायः लोप कहा जाता है। जबकि दूसरे धर्मों की जड़ें अर्थात् आधारमूर्त ब्राह्मण प्रत्यक्ष देखने में आते हैं।

यहाँ वृक्ष में 10 प्रकार के बीजों, 10 आधारमूर्तों की जड़ें और 10 प्रमुख शाखायें दिखाई गई हैं। उनके 10 धर्मों के गुणधर्म का विवरण पहले यहाँ देना जरूरी है। तो 10 प्रमुख धर्म कौन–2 से हैं और उनकी विशेषताएं क्या–2 हैं और उन धर्मों में विशेष पार्ट बजाने वाली आत्माएं कौन–2 सी हैं, इसकी जानकारी भी जरूरी है। जिससे हर धर्म की आत्मा की सहज ही पहचान की जा सकती है। पहले–2 है **आदि सनातन देवी–देवता धर्म** जिसका मूल गुणधर्म '**सहनशीलता**' है। **सहनशीलता ही सर्व गुणों का राजा है।** इस गुण को धारण करने वाली आत्माएं हर ब्रह्माकुमारी आश्रम में एक–दो की संख्या में जरूर होनी चाहिए जिनमें ब्रह्मा जैसी अखूट सहनशक्ति का गुण अवश्य होगा। अन्य धर्मों की आत्माओं में ऐसी अखूट सहनशीलता देखने में नहीं आवेगी जैसी देवता धर्म की आत्माओं में देखने में आवेगी। जैसे कहते हैं '**धरत परिये पर धर्म न छोड़िए**'। ये उनका सहज और निरन्तर गुणधर्म होगा। जिसे धारण करने में उन्हें कोई खास पुरूषार्थ यानी मेहनत का अनुभव नहीं होगा।

इस सृष्टि रूपी वृक्ष का दूसरा विशेष धर्म है **क्षत्रिय धर्म**, जिसका विशेष गुणधर्म है '**सामना करने की शक्ति और समाने की शक्ति,**' जो भारतीय राजाओं का विशेष धर्म रहा। भारत में क्षत्रिय वर्ण की आत्माएं ही प्रायः करके राजायें बनी हैं। जिनमें वो सामना करने की शक्ति विशेष रूप में देखी जाती रही है। ऐसी बात भी नहीं कि इनमें सहनशीलता होती ही नहीं है; परन्तु प्रायः करके जिसमें शक्ति होती है, बल होता है वो सहन क्यों करेगा? सहन करने की शक्ति होते हुए भी ये सामना करने की स्वभाव वाली होती हैं आततायियों के प्रति। विकराल से विकराल परिस्थितियों में भी सामना जरूर करेंगी। जैसे अव्यक्त वाणी में बापदादा ने सागर के विशेष दो गुण बताये हैं कि "**सागर ज्ञान लहरों से तूफानों का सामना भी करता है और कैसी भी गुणधर्म वाली विरोधी आत्माओं को भी अपने में भारतीय ऐतिहासिक परम्पराओं के अनुसार समाय लेना या आत्मसात कर लेना इन क्षत्रिय वर्ण की आत्माओं का विशेष गुणधर्म है।**"(अ०वा० 21.9.75)। विदेशी धर्मों के क्रूर, आततायी, अत्याचारी धर्मावलम्बियों ने भारत में आकर कितने भी अत्याचार किए, बार–2 आक्रमण किए, लूटमार की परन्तु फिर भी भारतीय राजाओं ने उनका मुकाबला भी किया और उन्हें जरूरत पड़ने पर समय आने पर आत्मसात भी कर लिया। भारत मात–पिता का देश है; क्योंकि "**राम बाप को कहा जाता है**" और

कृष्ण है देवता धर्म की मृदुल स्वभाव वाली मातृ स्नेही, मातृवात्सल्य के स्वभाव वाली आत्मा। राम और कृष्ण दोनों ही सृष्टि रूपी रंगमंच के हीरो–हीरोईन हैं, मात–पिता हैं, आदम–हव्वा या एडम–ईव हैं। पिता की कठोरता क्षत्रिय धर्म की बीज रामवाली आत्मा में समाई हुई है। उस बीजरूप पिता में सारे सृष्टि रूपी वृक्ष की साररूप शक्ति समाई हुई है। तो सर्व मनुष्य आत्माओं को समाने का विशेष गुणधर्म उसमें अवश्य होगा।

तीसरे नम्बर का अगला धर्म है **इस्लाम धर्म**। ये है नम्बरवन वाममार्गीय धर्म। वाममार्ग माना उल्टा रास्ता बताने वाला। इसका विशेष गुणधर्म है '**महाकामी**'। एक होता है कामी अर्थात् सिर्फ अपनी पत्नी या पति तक ही काम वासना में लिप्त रहते हैं, इसको कहते हैं कामी; परन्तु महाकामी उसे कहा जाता है जिसकी वासना पूर्ति एक से नहीं हो पाती। महाकामी का उदाहरण कुत्ते से दिया जाता है। कहते हैं ना **कामी कुत्ता।** तो व्यभिचारी होना इनके जीवन की विशेषता है, जिसके कारण द्वापर से दुनियाँ की आबादी बड़ी तीव्र गति से बढ़ने लगी। वास्तव में इस्लामियों जिनका अपर नाम बाद में **मुस्लिम** पड़ा उनकी संख्या तो बहुत तेजी से बढ़ी। इनमें शुरू अर्थात् द्वापर में भाई–बहनों में भी शादी की परम्परा होती थी। इतने ये विकारी, व्यभिचारी थे। व्यभिचार इनके धर्म में नूँधा है। सिर्फ पुरुष ही नहीं बल्कि स्त्रियाँ भी अपने जीवन में अनेक शादियाँ करती हैं और डाइवोर्स भी देती हैं। है तो ये सब ड्रामा प्लैन अनुसार ही; क्योंकि यदि वो ऐसा न करते तो उनकी जनसंख्या की वृद्धि भी न होती।

इसके बाद चौथा धर्म है **बौध्द धर्म**। महात्मा बुध्द का विशेष गुणधर्म रहा है '**हद की अहिंसा**।' जिस समय बुध्द भारत में आए उस समय भारत में हिंसक यज्ञ की परम्परा जोर–शोर से चल रही थी। जानवरों को ही नहीं अपितु मनुष्य और बच्चों को भी काट–2 कर यज्ञ में पकाया जाता था। उनका माँस भून करके प्रसाद समझ कर खाया जाता था। इसे **नरमेध यज्ञ** कहा जाता था। उस समय महात्मा बुध्द ने आकर इन हिंसक यज्ञों का प्रतिकार किया। उनको फॉलो करने वाले बौध्द धर्मावलम्बियों ने इस हिंसक परम्परा का त्याग कर दिया। बौध्द धर्म में पहले प्रवृत्तिमार्ग का विशेष महत्व रहा। यह ब्रह्मचर्य को विशेष महत्व देने वाले थे; परन्तु बाद में कुछ समय के पश्चात् जब बौध्द बिहारों में इनके भोलेपन के कारण स्त्री और पुरुष इकट्ठे निवास करने लगे तो इनमें व्यभिचार फैल गया और उसका जब भंडाफोड़ होने लगा तो पुरूष बौध्दियों को तीव्र वैराग आता गया और वे निवृत्तिमार्गीय सन्यासी बनने लगे। इसलिए बाबा ने एक वाणी में कहा है कि "सन्यासी कब आए? क्रिश्चियन से कुछ पहले आते हैं।" (मु० 1711.74)। वास्तव में शंकराचार्य से चले हुए सन्यासी तो बाद में आयें; लेकिन उनसे भी पहले बौध्द धर्म की आत्माएं ही सन्यासी बनने लग पड़ी थीं। तो 'हद का घर–बार छोड़ने वाला सन्यास और हद की अहिंसा' बौध्दियों का विशेष गुणधर्म रहा। बौध्दियों की अहिंसा कायरता वाली अहिंसा है। इसलिए इन्होंने विदेशी आक्रमणकारियों का मुकाबला ही नहीं किया। बड़े सहज भाव से इन्होंने अपने बीबी, बाल, बच्चों को आक्रान्ताओं के हवाले कर दिया और सदा के लिए आधीन हो गए। यही कारण है कि बौध्द धर्म संसार में अधिक समय तक अस्तित्व में नहीं रह सका और यही कारण है कि आज लगभग सभी बौध्दी धर्म खण्डों में नास्तिकवाद अर्थात् रूस के कम्यूनिज्म का बोलबाला हो गया है।

पाँचवाँ अगला धर्म है क्राइस्ट का **क्रिश्चियन धर्म**। क्रिश्चियन धर्म का मुख्य गुण धर्म है '**गुप्त क्रोध**।' ये दूसरे नम्बर का वाममार्गी धर्म है। ऐसे नहीं कि इसके धर्मावलम्बियों में इस्लामियों जैसी काम वासना अर्थात् व्यभिचारी वृत्ति नहीं होती। इनमें भी डाइवोर्स देने और एक ही जीवन में अनेकों सम्बन्ध जोड़ने की व्यभिचारी वृत्ति होती है; परन्तु इस्लामियों के मुकाबले ये ठंडे प्रदेशों में पनपने वाला धर्म है। इस्लामियों का धर्मखण्ड गर्म होने के कारण काम वासना की वृद्धि करने वाला है। जबकि इसाईयों का यूरोपीय धर्मखण्ड मौलिक रूप से ठंडा होने के कारण 'ठंडे क्रोध' को जन्म देने वाला है। ठंडे क्रोध का मतलब है कि तत्काल ही शंकर की तरह धूम–धड़ाका करने वाला स्वभाव इनमें नहीं होता। ये क्रिश्चियन उस समय शान्त रहेंगे जब इनको क्रोध आयेगा। मालूम ही नहीं पड़ेगा कि क्रोध इनके अन्दर अड्डा जमा रखा है। बड़े शान्त और सभ्यता की प्रतिमूर्ति देखने में आवेंगे; परन्तु अन्दर ही

अन्दर क्रोध की ज्वालामुखी घुमड़ने लगेगी। अवसर पाते ही क्रोध की ज्वालामुखी इतना भयंकर रूप धारण करती है कि ये अपने विरोधियों के प्रति आटमिक बाम्ब्स जैसे भयंकर परिणाम लाने वाली सामग्री बनाने से भी नहीं चूकते। भले ही उसके विस्फोट से सारी दुनियाँ ही स्वाहा क्यों ना हो जाए और उसमें महाभारत प्रसिद्ध यादवों के बुद्धि रूपी पेट से निकले लोहे की मूसलों की भाँति अपने ही सारे कुल का सर्वनाश ही क्यों न हो जाए। ऐसे भयंकर परिणामों को अच्छी तरह समझने के बावजूद भी ये अपने क्रोध को रोक नहीं पाते। भरपूर वार करने के लिए सतत प्रयत्नशील बने ही रहते हैं। ऐसे 'खतरनाक, खौफनाक ठंडे क्रोध को अन्दर ही अन्दर गुप्त रूप से बढ़ाने के लिए बाहरी सभ्यता का ढोंग करना, दिखावा करना अर्थात् पोपलीला करना' इन क्रिश्चियन्स का दूसरा विशेष गुण धर्म है। ये प्रदर्शन करने का गुण धर्म ही ऐसा है जो इनमें एडवर्टाइजमेन्ट की विशेष कला को जन्म देने वाला है। इनकी एडवर्टाइजमेन्ट की कला ने वो कमाल करके दिखाया कि प्राचीन भारतीय सभ्यता को असभ्य और पिछड़ा हुआ साबित कर दिया। इन्होंने हिस्ट्री में ये साबित कर दिया कि आर्य यूरोप की ओर से आए और भारत में पिछड़े हुए लोग रहते थे। ग्रीस और रोम की पुरानी यूरोपीय सभ्यता का संसार में इन्होंने नाम बाला किया। जबकि वास्तविकता बिल्कुल इसके विपरीत है। इस प्रकार क्रिश्चियन्स का विशेष गुण धर्म हुआ 'ठंडा क्रोध, प्रदर्शन की पोपलीला और तीसरा है एडवर्टाजइमेन्ट की धोखाधड़ी।' ये तीनों ही गुण भारत की प्राचीन परम्पराओं के बिल्कुल विपरीत हैं।

अगला छठा धर्म है **सन्यास धर्म**। ये भी बौध्दियों की तरह स्वदेशी भारतीय धर्म है। बौध्दी मौलिक रूप से प्रवृत्तिमार्ग वाले रहे, जबकि सन्यास धर्म के प्रणेता आदि **शंकराचार्य** बचपन से ही निवृत्तिमार्ग को अपनाने वाले रहे। द्वापर से लेकर कलियुग अंत तक भारत में ही फलते–फूलते रहते हैं। सिर्फ अंत के 100 वर्षों में भारत में अपनी पोलपट्टी खुल जाने के भय से विदेशों में फैल जाते हैं। वहाँ जाकर भारत का प्राचीन योग, सहज योग के नाम पर हठयोग की शारीरिक प्रक्रियाएं दिखाने लग पड़ते हैं। इस धर्म का विशेष गुण धर्म है '**कायरता वाली पवित्रता**।' जैसे कोई 5–10 वर्ष जेल में रहे और जेल से बाहर आने के बाद अपने ब्रह्मचर्य की डींग हाँकने लगे कि मैंने दस साल ब्रह्मचर्य पालन किया। तो ऐसी ही मजबूरी की दूरबाज–खुशबाज वाली पवित्रता धारण करने में ये बड़े माहिर हैं। प्रवृत्ति में पत्नी, बाल–बच्चों के साथ रहकर पवित्रता धारण करना इनके लिए असम्भव है। इसलिए **नारी नर्क का द्वार** कहकर जंगलों की ओर भागते रहे। अपनी कमजोरी को न देख दूसरों की कमजोरियों की ओर इशारा करने लग पड़े। फिर भी भल कायरता वाली पवित्रता ही है; परन्तु पवित्रता के प्रति इनमें प्यार तो है। पवित्र रहकर इन्होंने गिरते हुए भारत को थमाया तो है। व्यभिचारी विदेशियों के प्रभाव से प्रभावित भारतवासी राजाओं में जिस समय कृष्ण पूजा को लेकर 16000 कृष्ण की रानियों का हवाला देकर अनेकों रानियाँ रखने की व्यभिचारी परम्परा चल पड़ी थी और यथा राजा तथा प्रजा भी व्यभिचार में आसक्त होने से तेजी से नर्कगामी बनते हुए खतरनाक रसातल की ओर जाने लगी थी, उस समय द्वापर के अन्त में इस धर्म की शुरूआत में गिरते हुए भारतवासियों को पवित्रता का संदेश दिया। जिससे भारत के राजायें अपनी भोग विलासता को त्याग करके तपस्वी जीवन बिताने लग पड़े और भारत पतन के गर्त में जाने से बच गया।

सन्यास धर्म की विशेषता है कि आदि में पवित्रता की पावर से त्यागी, तपस्वी और शुद्ध भारतीय पार्ट बजाने वाले होते हैं, जबकि ये सतोप्रधान स्टेज में होते हैं; परन्तु अन्त में यही सन्यासी तमोप्रधान होने पर भोगी, विलासी और शुद्ध विदेशियता का पार्ट बजाने वाले साबित हो जाते हैं। अच्छे–2 साहूकार घरों की गृहस्थियों के पास भी जो भोग–विलास की साधन सामग्रियाँ और उच्च कोटि के वैभव नहीं होते वो भी इनके पास बहुतायत से देखे जा सकते हैं। कोई–2 सन्यासियों के पास तो अपने पर्सनल एरोप्लेन भी घुमने–फिरने के लिए होते हैं। तात्पर्य है कि ये सन्यासी न भारतीय कुल के पक्के रहते हैं और न ही विदेशी कुल के पक्के होते हैं। इसलिए भारतीय शास्त्रों में इन्हें पाण्डवों के बीच **नकुल** अर्थात् ना इस कुल के, ना उस कुल के– ये संज्ञा दी गई। 5 पाण्डवों में से एक पाण्डव का नाम नकुल बताया गया। नकुल का अर्थ होता है नेवला। नेवलाई स्वभाव अर्थात् विषय विकार रूपी

विष उगलने वाले विषैले सर्पों का खण्डन करने का स्वभाव इनमें प्रबल होता है। विषय विष उगलने वाले धर्म हैं ही ये वाममार्गीय धर्म– इस्लाम धर्म, क्रिश्चियन धर्म, मुस्लिम धर्म और रूस का नास्तिकवाद। बाबा ने भी बोला है कि "**अन्त में जब सन्यासी निकलेंगे तो तुम बच्चों की विजय हो जावेगी**"। क्योंकि यही सन्यासी असली ज्ञान को जानने के बाद विदेशी और विधर्मियों का भंडा फोड़ कर डालेंगे। भल सन्यासियों का मुख्य गुणधर्म कायरता वाली पवित्रता ही है परन्तु आदि और अन्त में इनकी यही अनेक जन्मों की पवित्रता की पूँजी भारत के उत्थान में काम तो आती है। यही कारण है कि इन्हें अपनी कायरता वाली पवित्रता का बड़ा अहंकार होता है। रूस के नास्तिक धर्म के बाद दुनियाँ का दूसरे नम्बर का अहंकार भी इन्हीं सन्यास धर्म की आत्माओं में सबसे जास्ती देखने में आता है; लेकिन थोड़ा बहुत अन्तर है। ये कम से कम निराकार परमात्मा को तो मानते हैं। चलो शिवोऽहम कह देते हैं; लेकिन परमात्मा के गुणों को तो मानते हैं। लेकिन इनमें जो अहंकार है वो इतना ऊपर चढ़ जाता है कि अपने को ही भगवान समझकर बैठ जाते हैं। यही बात बहुत घातक है।

अगला धर्म है **मुस्लिम धर्म**। यह धर्म मुहम्मद के द्वारा फैला, जब अरेबियन्स अर्थात् इस्लामियों की मूर्ति पूजा की अंधश्रद्धा बहुत अति को पहुँच चुकी थी। ...

'बी' साइड (कैसेट)

...पहले तो ये मूर्ति पूजक थे। तो इस अन्धश्रद्धा का मुहम्मद ने आकर खण्डन किया और जितने भी इस्लामी थे ज्यादा से ज्यादा मुहम्मद को फॉलो करने लग पड़े; क्योंकि इस्लाम धर्म मनुष्य के द्वारा स्थापित किया हुआ धर्म है, इसलिए मनुष्य के द्वारा स्थापित किया हुआ धर्म ज्यादा समय तक सात्विक स्टेज में नहीं रह सकता। अंधश्रद्धा, अंधविश्वास और काम वासना के आधार पर उस धर्म का तेजी से पतन हुआ। उस धर्म को नया रूप देने के लिए मुहम्मद ने आकर मुस्लिम धर्म स्थापन किया। ऐसे नहीं कि मुस्लिम धर्म में कामवासना नहीं रही। काम वासना तो दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़नी ही थी, न कि घटनी थी; क्योंकि खून तो वही है इस्लामियों वाला। हिस्ट्री में एक बात हुई कि ये जो अरेबियन देश है वो रेगिस्तानी इलाका है, वहाँ कुछ भी पैदाइश नहीं होती थी। अभी 100–200 वर्षों के अन्दर–2 तेल के भन्डार निकल पड़े तो इसके कारण ये बहुत धनवान हो गए। नहीं तो पहले वहाँ बहुत गरीबी थी; क्योंकि जब तेजी से जनसंख्या बढ़ी तो वहाँ का रेगिस्तानी इलाका इनको धन सम्पत्ति नहीं दे सका और जब ये गरीब होने लगे तो इनकी ऐशो आराम, भोगी, विलासी और अय्याशी की जिन्दगी बिताने के जो संस्कार हैं उसमें बाधा आने लगी। तो इसकी पूर्ति के लिए इनकी नजर खुशहाल भारत देश के ऊपर पड़ी, और ये लाखों की तादाद में इकट्ठे होकर बड़ी–2 सेनाएं बनाकर भारत के ऊपर हमला करना शुरू कर दिए। लुटेरों की तरह इन्होंने भारतवर्ष को लूटा, आतताइयों की तरह तंग किया, आगजनी, लूटमार की। इनके द्वारा भारत पर किए गए आक्रमण इतिहास में बहुत प्रसिद्ध हैं। तो दुनियाँ में हिस्ट्री के अन्दर ये '**लोलुप अर्थात् लोभी धर्म**' साबित हो जाता है। कामी तो होते ही हैं; लेकिन साथ में लोलुप भी हैं। लोलुपता जितना इनके अन्दर समाई होती है उतना लोभ दुनियाँ के किसी भी धर्म के अन्दर समाया हुआ नहीं है और ना ही इस लोभ के आधार पर दुनियाँ का कोई धर्म इतना आक्रामक और अत्याचारी बना।

इसके बाद अगला धर्म है **सिक्ख धर्म**। मुसलमानों का अत्याचार द्वापर के अन्त सातवीं–आठवी सदी से शुरू हुआ यानी कलियुग के आदि से ही मुसलमानों के आक्रमण शुरू हो चुके थे। पहला–2 आक्रमण **मोहम्मद बिन कासिम** के द्वारा कलियुग के आरम्भ में हुआ (अर्थात् आज से 1300 वर्ष पूर्व)। उस समय से लेकर मध्य कलियुग चौदवीं सदी तक आते–2 मुसलमानों का वर्चस्व दुनियाँ में इतना जास्ती हो गया कि करीब–2 सारे भारत में मुसलमानों का राज्य फैल गया। इन लोगों के अत्याचार भी खास भारत में इतने बढ़ गए जो सीमा से बाहर थे। जबरदस्ती तलवार की नोंक से इन्होंने हिन्दुओं को मुसलमान बनाया। तो उस अत्याचार का प्रतिकार करने के लिए परमधाम से एक ऐसी आत्मा (गुरु नानाक) आई जिसने भारत के उन सोए हुए राजपूतों (क्षत्रियों) को जगाया और उनको

ऐसा ज्ञान दिया कि वे हट्टे–कट्टे राजपूत, क्षत्रिय धर्म की आत्माएं जिनमें अक्ल थोड़ी कम होती थी वो अंग्रजों और मुसलमानों से आज भी टक्कर ले रहे हैं। उन्होंने विदेशियों से, विदेशी आक्रमणकारियों से जितनी टक्कर ली है, जितने बलिदान सिक्खों ने दिए हैं उतने बलिदान हिन्दुओं ने भी नहीं दिए हैं। तो सिक्ख धर्म ने हमेशा भारत का सहयोग किया। ये जितने भारत के, भारतीय परम्पराओं के और भारतीय सभ्यता के सहयोगी, नजदीकी रहे उतना कोई दूसरा धर्म भारत का सहयोगी और नजदीकी नहीं बना। बौध्दी भी आदि में सहयोगी रहे, अहिंसा का पाठ पढ़ाया; लेकिन बाद में इनमें कायरता भरी अहिंसा के कारण कमजोरी आ गई। विदेशी आक्रान्ताओं ने इनके ऊपर आक्रमण किए तो ये झुक गए, अपने बीबी, बाल बच्चों को भी सौंप दिए। इस प्रकार ये बौध्दी सहज रूप से उनके अधीन हो गए, इसलिए भारत के सहयोगी नहीं बन सके। बाकी रहे सन्यासी, उन्होंने तो दुनियाँ को ही छोड़ दिया, गृहस्थ जीवन को ही छोड़ दिया, बिना गृहस्थी जीवन के भला राजाई कैसे चल सकती थी? तो उनका भी सहयोगी होना ना होना बाद में बराबर हो गया। जब तक सतोप्रधान थे तब तक सन्यासी भारत के सहयोगी बने रहे; लेकिन जब तमोप्रधान बने तो इनका कोई सहयोग नहीं रहा। राइट साइड का एक सिक्ख धर्म ही ऐसा है कि 500 वर्ष पहले जब से ये धर्म उदय हुआ तब से लेकर अंत तक ये भारत के सहयोगी बने रहे। राम–कृष्ण की परम्पराओं के ये पक्षपाती बने रहे। भले ही निराकार को मानने वाले रहे; लेकिन साथ में देवी–देवताओं की भी उपासना की भावना इनमें रही। राम–कृष्ण की भी इन्होंने महिमा की है, कभी भी ग्लानि नहीं की।

यही एक ऐसा धर्म है जिसे बाबा ने मुरलियों में "**दूसरे नम्बर का प्रवृत्ति मार्ग का धर्म**" बताया है (मु० 9.8.73, पृ०1 रात्रि)। पहले नम्बर का प्रवृत्ति मार्ग का धर्म है देवी–देवता धर्म और दूसरे नम्बर का धर्म है सिक्ख धर्म। तो नई दुनियाँ के फाउन्डेशन में सब धर्मों के मुकाबले यही एक ऐसा धर्म साबित होता है जो देवी–देवता सनातन धर्म का फाउन्डेशन बनाया जा सकता है; क्योंकि जो देवी–देवताएं थे वो तो संग के रंग में आकर बिल्कुल ही भ्रष्टाचारी बन गए; क्योंकि पुराना धर्म है। उनको तो इतनी अक्ल ही नहीं रही, बिल्कुल ही तमोप्रधान बन जाते हैं; लेकिन सिक्ख धर्म कोई पुराना धर्म नहीं है। ये तो कलियुग के मध्य में आने वाला नया धर्म है, बाद में आता है। तो जो धर्म बाद में उदय होते हैं वो ना तो जास्ती सतोप्रधान बनते हैं और ना ही जास्ती तमोप्रधान बनते हैं। तो अन्त में भी इनमें कम से कम इतनी तो अक्ल रही कि कमा करके खाना है अर्थात् मेहनत करके खाना है। अपने धर्म को नहीं छोड़ना है और अपने देश की ही बढ़ोतरी में रहना है। इन्होंने हराम की कमाई कभी भी खाना पसन्द नहीं किया। ये आज भी बड़े मेहनतकश हैं। तो ये सिक्ख धर्म जो है वो देवी–देवता धर्म का फाउन्डेशन बनाया जाता है। ये देवी–देवता धर्म का सहयोगी धर्म है। हालाँकि सिक्ख धर्म की आज थोड़ी सी आत्माएं ऐसी भी हैं जो विदेशियों के प्रभाव से प्रभावित होकर आतंकवादी बन गई हैं। वो तो हर धर्म लास्ट में पहुँच कर कुछ न कुछ तमोप्रधान बनता ही है। ये तो ड्रामा बना हुआ है। आज भी सिक्खों का कुछ ऐसा हिस्सा है जो भारत के लिए सबसे जास्ती सहयोग देने के लिए तैयार रहता है और तैयार रहेगा।

इसके बाद अगला धर्म है **आर्यसमाजी**। इसका विशेष गुण धर्म है '**प्रजा के प्रति मोह**'। जनसंख्या की वृद्धि हो जाए, ज्यादा से ज्यादा लोग हमारे फालोअर्स बन जाएं, हमारी नेतागिरी के अन्दर ज्यादा से ज्यादा लोग बने रहें। यानी ज्यादा से ज्यादा वोट बनाने की परम्परा इन्हीं आर्यसमाजियों में है। इसलिए मुरलियों में बाबा ने **इनडायरैक्टली इन आर्यसमाजियों को कौरव कहा है** (मु० 31.3.72)। है तो भारतीय धर्म। कौरव भी भारतीय थे; लेकिन ये अर्धनास्तिक हैं। अर्धनास्तिक किस हिसाब से? ये निराकार को मानते हैं, यज्ञ परम्पराओं की यज्ञ प्रक्रियाओं को भी करते हैं; लेकिन साकार देवी–देवताओं को नहीं मानते हैं। इनका कहना है कि इसी दुनियाँ में स्वर्ग है और इसी दुनियाँ में नर्क है। तो आर्यसमाजियों का विशेष गुण धर्म है प्रजा के प्रति मोह, कैसे? जब से इस धर्म के स्थापक महर्षि दयानन्द आए तब से उन्होंने एक ऐसा रास्ता भारत के अन्दर खोल दिया जिससे दुनियाँ के कोई भी धर्म की आत्मा हो, कोई भी जाति का व्यक्ति हो, नीच से नीच व्यक्ति हो, उनको उन्होंने हिन्दू बनाना

शुरू कर दिया। ये नहीं देखा कि हम क्वालिटी बना रहे हैं या संख्या बढ़ा रहे हैं। क्वालिटी भले ही गिर जाए; परन्तु तादाद बढ़ जानी चाहिए। बुद्धि में ये बात नहीं आई कि शेर जैसा एक बच्चा पैदा करना श्रेष्ठ है या गीदड़ों जैसे अनेक बच्चों को पैदा करना ज्यादा अच्छा है। तो अंजाम क्या हुआ? भारतवर्ष की देवी–देवता सनातन धर्म की जो कमजोर आत्माएं टाइम टू टाइम दूसरे धर्मों में कनवर्ट होती रहीं; क्योंकि हिन्दू ही दूसरे धर्मों में कनवर्ट हुए, दूसरे धर्म की आत्माएं कभी भी हिन्दू नहीं बनीं और ना ही हिन्दुओं ने उन्हें कभी अपने में मिक्स किया। तो देवी–देवता सनातन धर्म से पुनः–पुनः दूसरे धर्मों में जो अवसर पाते ही कनवर्ट होते रहे वही बाद में आकर आर्य समाजी बने माना उन्होंने फिर से हिंदुत्व स्वीकार कर लिया। मतलब है कि देवी–देवता सनातन धर्म की जो अवसरबादी कच्ची आत्माएं थीं वो ही कनवर्ट होकर, आकर आर्यसमाजी बनती हैं। इस्लाम धर्म आया तो ये इस्लाम धर्म में चले गए। इस्लाम धर्म में जब इन्हें सुख नहीं मिला तो ये क्रिश्चियन धर्म में चले गए। उसमें भी सुख नहीं मिला तो मुस्लिम धर्म में कनवर्ट हो गए। ऐसे एक धर्म से दूसरे धर्म में और दूसरे से तीसरे धर्म में जहाँ–2 सुख पाने का अवसर देखा वहाँ–2 सतोप्रधान धर्मों में घुसते चले गए; लेकिन गीता में जैसा बताया है '**स्वधर्मे निधनम् श्रेयः परधर्मो भयावहः**।' और बाबा ने भी बताया है "**अपने धर्म में मर जाना अच्छा है। दूसरे का धर्म दुःख देने वाला होता है। अपने धर्म में रहना ही ठीक है**।"

तो इनकी ये हमेशा से वृत्ति रही कि हमारा अपना कोई एक निश्चित पक्का धर्म नहीं है। यहाँ तक कि धर्मनिरपरेक्ष राज्य की ही स्थापना कर दी अथवा जो धर्म आया उसी धर्म को गले लगा। जैसे अवसर देखा वैसे कनवर्ट हो गए। जैसे आजकल के अवसरवादी नेताएं हैं **जहाँ देखी तवा बारात, वहाँ बिताई सारी रात।** वहाँ अपने को ट्रांसफर कर लिया। उन्होंने जब भारत में **महर्षी दयानन्द** के द्वारा ऐसे धर्म की स्थापना की बात सुनी तो फट से ऐसी आत्माएं ललचायमान हो गईं। इनके अन्दर भारत के अंन्तिम स्वर्गीय सुख भोगने के पुराने संस्कार भरे हुए हैं। जितने इन्होंने भारत में सुख देखे, इनकी आत्मा ने सुख अनुभव किए उतने सुख इनकी आत्मा ने किसी भी धर्म में कहीं भी किसी भी जन्म में अनुभव कर ही नहीं पाए। धर्म कनवर्ट करने से कहीं सुख थोड़े ही हो सकता है। जहाँ पक्का धर्म होता है वहाँ शक्ति होती है और शक्ति से ही सुख भोगा जाता है। इसलिए बाबा कहते हैं **"रिलीजन इज माइट।"** जब आदमी में शक्ति नहीं तो सुख क्या भोगेगा? अन्दरूनी शक्ति हो या बाहरी शक्ति, जहाँ धर्म के प्रति मान्यता नहीं वहाँ शक्ति भी नहीं रह सकती। तो हर धर्म में जो कनवर्ट होती हुई आत्माएं अपने को बिल्कुल कमजोर कर बैठती हैं तो कमजोर हुई आत्माएं फिर भारत में आकर हिन्दुओं के हिन्दुत्व को स्वीकार करके आर्यसमाजी बन गयीं। जो धर्म की इतनी कमजोर आत्माएं हैं कि राजसत्ता चलाने के काबिल ही नहीं। इनके राज्य में तो वो हिसाब होगा जो गायन है '**टका सेर भाजी टका सेर खाजा, अंधेर नगरी चौपट राजा**।' इसलिए प्रजा के ऊपर प्रजा के शासन को बाबा ने **बेकायदे राज्य** बताया है, अनलॉफुल अनराइटियस राज्य बताया है। तो ये धर्म भारत का सबसे नीचा गिरा हुआ धर्म है, तामसी स्टेज का धर्म है। ये अन्तिम 100 वर्षों के अन्दर दुनियाँ में पनपने वाला धर्म है। जब नास्तिक धर्म की बढ़ोतरी होती है जो दुनियाँ का लास्ट धर्म है उसी समय अर्द्ध नास्तिक आर्यसमाजी भी आते हैं।

एक तरफ **महर्षि दयानन्द** ने आकर आर्यसमाज धर्म चलाया और दूसरी तरफ रशिया में **लेनिन और स्टालिन** ने आकर **नास्तिकवाद** का आरोपण कर दिया। जितने भी वहाँ के बड़े–2 जार राजाएं थे उनका कत्लेआम करवाया। तो ये दोनों धर्म, **आर्यसमाज और रशिया का कम्यूनिज्म** (नास्तिकवाद) ऐसे धर्म हैं जो राजाई को पसन्द ही नहीं करते। ना राजाओं को पसन्द करते हैं और न उनकी प्रजा में रहना पसंद करते हैं। अंग्रेज गवर्नमेन्ट के समय थोड़े से राजाएं थे जिनको कम से कम पेन्शन व उपाधि देकर उनका नाम तो कायम रखा था; लेकिन जब से ये कौरव गवर्न्मेन्ट आई तब से ये हाल हुआ कि राजाओं का नामोनिशान गुम कर दिया। इस प्रकार दसवाँ आखिरी धर्म है नास्तिकवाद। ये न आत्मा को मानते हैं, न परमात्मा को मानते हैं, न स्वर्ग को मानते हैं, न नर्क को मानते हैं। ये सिर्फ देह, देह के पंच तत्वों को ही सब कुछ मानते हैं। दैहिक पंचतत्वों के विश्लेषण में इनकी बुद्धि गई

है। देह माना मिट्टी। तो तत्वों के अणु–2 का इन्होंने बुद्धि से विश्लेषण कर डाला और अणुबम, एटमबम बना दिया अर्थात् दुनियाँ के लिए खतरा पैदा कर दिया। अपने लिए भी ये आत्माएं कन्स्ट्रक्शन करने वाली नहीं हैं; बल्कि डिस्ट्रक्शन करने वाली आत्माएं हैं। परमात्मा के कार्य में ये सहयोगी नहीं बनती हैं; लेकिन परमात्मा भी चतुर सुजान है। डिस्ट्रक्शन के स्थूल कार्य में ऐसी आत्माओं को ही निमित्त बनाता है। एक तरफ परमात्मा आता है तो देवी–देवता सनातन धर्म की आत्माओं में ज्ञान का बीजारोपण करता है और उसके लिए भारत में विशेष आत्माओं को निमित्त बनाता है और दूसरी तरफ रूस में आटमिक इनर्जी का निर्माण शुरू होता है। ये ईजाद भी इन्हीं लोगों की है। तो ये हुए अहंकारी रशियंस जिनका मुख्य गुणधर्म ही है '**देह अहंकार**।'

इन ऊपर की बातों के आधार पर इन धर्मों में बताई गई कोई भी आत्मा पहचानी जा सकती है। नीचे वृक्ष में ये ऊपर का हिस्सा जो वृक्ष का अन्तिम हिस्सा है वो काट कर नीचे कलम लगाए हुए दिखाया गया है। कलम का मतलब है कि हर धर्म की चुनी हुई कुछ विशेष आत्माएं हैं। पुरानी सृष्टि रूपी वृक्ष में से कुछ आत्माएं चुनी जाती हैं वो ब्राह्मण धर्म में आरोपण कर दी जाती हैं अर्थात् परमात्मा उनको खींचता है और वो ब्राह्मण धर्म में आ जाती हैं। जो आत्माएं दूसरे–2 धर्मों से कनवर्ट होकर ब्राह्मण धर्म में आईं, वो एक जैसी तो हो नहीं सकतीं। उन आत्माओं के यहाँ 3 ग्रुप दिखाए गए हैं। 3 मुख्य ग्रुप हैं जो 3 ग्रुप यहाँ से फैले हैं। जड़ों के भाग में ये तीन ग्रुप हैं– लेफ्ट साइड की जड़ें, राइट साइड की जड़ें और बीच की लोप हुई जड़ जिस पर मुखिया मात–पिता सृष्टि रूपी वृक्ष में बैठे हुए दिखाए गए हैं। पहला ग्रुप है देवी–देवता सनातन धर्म का पक्का जिनके मुखिया के रूप में सृष्टि वृक्ष के नीचे मात–पिता बैठे हुए हैं। पिता के रूप में प्रजापिता ब्रह्मा को बिठाया गया है और माता के रूप में मम्मा को बैठाया गया है। इस प्रकार ये माता–पिता के रूप में बिठाए गए हैं। इसलिए ये नहीं समझना है कि यही मम्मा–बाबा है, यही समझना है कि ये सृष्टि के मात–पिता अर्थात् जगतपिता और जगतमाता (एडम और ईव) बैठे हैं। जिनको मुसलमानों में आदम और हव्वा कहा जाता है, जिनके द्वारा नई सृष्टि का फाउन्डेशन लगाया गया है। तो निश्चित है कि पिता वाली आत्मा अव्वल नम्बर धर्म से होती है। **अल्लाह अव्वल दीन** कहा जाता है। देवी–देवता सनातन धर्म के भी दो रूप हैं, जैसे हर धर्म की भी दो मुख्य डालियाँ हो गईं। इस्लाम धर्म के साथ मुस्लिम धर्म जुड़ा हुआ है; क्रिश्चियन धर्म के साथ रशिया का नास्तिक धर्म जुड़ा हुआ है। ऐसे ही देवी–देवता सनातन धर्म जो पक्का प्रवृत्तिमार्ग वाला है, तो उसमें प्रवृत्ति देवताओं और क्षत्रियों की है। अन्तिम धर्म क्षत्रिय धर्म की जो विशेष आत्माएं पार्ट बजाने वाली हैं उनमें मुख्य है राम वाली आत्मा। वो हो गई प्रजापिता के रूप में पार्ट बजाने वाली। "राम बाप को कहा जाता है, ऐसे नहीं कहा कि राम कृष्ण को कहा जाता है।" तो एडम के रूप में पार्ट बजाने वाली है राम की आत्मा। देवताएं तो मृदुल स्वभाव वाले ही होते हैं। उनका जो मुखिया है कृष्ण वाली आत्मा, वो हो गई मीठी मृदुल स्वभाव वाली माता के रूप में पार्ट बजाने वाली जगतमाता अर्थात् जगदम्बा। ये जो देवी–देवता सनातन धर्म का मुख्य बीच वाला भाग है जिन पर मात–पिता बैठे हैं, ये आदि से लेकर कलियुग अन्त तक इसी तरह की आत्माएं हैं जिनको फालो करने वाली पक्की आत्माएं भी होती हैं जो अपने धर्म में पक्की रहती हैं। अपने जीवन में कभी भी अपने धर्म को छोड़ने वाली नहीं बनतीं। इसलिए ये थुर भाग में नीचे से लेकर ऊपर तक देवी–देवता सनातन धर्म की आत्माओं को दिखाया गया है। इसलिए बाबा बोलते हैं "तुम बच्चे हो आदि सनातन देवी–देवता धर्म के पक्के।" (मु० 20.2.74 पृ०1)। मतलब कभी भी दूसरे धर्म में कनवर्ट होने वाले नहीं हो।

लेफ्ट साइड में और राइट साइड में बाईप्लाट जड़ों पर जो ब्राह्मण बैठे हुए हैं उनमें राइट साइड की जो बाईप्लाट जडें हैं वो भारतीय धर्मों की जड़ें हैं– बौध्द धर्म, सन्यास धर्म, सिक्ख धर्म और आर्य समाज की आधारमूर्त जड़ें। ये वे जड़ें हैं जो ऐसा रस लेती हैं जिनसे भारतीय धर्मों का पोषण होता है। राइट साइड में ऊपर की ओर नम्बरवार भारतीय धर्मों की जो डालियाँ दिखाई गई हैं उनको इन्हीं राइट साइड की जड़ों से रस मिलता है। महात्मा बुध्द, शंकराचार्य, गुरूनानक, महर्षि दयानन्द ये सभी जितने भी राइट साइड के धर्म पिताएं हैं वो पवित्रता को विशेष महत्व देने वाले हैं इसलिए ये

राइटियस धर्म हुए। तो इनको इन राइट साइड की जड़ों से रस मिलता है और जड़ों को जन्म देने वाले कोई बीज भी होते हैं, जो यज्ञ के आदि में बीज बनकर इन जड़ों का बीजारोपण करने वाले होते हैं, जिनसे ये जड़ें निकलती हैं। तो ये हुआ राइट साइड का। दूसरा हिस्सा और है लेफ्ट साइड की बाईप्लाट जड़ों का तीसरा हिस्सा। जो लेफ्ट साइड की जड़ें हैं वो ऐसी जड़ें हैं जो संगमयुग में ऐसा फाउन्डेशन लगाती हैं या ऐसा फाउन्डेशन लगाने वाली ब्राह्मण आत्माएं यज्ञ के अन्दर आती हैं जो दूसरे, लेफ्टिस्ट धर्मों से आई हुई हैं। लेफ्टिस्ट धर्मों में कनवर्ट होकर अनेक जन्म रही हुयी है। कोई इस्लामी धर्म में, कोई क्रिश्चियन धर्म में, कोई मुस्लिम धर्म में, कोई रूस के नास्तिकवाद में। तो वो आत्माएं जब ब्राह्मण धर्म में आती हैं, परमात्मा उनको खींचता है तो वो अपने गुणधर्म को सहज नहीं छोड़ पातीं। इस्लामी कामुक वृत्ति को नहीं छोड़ पातीं, क्रिश्चियन धर्म वाले क्रोध वृत्ति को नहीं छोड़ पाते, मुस्लिम धर्म वाले लोभ वृत्ति को नहीं छोड़ पाते और नास्तिक धर्म वाले अहंकार की वृत्ति को नहीं छोड़ पाते। तो ये तीन ग्रुप है। पक्का **स्वदेशी और स्वधर्मी** बीच वाला हिस्सा है जो नीचे मुख्य जड़ भाग से लेकर थुर भाग तक ऊपर तक गया है। दूसरा हिस्सा है राइट साइड की जड़ों का और डालियों का जो **स्वदेशी धर्म है; लेकिन विधर्मी** है और तीसरा हिस्सा है लेफ्ट साइड की जड़ों का और डालियों का जो पक्के **विदेशी और विधर्मी** भी हैं। तो ये तीन ग्रुप हुए। वृक्ष के ये तीन मुख्य हिस्से हैं, एक है थुर भाग देवी–देवता सनातन धर्म का और दूसरा है राइट साइड के भारतीय धर्मों का। ये है स्वदेशी; लेकिन विधर्मी है। विधर्मी का मतलब विपरीत धर्म वाले; क्योंकि देवी–देवता सनातन धर्म का थुर तो ऊपर जा रहा है; लेकिन ये जो राइट साइड के धर्म हैं इन्होंने देवी–देवता सनातन धर्म के विपरीत यानी विरोधी दिशा पकड़ ली। हैं तो भारतीय। तीसरा जो लेफ्ट साइड वाले हैं वे विधर्मी के साथ–2 विदेशी भी हैं। राइट साइड वाली आत्माएं विदेशी नहीं हैं और लेफ्ट साइड के ना स्वदेशी हैं और ना स्वधर्मी है; विपरीत धर्मवाली हैं, विपरीत देश वाली हैं। देवी–देवता सनातन धर्म को सबसे जास्ती इनसे नुकसान पहुँचा। जितना इन्होंने भारत को, भारत के देवी–देवता सनातन धर्म को नुकसान पहुँचाया उतना राइट साइड वालों ने नहीं पहुँचाया। तो ये 3 ग्रुप हो गए। जड़ों से ही ये बात साबित हो जाती है।

ऊपर के जो विपरीत धर्मपिताएं हैं वो इन जड़ों से ही रस लेने वाली आत्माएं हैं, जो नीचे ब्रह्मा की संतानें दिखाई गयी हैं। परमात्मा संगमयुग में ज्ञान का रस तो दे ही रहा है; लेकिन उस रस को अपने–2 तरीके से, मनमत के आधार पर और अपने गुरूओं के मत के आधार पर ये बाईप्लाट जड़ों पर बैठी हुई आत्माएं उस रस को अपनाने के लिए मजबूर हैं। चाहे वो राइट साइड की हों या लेफ्ट की हों। परमात्मा की बताई हुई धारणा को सीधे–2 नहीं अपनायेंगे, अपने गुरूओं के थ्रू अपनायेंगे। जैसे गुरू इनको डायरैक्शन देंगे उस डायरैक्शन के आधार पर अपनायेंगे। श्रीमत को डाइरैक्ट अपनाने वाले नहीं हैं। इस तरह ये बात क्लीयर हो जाती है कि ब्राह्मणों की दुनियाँ में जब से शिवबाबा आए और आकर यज्ञ की स्थापना की उसी समय से स्थापना करने वाली आत्माओं के साथ2 नम्बरवार डिस्ट्रक्शन करने वाली आत्माओं का भी यज्ञ के अंदर प्रवेश होने लगा। इसलिए अव्यक्त वाणी में बाबा ने बोला था कि **"यज्ञ कुंड से स्थापना के साथ–2 विनाश ज्वाला भी प्रज्वलित हुई। तो विनाश ज्वाला को प्रज्वलित करने वाले कौन? बाबा ने बताया– ब्रह्मा, बाप और ब्राह्मण बच्चे।**"(अ०वा० 3.2.74 पृ०173)। माँ–बाप के बीच में अगर बच्चे दखलंदाजी करने लगें तो उन दखलंदाजी करने वाले बच्चों को विदेशी कहा जायेगा या स्वदेशी? निश्चित रूप से यज्ञ में ऐसे विदेशी बच्चे प्रवेश कर गए जिन्होंने माँ–बाप के बीच में फ्रिक्शन डलवा दिया। राम–सीता के बीच में फ्रिक्शन कौन डलवाता है? रावण। बाबा ने कहा **"रावण जब से आते हैं तब से भारत में लड़ाई शुरू होती है।**"(मु० 8.8.70, पृ०3)। तो द्वापर युग से रावण आया तो भारतवासी आपस में लड़ गए। द्वापर में ऊपर से आने वाली इस्लाम धर्म की आत्माओं ने जिन आधारमूर्त जड़ों में प्रवेश किया उनकी दृष्टि–वृत्ति को व्यभिचारी बना दिया। इन जड़ों के लेफ्ट और राइट साइड में आधारमूर्त जो ब्राह्मण बैठे हुए दिखाए गए हैं ये वो आत्माएं हैं जो सतयुग में जाकर नम्बरवार कम कलाओं वाले नारायण बनते हैं; क्योंकि ये पूरी पढ़ाई नहीं पढ़ते हैं।

लास्ट वाले नारायण बनते हैं जिनका भारत में कोई गायन नहीं है। सतयुगी सेकन्ड नारायण से लेकर आठवें नारायण तक का सिर्फ सप्त ऋषियों के रूप में गायन है; लेकिन नारायण के रूप में इनके न मंदिर बनते हैं, न पूजा होती है। इन्हीं नारायण वाली आत्माओं में द्वापर युग से जो ऊपर से आने वाले धर्मपिताएं हैं वो टाइम टू टाइम प्रवेश करते हैं और उनमें प्रवेश करके दृष्टि–वृत्ति को व्यभिचार बनाते हैं। जैसे इब्राहीम की आत्मा ने सतयुग के सेकन्ड नारायण में प्रवेश किया और उसकी दृष्टि–वृत्ति को व्यभिचारी बना दिया। सिर्फ उन्हीं को नहीं, उन धर्मपिताओं के पीछे–2 और भी आत्माएं परमधाम से आती हैं। इस्लाम धर्म की जो आत्मा सतयुग की सेकंड नारायण बनती है उसकी प्रजा में भी नम्बरवार विधर्मी आत्माएं प्रवेश करती हैं। दृष्टि–वृत्ति को व्यभिचारी बनाने वालों का जिन–2 धर्मों ने सहयोग दिया वो हैं आर्यसमाजी और नास्तिक वगैरह। इस तरह का सहयोग देने वाले और सहयोग लेने वाले आधारमूर्त इस्लाम धर्म की जो विशेष आत्माएं और उनके फॉलोअर्स हुए उनकी दृष्टि–वृत्ति का करप्शन होता है। ब्राह्मण धर्म की जो देवी–देवता धर्म और क्षत्रिय धर्म की पक्की आत्माएँ हैं, उन्होंने द्वापर के आदि में करप्शन स्वीकार नहीं किया और वो उनसे भिड़ गई और उनको खदेड़कर अरब देशों तक भगा दिया। अरब देश में जाकर वो एकदम स्वतंत्र हो गए, और ही व्यभिचार करने लगे। ये इतने व्यभिचारी होते थे कि अपनी सगी बहनों से भी शादी कर लेते थे; क्योंकि इन्हें तो अपनी जेनरेशन बढ़ानी थी।

''यज्ञ के अंदर किसी भी प्रकार के विघ्न आते हैं तो उसका मूल कारण अपवित्रता है''– ऐसा बाबा ने बोला है। जो ब्राह्मणों की दुनियाँ में काम महाशत्रु बताया वो काम महाशत्रु विशेष ब्राह्मणों की दुनियाँ में भी काम कर रहा है। इसका प्रभाव किस ग्रुप की आत्माओं के द्वारा आता है? इस्लाम धर्म की आत्माओं के द्वारा आता है। जो धर्म इनके सहयोगी बनते हैं वो सब उस वायब्रेशन को फैलाने के निमित्त बन जाते हैं और भारत के दुश्मन बन जाते हैं। भारत की पवित्र प्रवृत्ति को तोड़ देते हैं। राम और सीता को जुदा करने वाले कौन हुए? रावण का विशेष कार्य है राम को सीता से जुदाई देना। यज्ञ के अन्दर आदि से ही वो रावण घुस गया। कहते हैं धर्मगुरूओं के द्वारा सबसे जास्ती पतन होता है। ऐसे नहीं कि राइट साइड की जड़ें भारत की सहयोगी धर्मवाली हैं, नहीं। वो भी विपरीत आचरण करने लग पड़ती हैं। इसका कारण है कि भारतीय धर्म है बौध्दी धर्म वो इस्लाम धर्म के मुकाबले कमजोर है; क्योंकि बाद में आने वाला है। (इसी प्रकार) क्रिश्चियन धर्म के मुकाबले सन्यास धर्म कमजोर है; क्योंकि बाद में आने वाला है। वृक्ष में सन्यास धर्म की जड़ फिर भी मोटी दिखाई गयी है; क्योंकि इसका आधार है पवित्रता।

कलियुग के अंत में संसार में क्रिश्चियन्स का जब अन्तिम 200 वर्ष में बहुत फैलाव हो जाता है, तो ये सन्यासी विदेशों में जाकर इन विदेशियों के, क्रिश्चियन्स के अधीन हो जाते हैं। विदेशी संस्कृति को पूरा ही अपने जीवन में ढाल लेते हैं और बहुत ही व्यभिचारी बन जाते हैं। जितने ये सतोप्रधान पीरियड में भारतीय परम्परा को अपनाने वाले होते थे उतने ही अपने तामसी बनने पर दूसरे धर्म वालों से कहीं ज्यादा अपवित्र हो जाते हैं। सिर्फ एक **रजनीश** की बात थोड़े ही है, सभी सन्यासियों का यही हाल है। नहीं तो ये पहले जंगलों में रहते थे, शहरों में इनको घुसने की दरकार ही नहीं थी। ये विदेशी धर्म नहीं है फिर भी विपरीत आचरण करने वाले हैं। शास्त्रों में दिखाया है, दानव देवताओं के मुकाबले हमेशा पावरफुल रहे। अगर भगवान उनके सहयोगी न बने होते तो देवताएं कभी दैत्यों से जीत नहीं सकते थे, हमेशा अधीन ही पड़े रहते। ये राइट साइड के जितने भी धर्म हैं वो बड़े आसानी से लेफ्ट साइड के विदेशी धर्मों के अधीन हो जाते हैं। भारतीय धर्मों में एक सिक्ख धर्म ही है जो प्रवृत्ति मार्ग का धर्म है। अन्त तक प्रवृत्ति को मानने वाला '**एक नारी सदा ब्रह्मचारी**'– ये गायन सिक्खों में है और प्रैक्टिकल जीवन में भी देखा जा रहा है। तो राइट साइड के सिक्ख धर्म को छोड़कर बाकी सभी भारतीय धर्म विदेशियों के पूरा प्रभाव में आ जाते हैं और भारतीय सभ्यता और संस्कृति का तिलांजली दे बैठते हैं। ओम् शांति।

सीढ़ी एडवांस – 1 घंटा

यहाँ सीढ़ी के चित्र में संगमयुग को दो भागों में दिखाया गया है– एक नीचे का भाग दायीं ओर के कार्नर में और एक ऊपर का भाग बायीं ओर के कार्नर में। पुराने सीढ़ी के चित्र में नीचे का जो भाग कलियुग के अंत में दिखाया गया उसमें ये साफ लिखा हुआ है **'40 वर्ष का संगमयुग।'** जबकि संगमयुग की अधिकतम आयु बाबा ने मुरली में बताई है **"100 साल।"** इससे साबित हो गया कि सन् 36 से लेकर 76 तक का समय यहाँ दिखाया गया है और 76 के बाद का जितना संगमयुग है वो चित्र में ऊपर दिखाया गया है। सीढ़ी में नीचे **'40 वर्ष'** लिखा हुआ है, तो सन् 36 से लेकर 76 तक इन 40 वर्षों के अन्दर ब्रह्मा के द्वारा सतयुगी आत्माओं की शूटिंग का जो स्थापना का कार्य सम्पन्न होना था वो सम्पन्न हो गया और उसकी चार स्टेजेस भी हुईं– सतोप्रधान, सतोसामान्य, रजो और तमो। रजोप्रधान और तमोप्रधान की जो शूटिंग सम्पन्न हुई है वो यहाँ सीढ़ी के मध्य से रावण राज्य के रूप में दिखाई गई है, जहाँ 40 वर्ष का सामान्य संगमयुग पूरा हुआ। 60 वर्ष का 'पुरुषोत्तम संगमयुग' सन् 76 से लेकर 2036 तक सीढ़ी में ऊपर दिखाया गया है। 76 तक जब ब्रह्मा द्वारा सतयुगी देवता वर्ण की आत्माओं की शूटिंग का कार्य सम्पन्न हो जाता है, तो इसके बाद विनाशकाले विपरीत बुद्धि राक्षसी ब्राह्मण विनश्यन्ति हो जाते हैं और विनाशकाले जो प्रीत बुद्धि हैं वो यहाँ सीढ़ी में ऊपर की ओर विजयन्ति के रूप में दिखाए गये हैं।

इसलिए बाबा ने कहा **"सीढ़ी के चित्र में नीचे की ओर साफ लिखो विनाशकाले विपरीत बुद्धि खलास हो गए माना विनश्यन्ति हो गए और ऊपर लिखना चाहिए विनाशकाले प्रीत बुद्धि विजयन्ति हो गए।"** 76 के बाद विजय को प्राप्त करने वाली आत्माएं यहाँ सीढ़ी में ऊपर दिखाई गई हैं, जिनमें राम और राम के 3 भाई यहाँ दिखाए गये हैं। एक तरफ भाईयों का ग्रुप और दूसरी तरफ बहनों का ग्रुप दिखाया गया है। एक तरफ है रुद्र माला का ग्रुप और दूसरी तरफ है विजयमाला का ग्रुप। रुद्रमाला की मुखिया 4 आत्माएं दिखाई गई हैं जो 4 धर्मों के बीज हैं। शास्त्रों में यही ब्रह्मा के 4 सबसे बड़े मानसी पुत्र बताए गए हैं– **सनत, सनातन, सनंदन और सनतकुमार**। जो चार मुख्य धर्म हैं– देवता, इस्लामी, बौध्दी और क्रिश्चियन उनकी ये 4 आत्माएं बीजरूप आत्माएं हैं। इनमें देवता धर्म का बीज है राम वाली आत्मा, इस्लाम धर्म का बीज है भरत, बौध्द धर्म का बीज है लक्ष्मण और क्रिश्चियन धर्म का बीज है शत्रुघ्न। ये 4 धर्मों की 4 बीजरूप आत्माएं तो हो गईं रुद्रमाला की और 4 हो गईं इनकी सहयोगी शक्तियाँ जो दूसरी ओर सामने दिखाई गई हैं, जिनमें से तीन दिखाई गई हैं, एक नहीं दिखाई गई है। बाकी त्रिमूर्ति के साथ जो स्वर्ग का गोले का चित्र दिया हुआ है उसमें चारों ही शक्तियाँ दिखाई गई हैं।

तो कहने का मतलब है ये चार आदि बीज और ये तीन शक्तियाँ ये 7 हो गए और दूसरे दो मम्मा–बाबा हो गए। तो ये 9 हुए। (किसी ने कुछ कहा)। एक इसलिए कम है; क्योंकि जो चौथा है शत्रुघ्न उसने संगमयुग में बना बनाया परमात्मा का घर गिराया होगा, इसलिए जो उसका घर है उसे परमात्मा ने गिरा दिया तो नाम पड़ा **'गिरजाघर।'** इसलिए तीन ही दिखाई हैं और एक को नहीं दिखाया गया है। मम्मा के लिए तो बाबा ने कहा है कि **"मम्मा अन्त तक स्थापना के कार्य में उपस्थित रहेगी भल बाबा चला जाए।"** तो ये ही 9 धर्मों के 9 आदि रत्न हैं। वैसे अब तक यज्ञ में ये समझा जाता था कि जो 8 नारायण हैं वो अष्ट रत्न हैं; लेकिन आठ नारायण के साथ तो आठ नारायणियाँ भी लगी हुई हैं, तो 8 + 8 = 16 हो जाते हैं। तो वो अष्ट–नौ रत्नों की गिनती में नहीं हैं; क्योंकि वो नारायण कम कलाओं वाले तथा कम जन्म लेने वाले नारायण हैं। जो सातवाँ, आठवाँ नारायण होगा उसकी तो कलाएँ ही कम हो जावेंगी। तो जिनकी कलाएं कम हो जावेंगी वो रत्नों में कैसे आ सकते हैं? रत्न तो ना कम कलाओं वाले होंगे, ना ही कम जन्म लेने वाले होंगे। वो तो

अपने–2 धर्मो के पास विद् आनर और पूरे 84 जन्म लेने वाली बीजरूप आत्माएं होती हैं। नारायण वाली आत्माएं तो जड़ों पर दिखाई जाने वाली आधारमूर्त आत्माएं हैं जो नं०वार कम जन्म लेती हैं।

इन जड़ों के जो बीज हैं वो यहाँ सीढ़ी में ऊपर दिखाए गए हैं। ये जो दो ग्रुप दिखाये गए हैं उनमें एक ग्रुप है रुद्रमाला का सूर्यवंशी ग्रुप और दूसरा है विजयमाला का चन्द्रवंशी ग्रुप। वंश की शुरुआत जरूर किसी व्यक्ति से होती होगी। व्यक्ति के नाम के आधार पर वंश का नाम पड़ता है, जैसे रघुवंश। यहाँ **सूर्यवंश** नाम पड़ता है तो जरूर सूर्य का पार्ट बजाने वाला कोई पार्टधारी भी होना चाहिए और **चन्द्रवंश** नाम पड़ता है तो जरूर ज्ञान चन्द्रमा का शीतल पार्ट बजाने वाला कोई पार्टधारी व्यक्ति भी होना चाहिए। सूर्यवंश का ज्ञानसूर्य के रूप में पार्ट बजाने वाला जो पार्टधारी है वो प्रजापिता ब्रह्मा की जब आयु 100 वर्ष सन् 76 में पूरी हो जाती है तो वही आत्मा (जो आदि ब्रह्मा था) ज्ञान सूर्य के रूप में उदित हो जाता है। 76 से **'ज्ञान सूर्य प्रकटा और अज्ञान अंधेर विनाश।'** मुरलियों में जो बातें अज्ञानता के रूप में प्रतिभासित होती है, जिनका पूरा क्लारिफिकेशन नहीं मिलता है, उनका क्लारिफिकेशन मिलना भी शुरू हो जाता है। तो 76 से ज्ञान सूर्य के प्रकाश की शुरुआत हो जाती है। उससे पहले यज्ञ में ज्ञान चन्द्रमा का प्रकाश चल रहा था। ज्ञान चन्द्रमा का प्रकाश तो शीतल होता है। तो शीतल ज्ञान के प्रकाश में तो कीड़े–मकोड़े भी पलते रहते हैं; लेकिन सूर्य के प्रकाश में जब तक शीतल चन्द्रमा की किरणें होंगी तब तक तो वो कीड़े–मकोड़े चलेंगे; लेकिन सूर्य जैसे–2 प्रखरता प्राप्त करता जावेगा वैसे–2 कीड़े–मकोड़े खलास होते जावेंगे। ऐसे ही यहाँ भी सन् 76 से, जब से ज्ञान सूर्य के द्वारा एडवांस पार्टी का ये पार्ट शुरू होता है तो उसी समय से बीजरूप आत्माओं का कार्यकाल भी प्रत्यक्षरूप में शुरू होता है और उसमें जो कीड़े–मकोड़े जैसी आत्माएं हैं जो कि ज्ञान की रोशनी में रहना पसंद नहीं करतीं वे खलास होती जाती हैं। उनका सक्रिय एडवांस पार्टी में कोई स्थान नहीं रहता। ये सूर्यवंशी ज्ञान सूर्य परमात्मा से डायरैक्ट जन्म लेने वाले बच्चे हैं। जो चंद्रवंश दिखाया गया है वो ज्ञान सूर्य से डायरैक्ट जन्म नहीं लेते; बल्कि ज्ञान चन्द्रमा से डायरैक्ट जन्म लेने वाली आत्माएं हैं। वो ज्ञान चन्द्रमा के शासन काल में पलने वाली आत्माएं हैं। ज्ञान चन्द्रमा के द्वारा ब्राह्मणों की जो परम्पराएं स्थापन हुई हैं उस परम्परा में पलने वाली आत्माएं हैं। जैसे दीदी–दादियाँ हैं उनकी रहबरी में पलने वाली आत्माएं हैं। वो हैं चन्द्रवंशी। ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा और उनके द्वारा जितने भी सेन्टर्स स्थापन हुए उन सेन्टर्स में पालना लेने वाली जो भी आत्माएं हैं वे पहले तो ज्ञान चन्द्रवंशी आत्माएं हो गईं।

सूर्यवंशी आत्माएं वो हैं जो ना तो ज्ञान चन्द्रमा का आधार लेती हैं और ना ही किसी व्यक्ति या गुरू का आधार लेती हैं; बल्कि वो सिर्फ ज्ञान सूर्य परमात्मा शिव की ज्ञान मुरलियों का आधार लेने वाली आत्माएं हैं। वो सूर्यवंशी यहाँ दिखाये गए हैं। मतलब ये है कि जो बाप का पार्ट है वो गुप्त पार्ट हो जाता है, तो बाप गुप्त हो जाता है और बच्चों को प्रत्यक्ष करता है। ब्रह्मा की रात द्वापर–कलियुग कही गई है। उसमें ज्ञान सितारे प्रत्यक्ष होते हैं। ये जो दो ग्रुप हैं, सूर्यवंश और चन्द्रवंश उसमें **"सूर्यवंश का कृष्ण और चन्द्रवंश की राधा"** (मु० 10.2.78) बताई गई है। कृष्ण जो सूर्यवंशी दिखाया गया है उसके लिए कहा है कि **"कृष्ण ने आठवाँ जन्म लिया। सतयुग में तो 8 बच्चे पैदा होंगे नहीं।"** (मु० 18.12.72/27.10.96 पृ०2)। यह संगमयुग की ही बात है। जब ये 7 नारायण प्रत्यक्ष हो जाते हैं तो आठवाँ नम्बर कृष्ण की आत्मा यानी ब्रह्मा की सोल इस संगम के समय कौन से ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करके कार्य कर रही है, वो बात प्रत्यक्ष हो जाती है। चूँकि आठवें नम्बर पर श्री कृष्ण की प्रत्यक्षता होती है, इसलिए शास्त्रों में कृष्ण को आठवें नम्बर का बच्चा दिखाया गया है। (किसी ने कुछ कहा)। वो सात नारायण पहले प्रत्यक्ष होते हैं जो यज्ञ में तो बेसिक में पहले से ही हैं और उनके पार्ट भी प्रत्यक्ष होते हैं और आठवें नम्बर पर कृष्ण का जन्म। कृष्ण और कृष्ण के साथ उसके सखा भी सीढ़ी में ऊपर दिखाये गए हैं। महाभारत के हिसाब से और भागवत के हिसाब से कृष्ण और उसके सखा, रामायण के हिसाब से राम और उसके 3 भाई और दूसरे शास्त्रों के हिसाब से ब्रह्मा के 4 पुत्रों के रूप में भी 4 भाई दिखाये गये हैं। यही आत्माएं राम के पीछे 3 विधर्मी बीजों के रूपों में खड़े दिखाये गए हैं। राम तो देवी–देवता सनातन धर्म का बीज हुआ। तीन जो दूसरे धर्मो की आत्माएं हैं वो विधर्मी बीज

होने के कारण डिस्ट्रक्टिव पार्ट बजाने वाली आत्माएं हैं। शुरू–शुरुआत में सतोप्रधान स्टेज में तो परमात्मा बाप के सहयोगी बनते हैं; लेकिन बाद में ये विरोधी पार्ट बजाने लग पड़ते हैं। विरोधी पार्ट बजाने के कारण इनको त्रेतायुग के अन्त में जाकर थोड़ी सी ताज पतलून मिल जाती है। बाकी ये शुरुआत में राजाई प्राप्त नहीं कर सकते। जो आत्माएं पहले बाप को पहचानती हैं, बाप के कार्य में मददगार बनती हैं; लेकिन बाद में फिर विरोधी बन जाती हैं, डिससर्विस करने लग पड़ती हैं तो उस समय उनका ताज–पतलून छीन लिया जाता है और त्रेता के अन्त में जाकर राजभाग की अधिकारी बनती हैं।

जैसे यहाँ सतयुग में 8 नारायण दिखाये गए हैं, ये 8 नारायण त्रेता में भी ज्यों के त्यों बरकरार रहते हैं। यही 8 नारायण त्रेता में जाकर नं०वार राम–सीता बनते हैं; क्योंकि बाबा ने कहा है **''जो लक्ष्मी–नारायण बनते हैं वही राम–सीता बनते हैं।''**(मु० 25.5.72)। जो जिस नम्बर का सतयुग में लक्ष्मी–नारायण बनेंगे उसी नम्बर का त्रेता में राम–सीता बनेंगे। इस तरह त्रेता की आदि वाली गद्दियों में 8 वो सतयुग के और एक संगमयुग का, तो 9 गद्दियाँ तो सतयुग वाली हो गईं और 3 हैं ये तीनों भाई जो त्रेता की अंतिम ध्वंसकारी गद्दियों में एडजस्ट कर दिए जाते हैं। जो स्वर्गीय संगठन पहले जल्दी बनना चाहिए था उस परमात्मा के कार्य में इन्होंने विघ्न डाला और विघ्न डालने के कारण सारा कार्य स्थगित हो जाता है, देर में बनता है। तो वह स्वर्गीय संगठन तैयार नहीं हो पाता है। उसका इनको दंड ये मिलता है कि त्रेता के अन्त में भी जाकर स्वर्ग के विघटन के निमित्त बनते हैं। स्वर्ग स्थापन करने के निमित्त नहीं बन पाते। ये आखिरी 3 सीढ़ियों के अधिस्थापक हैं, तो स्वर्ग की जो दुनियाँ है वो इनके द्वारा नष्ट होती है।

आगे ये दिखाया गया है कि जो सतयुगी–त्रेतायुगी स्वर्ग की शूटिंग यज्ञ के अन्दर होती है, वो तो वास्तव में तब होती है जब निराकार परमात्मा साकार में प्रैक्टिकल रूप में कार्य करता है और वही परमात्मा जब गुप्त हो जाता है तो देहधारी मनुष्यों गुरूओं के द्वारा नर्क की शूटिंग होती है। यही हमारे यज्ञ में हुआ। जब तक हमारे मम्मा–बाबा जीवित रहे तब तक यज्ञ के अन्दर स्वर्ग के फाउंडेशन की शूटिंग का कार्य सम्पन्न होता रहा और जब से मम्मा–बाबा ने शरीर छोड़ा और ज्ञान सूर्य परमात्मा गुप्त हो गया, तो ज्ञानसूर्य के गुप्त हो जाने से हमारे यज्ञ के अन्दर जो देहधारी धर्म गुरू हैं (जो कि झाड़ के चित्र में बताए गए लेफ्टिस्ट रावण सम्प्रदाय हैं) वो अपने बन्धन की जंजीरे सारे ब्राह्मण परिवार में फैला देते हैं और सारे ब्राह्मण परिवार को अपने तरीके से कंट्रोल कर लेते हैं। वही ब्राह्मण आत्माएं यहाँ रावण राज्य में आकर भक्तिमार्गीय रावण राज्य की सारी परम्पराओं को अपनाने लग पड़ते हैं। ये उनकी शूटिंग होने लगती है। कराने वाले हैं वो देहधारी धर्मगुरू। उसका एक2 प्रूफ इस चित्र में दिया गया है। पहला प्रूफ है कि जब स्वर्ग समाप्त होता है, त्रेता का अन्त होता है तो द्वापरयुग के शुरुआत में (रावण राज्य के एकदम आरम्भ में) पहली निशानी है कि देवताओं के संगठन के रूप में जो महल–माडियाँ हैं वे जमीन में समा जाते हैं और सृष्टि का आधा विनाश हो जाता है। त्रेता के अन्त में सृष्टि का आधा विनाश (भूकम्प के द्वारा) होता है; क्योंकि उस समय रावण राज्य शुरू होता है। विकारी प्रवृत्ति का रावण राज्य शुरू होता है और उस समय देवताओं के वाममार्ग में जाने से स्वर्ग नष्ट हो जाता है। आधा विनाश होता है, पूरी सृष्टि का विनाश नहीं होता है। यानी भूकम्प आता है और जमीन के हिलने से वो महल–माड़ियाँ (भूगर्भ में) समा जाती हैं।

इसकी यहाँ शूटिंग होती है कि जैसे ही मम्मा–बाबा ने शरीर छोड़ा तो परमात्मा गुप्त हो गया, उनका रथ ही समाप्त हो गया। तो परमात्मा गुप्त हो गया और परमात्मा के गुप्त होने से इन देहधारी धर्म गुरूओं का शासन शुरू होता है और जब रावण का राज्य शुरू होता है तो विकारी वृत्तियाँ यज्ञ के अन्दर आरम्भ हो जाती हैं; क्योंकि मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद ब्रह्मा बाबा तो पुरूष तन है और पुरुष तन तो होते ही हैं दुर्योधन–दुःशासन। उनको कन्ट्रोल करने वाली कोई ऐसी शक्ति नहीं रही और जिसने कन्ट्रोल किया वो कोई आसुरी शक्ति कुर्सी पर आ गई जिसके कारण ब्रह्मा बाबा का चित्त डुलायमान हो गया। बाबा ने वाणी में ये कहा हुआ है कि **''राजायें जब शूद्र बनते हैं तो मन्दिर**

बनाते हैं। विकारी राजायें जो हैं वो ही मन्दिर बनाते हैं।''(मु० 7.3.78 पृ०3)। यहाँ पर भी ऐसा ही हुआ। उससे पहले बाबा ने कभी भी यज्ञ की सम्पत्ति से किसी सेवाकेन्द्र की स्थापना नहीं की थी। जो भाई–बहन आए उन्होंने सेवाकेन्द्र स्थापन करने के लिए उनको गहने, धन–सम्पत्ति आदि दे दिए; लेकिन सब सेवा केन्द्रों की सार सम्भाल दूसरे भाई–बहनों ने सम्भाला। बाबा ने कोई सेवाकेन्द्र या कोई मंदिर स्थापन नहीं किया; लेकिन जब मम्मा ने सन् 65 में शरीर छोड़ा तो शरीर छोड़ने के ठीक एक साल के बाद 66 में ब्रह्मा बाबा के द्वारा वो सोमनाथ मंदिर की स्थापना सागर के कंठे पर (ज्ञान सागर हुआ मधुबन और उसका किनारा हुआ अहमदाबाद) अहमदाबाद में वो सेवाकेन्द्र खोल दिया गया। तो ये हुआ रावण राज्य की शुरुआत का दूसरा प्रूफ। रावण राज्य में मन्दिर बनाना शुरू होता हैं द्वापर से। पहला प्रूफ हुआ भूकम्प। भूकम्प में ये हुआ कि मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद जो मम्मा के प्यार में चलने वाली कन्याएं–माताएं रूपी धरणी थीं वो हिल गईं और इनके हिलने से इनके आधार पर चलने वाले जो जिज्ञासु थे वो टूट पड़े। ऐसे ही ब्रह्मा बाबा के भी शरीर छोड़ने के बाद जो एकमात्र बाबा के प्यार में चलने वाली आत्माएं थी वो भी हिल गईं और टूट पड़ीं और उनके आधार पर चलने वाले जो भाई–बहन लोग थे वो भी टूट पड़े। इस तरह यज्ञ के अंदर एक बड़ा विनाश हो गया। दूसरा प्रूफ ये हुआ।

रावण राज्य का तीसरा प्रूफ ये है कि पहले–2 द्वापरयुग में 200–300 वर्षों तक चित्र तैयार होते रहते हैं, ढेर के ढेर चित्र बनाए जाते हैं। क्राइस्ट के आने के समय, आज से 2000 साल पहले आसुरी मत पर अजन्ता–एलोरा, एलीफैन्टा कन्हेरी आदि की गुफाओं में ढेर के ढेर चित्र तैयार हुए। यही हमारे यज्ञ के अन्दर हुआ। मम्मा अगर जीवित होती तो ढेर के ढेर चित्र नहीं बनवाने देती। उनकी तो 4 चित्रों पर ही आस्था थी; लेकिन मम्मा जो ज्ञान की देवी थी वो चली गई। ब्रह्मा बाबा को तो उतना ज्ञान की गहराइयों का पता नहीं था। उनके अन्दर तो शिवबाबा बोलता था इसलिए वो ज्ञान सुनाते थे। तो जो देहधारी गुरू थे उस माया–रावण ने किसी व्यक्ति को यह मत दी कि तुम ढेर के ढेर चित्र बनाओ ताकि तुम्हारा मान–मर्तबा बढ़े और तुम्हारे आधार पर हमारा भी बढ़े। तो उन्होंने जैसे ढेर के ढेर चित्र बम्बई, महाराष्ट्र साइड में **अजन्ता, एलोरा और एलीफैन्टा** जैसी गुफाएँ आज से लगभग 2000 साल पहले तैयार हुईं, वैसे ही महाराष्ट्र साइड में बम्बई में ढेर के ढेर चित्र सैकड़ों की तादाद में तैयार करवाये। ये हुई रावण राज्य की तीसरी मन्जिल। रामराज्य में ऐसे ढेरों चित्रों को बनाने की दरकार नहीं है। वहाँ तो गिने–चुने 4 चित्र हैं **लक्ष्मी–नारायण, राम–सीता**। इन चार चित्रों के आधार पर ही वहाँ का सारा ठाठ बाट चलता है और यहाँ तो ढेर के ढेर चित्र तैयार हो गए। उसके 300–400 वर्षों के बाद यानी सन् 66 से 69 तक के 3–4 बर्षो तक शूटिंग काल में ये चित्र बनते रहे।

सन् 69 से 70–71, इन 3–4 वर्षों में फिर शास्त्र बनकर तैयार हो गए। ये भी रावण की मत पर तैयार होते हैं। बाबा ने कोई डायरैक्शन नहीं दिया की मोटे–2 शास्त्र छपाओ, शास्त्र बनाओ। उन शास्त्रों में मुख्य शास्त्र है **गीता**। गीता में सबसे बड़ी भूल क्या कर दी? बाप की जगह बच्चे का नाम डाल दिया। रचयिता की जगह रचना का नाम डाल दिया। ऐसे ही यज्ञ में हुआ। जो हमारी मुरलियों रूपी गीता हैं उन मुरलियों में '**पिताश्री**' नाम डाल दिया गया। पिताश्री नाम है ब्रह्मा का। ब्रह्मा तो रचना है। बाबा के समय की जो मुरलियाँ थीं उनमें किसी का नाम लिखा हुआ नहीं है, '**शिवबाबा याद है**' ये लिखा हुआ है। अब जब से मम्मा ने शरीर छोड़ा तब से मौका लगते ही देहधारी धर्मगुरुओं ने बाबा के नजरों से बचाकर 'शिवबाबा याद है' के पहले पिताश्री जोड़ दिया । '**पिताश्री शिवबाबा**' यानी पिताश्री शिवबाबा हो गया। परमात्मा की जगह उन्होंने पिताश्री का नाम डाल दिया। पिताश्री का नाम डालने से क्या हुआ कि वो सारी वाणी ब्रह्मा की हो गई। ये बड़ी भारी भूल हो गई। राम बाप की जगह बच्चे (ब्रह्मा उर्फ कृष्ण) का नाम डाल दिया। ऐसे ही और2 शास्त्र बने। जैसे '**श्रीमत् भगवत गीता**' दूसरा शास्त्र बना ऐसे ही भक्तिमार्ग में जो '**भागवत**' बनी उसमें एक अध्याय है '16000 गोपियों को भगाने की कथा' का। वो बहुत इन्टरेस्टेड है इसलिए उसके आधार पर नाम रख दिया '**भागवत कथा**।' ऐसे ही हमारे यज्ञ के अन्दर इन देहधारी गुरूओं के द्वारा एक पुस्तक छपाई गई '**एक अदभुत**

जीवन कहानी।' वो अदभुत जीवन कहानी में जो कन्याओं–माताओं को भगाने का अदभुत् कर्म किया गया है वो वास्तव में प्रजापिता राम बाप की कहानी है। मुरली में भी बाबा ने वो वाक्य बोला हुआ है **"गोपियों को भगाया, मक्खन चुराया, ये किया, ये सब है वास्तव में प्रजापिता की कहानी; लेकिन नाम डाल दिया है कृष्ण का।"** (मु० 28.12.72)। ऐसे ही यहाँ यज्ञ के अन्दर भी नाम डाल दिया ब्रह्मा का और फोटो भी डाल दिया ब्रह्मा का। जो अदभुत जीवन कहानी की किताब लिखी गयी है उसमें ब्रह्मा का फोटो है और नीचे लिखा हुआ है **'पिताश्री**।' तो पुस्तक पढ़ने वाले की बुद्धि में छाप ये पड़ेगी कि भगवान के सारे कृत्य, सारे चमत्कार जो हैं वो इस व्यक्ति ने किये हैं जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है।

ऐसे ही और–2 शास्त्र भी लिखे गये हैं। जैसे **'भविष्य पुराण'** भक्तिमार्ग में लिखा गया, उसमें सब मनोकल्पित राजाओं के नाम दिये और वो सब झूठे साबित हुए। ऐसे ही यहाँ भी यज्ञ के अन्दर पुस्तक लिखी हुई है **'विश्व का भविष्य**।' उस विश्व के भविष्य में विश्व के भविष्य के बारे में तो कोई वर्णन नहीं है। कृष्ण का जन्म कब होगा, पुरानी दुनियाँ का विनाश कब तक होगा, नई दुनियाँ की स्थापना कब तक होगी, ये सारी बातों का क्लारिफिकेशन तो कुछ भी नहीं है। दुनियाँवी बातें, सन् 76 के विनाश की बात थी वो भी झूठी साबित हो गई। इसका मतलब ये हुआ कि वो 'विश्व का भविष्य' वास्तव में भक्तिमार्ग की ही तरह पैसे कमाने का एक साधन बना दिया गया। ऐसे ही यहाँ भक्तिमार्ग में और–2 पुस्तकें लिखी गयी हैं जैसे '**योगवाशिष्ठ**।' उसमें राम को वशिष्ठ जी ने शिक्षायें दी हैं और दुनियाँ भर की कथा–कहानियाँ सुनायी, समझाई गई हैं और नाम रख दिया 'योगवाशिष्ठ।' ऐसे ही अपने यज्ञ के अन्दर भी एक मोटी सी पुस्तक छपाई गई है '**योग की विधि और सिद्धि**'। उस मोटी सी पुस्तक को पढ़कर आत्मा विस्तार में जाएगी या सार बिन्दु में टिकेगी? विस्तार में ही चली जाएगी। तो इतनी मोटी पुस्तक को पढ़ने वाला विस्तार में जायेगा तो बिन्दु में क्या टिकेगा? तो ऐसे–2 लिटरेचर इन लोगों ने छपाए। ऐसे ही इन्होंने 'योग की विधि और सिद्धि' नाम रख दिया और उसमें कहीं पतंजल योग दर्शन की बातें, कहीं कपिलमुनि के सांख्य दर्शन की बातें, कहीं दुनियाँवी योगियों की बातें और कहीं थोड़ी बहुत मुरलियों की ज्ञान–योग की बातों को उसमें एड कर दिया गया। मतलब खिचड़ा इकट्ठा करके उसे पैसे कमाने का साधन और नाम कमाने का साधन बनाकर काम में लाया गया। इस प्रकार भक्तिमार्गीय रावण राज्य के गुरुओं ने ये सारे शास्त्रों की शूटिंग का आडम्बर बना दिया।

ऐसे ही यहाँ सीढ़ी के मध्य में दिखाया गया है कि शास्त्रों के आधार पर फिर भक्तिमार्ग में बड़े–2 मन्दिर बनाए गये और उन बड़े–2 मन्दिरों में पहले तो एक अव्यभिचारी परमात्मा की यादगार **शिव की पूजा** होती थी। बाद में उन मन्दिरों में उन्हांने देहधारी देवताओं को चित्रित कर दिया, मूर्तियाँ बना दीं और उनकी व्यभिचारी पूजा होने लगी। ऐसे ही यज्ञ के अन्दर हुआ। जब तक मम्मा–बाबा जीवित रहे तब तक क्लास रूम के अन्दर सिर्फ **शिव ज्योतिर्बिंदु** का फोटो लगाया जाता था; लेकिन जैसे ही मम्मा–बाबा ने शरीर छोड़ा वैसे ही मम्मा–बाबा रूपी देहधारियों के पुजारियों ने मम्मा–बाबा के चित्र लगा दिये। भक्तिमार्गीय रावण राज्य की व्यभिचारी शूटिंग की शुरूआत हो गई। ये मम्मा–बाबा की उपासना करने वाली प्रवृत्तिमार्ग की उपासना है, वही यहाँ दिखाई गई है कि जो उपासना करने वाले हैं वो भी प्रवृत्तिमार्ग वाले हैं। इसलिए उनको जिम्मेवारी का ताज दिखाया गया है; लेकिन आगे चलकर जब तमोप्रधानता और बढ़ी तो जो प्रवृत्तिमार्ग की उपासना थी उसका भी खण्डन कर दिया गया। इस तरह और ही ज्यादा व्यभिचारी मनसा बनने से स्त्री वर्ग विशेष रूप से कृष्ण की पूजा करना शुरू कर दी। ऐसे तो काम वासना सबके अन्दर समाई हुई है। स्त्री को पुरूष तन अच्छा लगता है। तो उन्होंने सिंगल कृष्ण की पूजा शुरू की और पुरूषों ने अपनी मानसिक वासना पूर्ति के लिए अकेली देवी की पूजा शुरू कर दी। पूजा में भी इस तरह का व्यभिचार होता है। ऐसी जो तमोप्रधान पूजा है उसमें जैसे इस बात की बास आती है कि सिंगल पूजा क्यों? देवी–देवताएँ तो प्रवृत्तिमार्ग वाले थे, परमात्मा ने प्रवृत्तिमार्ग स्थापन किया। फिर सिंगल की पूजा क्यों शुरू कर दी? कृष्ण के साथ राधा क्यों नहीं? तो यहाँ दिखाया गया है कि रावण की वृत्ति क्या होती है। रावण सिंगल देखना चाहता है। अकेला करेगा

तो उसका काम बनेगा और राम–सीता दोनों साथ होंगे तो उसका काम बनने वाला नहीं। इसलिए वो पंचवटी से राम को भगाने की चालबाजी करता है। इसलिए यहाँ अन्तर दिखाया गया है कि सिंगल पूजा करने वालों को जिम्मेवारी का ताज नहीं है। मतलब ये है कि ये स्वर्ग की पवित्रता की जिम्मेवारी का ताज धारण करने वाली आत्माएं नहीं हैं; क्योंकि जो रावण होगा वो सीता को अकेला करेगा। इसका मतलब उसकी नीयत में तो खोट है ना? नीयत में खोट होने के कारण वो वैश्यालय बनाना चाहता है, वो पवित्र स्वर्ग की स्थापना करना नहीं चाहता है। इसलिए ऐसी आत्माओं को जिम्मेवारी का ताज धारण किया हुआ नहीं दिखाया गया है, और जो आत्माएँ स्वर्ग की जिम्मेवारी का ताज धारण नहीं करती वो फिर द्वापर और कलियुग में भी आकर ताजधारी राजायें नहीं बन सकतीं। प्रवृत्तिमार्ग की उपासना में भी अन्तर है। सीढ़ी में 16 कला सम्पूर्ण की उपासना भी है और 14 कला वा कम कला वालों की उपासना भी दिखाई गई है। तो कम कला वाले सिर्फ राम–सीता ही नहीं हैं; बल्कि ये जितने भी बाद वाले नारायण हैं अर्थात् दूसरे नारायण से लेकर आखिरी नारायण तक, वो सभी कम कलाओं वाले हैं। सब फेलिअर हैं, सब चन्द्रवंशी हैं। वो सब कम कलाओं वाले जो फेलिअर चन्द्रवंशी नारायण हैं वो सीढ़ी में दिखाए गये हैं; लेकिन ये हैं प्रवृत्तिमार्ग वाले। ये प्रवृत्तिमार्ग वालों की उपासना करने वाले हैं इसलिए उनको भी जिम्मेवारी का ताज दिखाया गया है।

आगे दिखाया गया है कि ये राम–सीता कम कलाओं वाले पूजनीय देवता तो हैं ही; परन्तु आगे जब कलियुग की शुरूआत हुई तो कलियुग की शूटिंग होते–2 जानवर जैसे स्वभाव–संस्कार वाले जो मनुष्य यज्ञ के अन्दर हैं उनकी भी पूजा होने लगी। मन्दिरों में, आश्रमों में स्थान बनाकर भगवान की तरह उनकी भी पूजा करते हैं और उनकी ही श्रीमत को लोग फालो करने लग पड़ते हैं। जैसे **'हनुमान जी'** दिखाए गये हैं। हनुमान का काम क्या है? हनुमान का काम है रावण की लंका में पूँछ से आग लगाना। उनकी जानवरियत की निशानी कमर में दिखाई जाती है। यानी जिसकी कमर में काम विकार की निशानी दिखाई गई है। वो काम विकार की निशानी वाली आत्माएं प्रत्यक्ष रूप से दीदी–दादियों, दादाओं सबको नजर आती हैं कि इनमें काम विकार कूट–2 कर भरा हुआ है और इन्होंने यज्ञ के अन्दर डिससर्विस की है, ऐसे–2 आग लगाने का काम किया है, सेन्टर के सेन्टर उखाड़ दिये हैं; क्योंकि यज्ञ के अन्दर सबसे बड़ा विघ्न आता ही है काम विकार का; लेकिन ऐसी आत्माओं को भी मन्दिर स्थापन कर **करौलबाग, दिल्ली का पांडव भवन** जैसे आश्रम बनाकर उसमें मुखिया बनाकर बैठा दिया जाता है। ऐसे ही **'गणेश जी'** जिनको काम विकार की निशानी पूँछ तो इतनी लम्बी नहीं दिखाई जाती; लेकिन मुख में देहअभिमान बहुत भरा हुआ है। इनका शरीर हाथी जैसे महारथी की तरह लम्बा–चौड़ा दिखाया जाता है। शरीर को बड़ा दिखाने का मतलब देहअभिमानी बहुत है। आँखों में जैसे कि देहअभिमान का मद भरा हुआ है। कान बहुत बड़े–2 हैं यानी ज्ञान बहुत सुनते हैं, ज्ञान सुनने–सुनाने का माद्दा उनमें बहुत है। माथा भी चौड़ा है माना अक्ल भी तीखी है; लेकिन देह अभिमान से बाज नहीं आ सकते। क्लास में कोई बातें होंगी तो कोई ना कोई बात की ऐसी सुर्रय्या छोड़ेंगे जिससे वायुमंडल दूषित और विकारी बन जाए। मुख से जरूर ऐसे वचन बोलेंगे या कोई ना कोई ऐसी आँख जरूर लड़ाएँगे जिससे वायुमंडल खराब हो जाए, दूसरे की वृत्ति खराब हो जाए। इस तरह की जो देह अभिमानी सूँड़ वाली आत्माएं हैं जिनके मुख में देहअभिमान है; परन्तु कमर में इतनी निशानी नहीं दिखाई पड़ती, जितना मुख में दिखाई पड़ती है। ऐसे जानवरों की पूजा करने वाले एकदम माथा मुँड़ाने वाले भगत हैं। उनका तो माया माथा ही मूंड़ लेती है। माया ने माथा मूँड़ा हुआ है तब तो ऐसे जानवरों की पूजा करते हैं। जानवरों की पूजा करने का मतलब क्या?

अपनी भारतीय परम्परा में मान्य किसको माना जाता है? जिसको अपनी बहन, बेटी देते हैं उनको मान्य मानते हैं। जो मान्य पक्ष होता है उसकी हम पूजा करते हैं, मान्य मानते हैं और उससे उसी तरीके से आचरण करते हैं, सम्मान देते हैं। यहाँ ये जानवरों की पूजा करते हैं। इसका मतलब, ये अपनी बहनें और बेटियाँ ऐसों को देते हैं, ऐसों की सुपुर्दगी में छोड़ देते हैं तो पूजा करना हुआ ना, माथा टेकना हुआ ना। तो ऐसों को जो माथा टेकने वाले हैं वो क्या स्वर्ग स्थापन करेंगे, ये जानवर

स्वर्ग स्थापन करेंगे? ये तो स्वर्ग को और ही उखाड़ेंगे। इस तरीके से भक्तिमार्ग में ये दिखाया गया कि जानवरों की भी पूजा शुरू हो जाती है। रावण राज्य में रावण सम्प्रदाय के जो गुरू हैं वही ये सारा कुछ कराते हैं; क्योंकि इनकी नजरों में अच्छी तरह से हैं कि हाँ ये जानवर हैं, इसे काम विकार की पूँछ है। जान भी लेते हैं नया नँगल जैसा सेन्टर के सेन्टर उखाड़ने वाले ये ही लोग हैं; लेकिन उनके पास नोट है ना, तो वो नोट का लालच दिखाते हैं। यज्ञ के अन्दर मुसलमानी गवर्मेन्ट बैठी हुई है तो लालच में आ जाती है। वो कहते हैं अगर हमको हेड बनाओ तो हम इतना नोट दे सकते हैं। जिनकी ऐसी जानवरियत की पूँछ बिल्कुल प्रत्यक्ष दिखाई पड़ रही है ऐसों को भी ले जा कर उन्होंने मन्दिरों रूपी आश्रमों में भगवान बना कर बैठा दिया है और उनके डायरैक्शन को लोग ऐसे फालो करते हैं जैसे भगवान की श्रीमत हो। ऐसे उनकी पूजा करते हैं जैसे भगवान की पूजा होती है। ऐसे उनके ऊपर चैतन्य फूल चढ़ाते हैं जैसे भगवान के ऊपर फूल चढ़ाए जाते हैं।

'बी' साइड (कैसेट)

सीढ़ी में आगे दिखाया गया है '**मनुष्य–मनुष्य की पूजा**'। हर सेन्टर्स में ऐसे जिज्ञासु और ऐसे गुरू जरूर देखने को मिलेंगे। जो गुरू यहाँ दिखाये गये हैं वे नीचे से लेकर ऊपर तक रंगे हुए हैं। ऊपर से कम रंगे हैं, नीचे से ज्यादा रंगे हुए हैं। इनकी कर्मेन्द्रियाँ नीचे से ज्यादा ही रंगी हुई हैं; लेकिन फिर भी वो ज्ञान सुनाने में ऐसे पटु हैं कि किसी भी पकड़मुण्डे को पकड़ कर एकदम सफेद कपड़ा पहना देंगे। सफेद कपड़ा भी पहना देंगे और ऐसा ब्रह्माकुमार बनाएँगे जो हाथ जोड़कर, माथा झुका कर गुरू जी के सामने नत मस्तक हो जाये। ऐसा बना देंगे कि वो ब्रह्माकुमार बाबा की मुरली सुने–न सुने, बाबा की बात को माने–न माने, क्लास टीचर की बात को भी माने–न माने, सुने–न सुने; लेकिन वो अपने गुरू की बात को जरूर मानेगा। जब तक उसका गुरू ज्ञान में चलेगा तब तक वो भी ज्ञान में चलेगा और जिस दिन गुरू ज्ञान में से टूट जावेंगे उस दिन वो भी ज्ञान में से टूट जाएगा। आजकल ऐसे गुरू–चेले हर आश्रम में देखने को मिल सकते हैं। ऐसे गुरू जी को अपना भाषण करने के लिए कोई संदली नहीं मिलती है। है तो वो जिज्ञासु की ही कैटागिरी, नीचे ही बैठते हैं, विद्यार्थी हैं; लेकिन वो हैं अच्छे खासे गुरू जो ऐसे ब्रह्माकुमार बनाने में बड़े पटु हैं सफेदपोश ब्रह्माकुमार–कुमारी फट बना देंगे। खुद चाहे रंगीन कपड़े पहनते हों; लेकिन बी०के० ऐसा तैयार करेंगे जो ऊपर से नीचे तक एकदम टाइट सफेदपोश बढ़िया नम्र बी०के० होगा।

गुरू पूजा, मनुष्य–मनुष्य की पूजा जब ज्यादा बढ़ती है तो उग्र रूप धारण करती है '**पाँच तत्वों की पूजा**' का। कहीं **अग्नि** की पूजा दिखाई गई है, कहीं **वृक्ष** की, कहीं **मिट्टी** की पूजा है, कहीं **जल** की पूजा है, कहीं **वायु** की पूजा है। इस तरह पाँच तत्वों की ये पूजा पाँच भूतों की पूजा के समान है। पाँच भूतों की पूजा का उत्कृष्ट नमूना है **देह की पूजा**। सिर्फ **ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय** की ही बात नहीं, जिस–2 संस्था ने इस दैहिक पूजा का रूप पकड़ा है तो उसका रिजल्ट हुआ, पाँच तत्वों के शरीर की पूजा। पाँच तत्वों के शरीर की पूजा कैसे? किसी व्यक्ति विशेष की पूजा या किसी गुरु विशेष की सेवा करना ये है 'देह की पूजा।' (किसी ने कहा– ज्यादा गुरूओं को मान देना) नहीं, किसी व्यक्ति विशेष की विशेष सेवा करना, खास खुट्टेबरदारी करना, सबको आत्मिक दृष्टि से न देखना। जैसे मान लो क्लास लगाया और क्लास में सबको टोली बाँटी गई। टोली बाँटने के बाद जो बर्तन इकट्ठे हुए उन सब बर्तनों को अगर कोई जिज्ञासु धोने के लिए बैठ जाये तो वो तो यज्ञ की सेवा हुई; लेकिन कोई एक खास भाई या बहन के बर्तन साफ कर दे और बाकी दूसरों के साफ करने से इन्कार कर दे तो ये पाँच तत्वों की खास पूजा हुई। कोई पाँच तत्वधारी विशेष मनुष्य हैं जिनके पाँच तत्वों के शरीर की पूजा हो गई। ये पाँच तत्वों की जो विशेष पूजा है वो जिस–2 आश्रम में शुरू होती है तो उसमें उसका रिजल्ट ये निकलता है। खास करके जब पुरूष तन की सेवा होती है और ब्रह्माकुमारी आश्रम में तो श्रीमत के बरखिलाफ ऐसे बहुत से पुरूष सरेन्डर कर दिये गये हैं। जबकि बाबा ने किसी भी मुरली में ये नहीं कहा कि पुरुषों को गौशाला में रख दिया जाये। अरे! कृष्ण भगवान है तो कृष्ण गौपाल बनेगा कि बैलों को पालेगा? पुरुष जो हैं वो शक्तियों की सुरक्षा करें, धन कमाकर

उनको दें, न कि और वहाँ बैठकर खायें। तो इस तरह की जो देह पूजा की यहाँ शुरूआत हुई, ये देह पूजा की शुरूआत का रिजल्ट ये हुआ। क्या रिजल्ट दिखाया गया? कि ये ब्रह्माकुमार जी महाराज एड़ी से लेकर चोटी तक सफेदपोश में खड़े हुए हैं। ये उस समय के परमप्रसिद्ध ब्रह्माकुमार जी हैं जिस समय के ये चित्र बने हुये हैं। उनके हाथ में काम कटारी दिखाई गई है माना नैन कटारी को ही काम कटारी कहा जाता है। बाबा ने किसी मुरली में नहीं कहा है कि **कन्यायें–मातायें बैठकर पुरूषों को दृष्टि दें या पुरूष बैठकर कन्याओं–माताओं को दृष्टि दें।** जिस भारत में ये परम्परा थी कि परपुरूष के सामने स्त्रियां और कन्याएं आँख उठा कर भी नहीं देखती थी, उसी भारत में इन देहधारी धर्मगुरूओं ने, रावण सम्प्रदाय वालों ने ज्ञान के नाम पर ये कौन सी परम्परा शुरू कर दी? पुरूष स्त्री को और स्त्री जाति2 के पुरूषों को दृष्टि का लेन–देन करे। अरे! आँख भी तो एक इन्द्रिय है। इस इन्द्रिय का अनेकों के साथ लेन–देन करना क्या ये व्यभिचारी नहीं हो गया? और इन्द्रियाँ इतना धोखा नहीं देती, आँख सबसे जास्ती धोखा देने वाली है। तो जो सबसे जास्ती धोखा देने वाला अंग है उसी का संग हम दूसरों के साथ करेंगे? और वो भी कोमल कन्याओं का? तो रिजल्ट क्या होगा? व्यभिचार भ्रष्टाचार और ही ज्यादा बढ़ेगा। उसे कोई रोक नहीं सकता। बजाय स्वर्ग स्थापन होने के और ही नर्क स्थापन हो जायेगा। यज्ञ के अन्दर वो ही नर्क स्थापन हो रहा है। सेवाकेन्द्रों में और ही झगड़े चल रहे हैं। झगड़े कब चलते हैं? जितना इन्द्रियों का व्यभिचार बढ़ता जायेगा उतने ही झगड़े भी बढ़ते जायेंगे।

जैसे सीढ़ी के चित्र में उस **दुर्योधन, दुःशासन** ने अपने बुद्धि रूपी पाँव से उस स्त्री के बुद्धि रूपी पाँव को दबोच रखा है माना हावी हो गया, कब्जे में कर लिया और हाथ में काम कटारी पकड़ ली, माना नैन कटारी से लगातार उसको मार रहा है। पुरूष की इन्द्रियाँ तो प्रबल होती हैं और कन्या–माताओं की इन्द्रियाँ तो कोमल होती हैं। प्रबलता कोमलता पर आक्रमण करेगी तो वो अधीन हो ही जायेगी। तो यहाँ लिखा हुआ है– **'हाय शिवबाबा बचाओ**....।' यानी उनमें अर्थात् अबलाओं की जाति में इतनी शक्ति नहीं होती है जो पुरूष तन का मुकाबला करें। उसके अन्दर खुद ही संग के रंग से कमजोरी आ जाती है। तो ये अन्दर से आवाज निकल रही है हाय शिवबाबा हम तो यहाँ पवित्र रहने के लिए अर्पण हुए थें और यहाँ तो हमारी पवित्रता पर ही घात होने लगा। तो अन्दर से आवाज निकलती है– 'हाय शिवबाबा बचाओ, हमें तो ये वेश्या बना रहा है, हम तो अब तुम्हारी शिव शक्ति नहीं रहे।' तो अन्दर से ये जो आवाज निकलती है वो आवाज किसी ब्रह्माकुमारी की ही है जो यहाँ दिखाई हुई है। कोई दुनियाँवी स्त्री जो है वो 'शिवबाबा' शब्द का उच्चारण नहीं करेगी। उसके वस्त्र मैले दिखाए गये हैं, इसका मतलब क्या हुआ? ये जो मैले वस्त्र दिखाए गये हैं, है तो सफेद साड़ी ही; लेकिन उसको उस दुःशासन ने गंदा कर दिया है। तो उस सफेद साड़ी को गंदा दिखाने के लिए, ऐसा मटमैला रंग कर दिया गया। उसका शरीर रूपी वस्त्र गंदा हो चुका। यज्ञ के अन्दर जो ऐसी वृत्ति है उसका मूल कारण क्या हुआ? उसका मूल कारण हुआ कि सेन्टर्स के अन्दर जो पुरूष सरेन्डर होकर घुसे हुए हैं उनके द्वारा ये सारा घोटाला हो रहा है। अगर उन पुरूषों को सरेन्डर ना किया जाता तो ये घोटाला नहीं होता। बाबा ने तो कभी मुरलियों में ये आर्डर ही नहीं दिया है कि **पुरूषों को सरेन्डर करने की जरूरत है**। अरे, पुरूष तो दुनियाँ में जहाँ भी चाहे अपना कमायेंगे, खायेंगे, उनके सुरक्षा की क्या जरूरत हैं? कन्याओं, माताओं के ऊपर पवित्रता का दखल हो सकता है, पवित्रता के लिए उनको रक्षा की आवश्यकता पड़ सकती है, तो वो आकर यज्ञ में शरण ले सकती हैं।

आगे सीढ़ी में यहाँ दिखाया गया है **'देवी पूजा डूब जा, डूब जा**...।' भक्तिमार्ग में देवियों की पूजा करते हैं, बहुत मान सम्मान देते हैं, गहने पहनाते हैं, मन्दिर बनाते हैं। मन्दिर बनाने में, गहने पहनाने में, पूजा करने में लाखों रूपया खर्च कर देते हैं। 8–9 दिन उनकी पूजा करके बाद में उनको सागर या नदियों में ले जाकर डुबो देते हैं। नहीं डूबती हैं तो पाँव से जबरदस्ती भी डुबो देते हैं। ये सब भक्तिमार्ग की परम्पराएँ कहाँ की हैं? संगमयुग में इन देहधारी धर्म गुरूओं की ही ये सारी करतूत है अथवा देहधारी धर्मगुरुओं के प्रभाव में आकर, प्रभावित होकर जो ये कर्म करते हैं उनकी करतूत है। बाबा ने यज्ञ सेवा के लिए कन्याओं–माताओं को समर्पित कराया। वो कन्याएँ–माताएँ सेवाधारी हैं, वो

कोई देवियाँ नहीं हैं। देवी–देवताएँ सतयुग में होंगे। इस कलियुग में कोई देवी–देवता नहीं होता। जैसे मुरली में बोला "**देवी की पूजा करने वाले हैं रावण सम्प्रदाय**।" देवी की पूजा करने वाले शिवबाबा को इतना ध्यान नहीं देंगे, याद नहीं करेंगे । मुरली की बात पर, बाबा के डायरेक्शन पर उतना अमल नहीं करेंगे। वही बात मुरली में रोज आती रहे "**बच्चे, सेन्टर्स खोलो, म्युजियम खोलो**," तो ध्यान नहीं देंगे; लेकिन जिस दिन उनकी वो देवी जी डायरैक्शन देंगी– 'भाई जी, अपना कोई सेन्टर्स खोलना चाहिए,' तो फटाक से उस देवी जी के पुजारी देवी जी के लिए मन्दिर बनवाकर तैयार कर देंगे। शहर–2 में ऐसे मन्दिर बन रहे हैं और देवी जी की उस मन्दिर में प्रैक्टिकल स्थापना कर दी जाती है। अच्छे–2 वस्त्र, अच्छा–2 पहनावा, साज–श्रृंगार, सोफासैट, डबल बैड, रंगीन टी०वी०, फ्रीज़ आदि का सब साज–सामान आश्रमों में इकट्ठा कर दिया जाता है। अपनी बीबी–बच्चों के लिए भले वो दूध, कपड़ा और मकान का इन्तजाम ना कर सकें, जिन्दगी भर रूलाते ही रहें; लेकिन देवियों की पूजा में सारा पैसा बर्बाद कर देते हैं, और जब बाद में प्रैक्टिकल में बाप की प्रत्यक्षता होती है, बाप का असली रूप संसार में प्रत्यक्ष होता है तो ऐसे देवी पूजा करने वाले जो रावण सम्प्रदाय हैं उन्हें पश्चाताप होता है। उस पश्चाताप को पश्चाताप की दृष्टि से नहीं देखते। वो ये देखते हैं कि इन देवियों ने हमको नीचे गिराया है। ये देवियाँ नहीं, राक्षसियाँ हैं। फिर वो उनको राक्षसियाँ नजर आती हैं। जब ईश्वर के स्वरूप की उनको प्रत्यक्षता होती है तो मन्दिरों में जाकर उन देवियों का अपमान करना शुरू कर देते हैं और इतना तक अपमान करते हैं कि आखिरीन उनको डुबो ही देते हैं। उनका मान–मर्तबा सारा खलास कर देते हैं। ये सब कहाँ की बातें हैं? हमारे यज्ञ के अन्दर की ही बातें हैं। अभी कुछ ऐसी देवी पूजा और डुबिजा–डुबिजा की शूटिंग हुई है और भविष्य में अभी और तीव्र गति से ये शूटिंग होने वाली है।

आगे दिखाया गया है **धर्मसत्ताधीश और राजसत्ताधीश** अपनी–2 सभा–सोसाइटियाँ अलग–2 कर रहे हैं। अपनी–2 मीटिंग अलग कर रहे हैं अर्थात् धर्मसत्ता और राज्यसत्ता रावणराज्य में अलग–2 हाथों में चली जाती है। रावणराज्य की एक बहुत अच्छी निशानी दिखाई गई कि रामराज्य में धर्मसत्ता–राज्यसत्ता एक हाथ में होती है और रावणराज्य में धर्मसत्ता–राज्यसत्ता अनेक हाथों में चली जाती है। तो यही यज्ञ के अन्दर हुआ। मम्मा–बाबा जब तक जीवित रहें तब तक धर्मसत्ता–राज्यसत्ता एक मम्मा–बाबा के हाथ में रही। माउन्ट आबू से सारे सेवा केन्द्रों का संचालन होता था और जैसे ही उन्होंने शरीर छोड़ा ब्रह्माकुमार–कुमारियों ने अपना–2 रकबा बाँट लिया और **जोनल इन्चार्जेस** बन गये। सन् 69–70 धार्मसत्ता–राजसत्ता अलग–2 हाथों में सौंप दी गई। देहधारी धर्मगुरूओं के द्वारा ये सारा कार्य सम्पन्न होता है। जब धर्मसत्ताधीश अपनी मीटिंग करते हैं तो हेड आफिस में जाकर वो पुरुष वर्ग जो मेले, सम्मेलन और मोटी–2 पुस्तकें पब्लिश करने या प्रचार करने का धन्धा करते हैं, उनकी मीटिंग अलग होती है। उन धर्मसत्ताधीशों की मीटिंग में जो क्लास कन्ट्रोल करने वाले, गद्दियों को कन्ट्रोल करने वाले राज्यसत्ताधीश सफेद पोशधारी दिखाए गये हैं वो हिस्सा नहीं लेतें। उन क्लास कन्ट्रोलर्स राज्यसत्ताधीशों की मीटिंग होती है; लेकिन तभी होती है जब उनकी हिलती हुई गद्दियाँ कन्ट्रोल से बाहर हो जाती हैं। तो ये समस्याओं का समाधान करने के लिए वो मीटिंग करते हैं और उस मीटिंग में वो धर्मसत्ताधीश फिर कोई हिस्सा नहीं लेते। यानी धर्मसत्ता अलग हाथों में और राज्यसत्ता अलग हाथों में आ जाती है। ये रावणराज्य की निशानी है।

एक तीसरा **बेगरी ग्रुप** और दिखाया गया है। उनके हाथ में धर्म की सत्ता भी नहीं है यानी ऐसे जो बेगरी ब्राह्मण हैं, जिनके लिए कहते हैं कि **पाण्डव भी बेगर रूप में घूमते थे**। जिनके हाथ में धर्म की सत्ता नहीं होती है। धर्मसत्ता का मतलब है कि उनको घन्टे, दो घन्टे तो क्या 2–5 मिनट भी सन्दली (गद्दी) पर बैठकर क्लास में बोलने भी नहीं दिया जाता है। मेले, सम्मेलनों में उनको कोई विशेष जिम्मेवारी का कार्य नहीं सौंपा जाएगा। सुई की नोंक के बराबर भी उनको ना धर्मसत्ता में और ना राज्यसत्ता में स्थान दिया जाएगा। उस तीसरे ग्रुप के पास जो प्रापर्टी दिखाई गई है वो है गीता (जो सर के नीचे रखी हुई है), जिस गीता का ज्ञान बुद्धि में समाया हुआ है। तन, धन, धाम, स्वहृद, परिवार, बीबी, बच्चों की सारी बाजी उन्होंने उस जुए में लगा दी। जो जुआ महाभारत प्रसिद्ध

परमात्मा ने सिखाया था "**इस यज्ञ में सब कुछ अर्पण कर दो, फुल बेगर हो जाओ।**"(मु० 18.6.70 पृ०1)। तो यहाँ प्रतिनिधि के रूप में राम वाली आत्मा दिखाई गई है और उसके सारे ग्रुप को इस प्रसंग में समझा जा सकता है। यह तीसरा जो पाण्डवों का ग्रुप दिखाया गया है उसके सर के नीचे सिर्फ गीता है यानी गीता का ज्ञान ही उनकी प्रापर्टी है और वो बेगर के रूप में काँटों की शैय्या पर पड़ा हुआ है। यानी ये संसार जैसे काँटों का जंगल जैसा दुःख देता है, ऐसे ही इस संसार में उसके लिए चारों ओर दुःख देने वाले काँटें ही काँटें हैं। चाहे वे घर वाले, पड़ोस वाले, सम्बंधीजन या वर्षों पुराने बी०के० परिवार वाले ही क्यों न हों; लेकिन सहयोगी कोई भी नहीं रहते। ऐसे उस बेगरी भारत की दशा क्या दिखाई गई है? विदेशियों से भीख माँग रहा है। दो विदेशी खड़े हुए हैं। आप समझ सकते हैं वो विदेशी कौन हैं जो 76 में उसे भीख दे रहे थे। ये वही विदेशी हैं जो उसको अन्न–धन की भीख देकर उसके किये जा रहे ईश्वरीय सेवा के कार्य में सहयोगी बन जाते हैं, अर्थात् क्रिश्चियन और इस्लामी ही उधार के रूप में भीख दे रहे हैं। उस भीख पर उसका गुजारा हो रहा है। भिखारी का काम क्या है? दर–2 जाकर भीख माँगता फिरे, यही है उसका धन्धा। कहने के लिए तो ये आता है कि घर बैठे भगवान मिला; लेकिन किस रूप में मिला ये किसी को पता नहीं। जिस भारत में भगवान आते हैं उस भारत की क्या दशा दिखाई गई है।

जो भारत सतयुग आदि में प्रिन्स था, जो विश्व का फुल प्रिन्स बनता है, विश्वमहाराजन बनता है वो ही कलियुग अन्त में आकर फुल बेगर बन जाता है। "**जब तक फुल बेगर ना बने तब तक फुल प्रिन्स भी नहीं बन सकता।**" उसके पास भी एक ईश्वरीय प्लान है। जो पुस्तक यहाँ सर के नीचे रखी गई है उसमें लिखा हुआ है **'फाइव इयर प्लान'** (ध्यान से कभी देखना हिन्दी के पुराने सीढ़ी के चित्र में लिखा हुआ है 'फाइव इयर प्लान')। फाइव इयर प्लान का मतलब है सन् 77 से लेकर 80–81 तक का ये ईश्वरीय प्लान उसको मिला हुआ है कि ऐसे–2 विदेशियों से लोन लेकर तुम ये प्लानिंग करो। ये ईश्वरीय प्लानिंग है। मुरलियों में बताया कि "**जो रावण सम्प्रदाय की गवर्मेन्ट है वो तो हर पाँच वर्ष के बाद नई–2 प्लानिंग करती रहती है। उनकी तो बार–2 प्लानिंग चलती ही रहती है।**" कभी प्लानिंग की कहानी खत्म नहीं होती है। शुरूआत में उन्होंने ये हिसाब बनाया था कि पाँच बार प्लानिंग करेंगे, पंचवर्षीय योजना बनाएंगे, 25 वर्ष तक ये प्लानिंग चलती रहेगी; लेकिन अब 47 से लेकर अब तक कितने वर्ष हो गये? अभी भी उनकी पंचवर्षीय योजना ही खत्म नहीं हुई। **'गुप्त भेष में सतयुग रचने आये शिव भगवान, अब तो जाग–2 रे इन्सान'।** किसी बड़े आदमी के रूप में आये, प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आये तो सारी दुनियाँ जान जाए। ये तो बेगर के पास पंचवर्षीय योजना का ईश्वरीय प्लान था। वो सिर्फ एक बार की ही योजना थी भिखमंगा भारत को स्वाधीन भारत बनाने की। भिखमंगा माना दूसरों के ऊपर आधारित और स्वाधीन माना जो किसी की परवाह ना करे, अपने पैरों पर खड़ा हो जाए। तो कितने वर्ष का प्लान हुआ? 5 इयर्स, सन् 81 तक का प्लान। 81 पूरा होता है और 82 में उसका प्लान सफल हो जाता है। तो भिखमंगा भारत जो 76 में फुल बेगर बन गया था वो 82 में अपने पैरों पर पूरा2 खड़ा हो जाता है, उसको किसी का कोई भी प्रकार का आधार लेने की दरकार नहीं पड़ती। प्लान पूरा होता है और स्थापना का फाउंडेशन लग जाता है। यही बात आगे दिखायी गयी है कि जब ये कार्य होता है तो उसमें भी थोड़ा टाइम लगता है। जमदे–जामदे कोई राजा नहीं बन जाता है। बाबा कहते हैं "मान लो किसी गरीब आदमी को 10–15 करोड़ की लाटरी निकलती है तो एकदम सारी लाटरी उसे नहीं दी जायेगी"। अगर एकदम दे दी जाए तो क्या होगा? इसलिए धीरे–2 वो विश्व की बादशाही दी जाती है। (किसी ने कुछ कहा)। बाबा तो सर्वशक्तिमान है; लेकिन मास्टर सर्वशक्तिमान का पार्ट बजाने वाली आत्मा तो कोई दूसरी है ना। वो तो फुल बेगर से फुल प्रिन्स बन जाता है। ये है भारत के उत्थान और पतन के 84 जन्मों की कहानी। गलती से हम ये समझ बैठे थे कि ये सारी कहानी ब्रह्मा बाबा की है; लेकिन ब्रह्मा की सोल तो कृष्ण की सोल है। कृष्ण और क्राइस्ट की राशि मिलायी जाती है। क्राइस्ट और उनके फालोअर्स, न ज्यादा पतित बनते हैं और न ज्यादा पावन बनते हैं। तो कृष्ण की आत्मा दादा लेखराज भी न ज्यादा पतित

बनती है, न ज्यादा पावन बनती है। ज्यादा पतित और ज्यादा पावन कौन बनता है? रामवाली प्रजापिता की सोल। इसलिए सीढ़ी के चित्र में अंत में ब्रह्मा फिर भी पुरुषार्थ खड़े हुए हैं और एक बनवासी पांडव कहो, राम या शंकर कहो, ऐसे बेगरी रूप में, काँटों के जंगल में पड़ा हुआ है भिखमंगा भारत। वो पड़ा हुआ अधीन दिखाया गया है। तो ये है 'भारत के उत्थान और पतन के 84 जन्मों की कहानी।'

ओम शांति।